मोमिन का सफ़र

मुख़तसार बयान

एच.एल. टेलर

मोमिन का सफ़र

मुख़तसार बयान

एच. एल. टेलर

momin kā safar. muḳhtasar bayān

Little Pilgrim's Progress

by H. L. Taylor
illus. by W. L. Cable

(Urdu—Hindi script)

© 2021 MIK
new revised edition published and printed by
Good Word Communication Services Pvt. Ltd.
New Delhi, INDIA

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

आसमानी शहर की ख़बर

मोमिन बरबादनगर नामी एक बड़े शहर का रहनेवाला था। उस शहर के गली-कूचों में सारा दिन लड़के-लड़कियाँ बेख़याली से हँसते-खेलते रहते थे। यह चहल-पहल ज़्यादातर गरमियों के मौसम में रहती थी जबकि सूरज की रौशनी से शहर चमकता और ख़ूबसूरत दिखाई देता था। सर्दियों और बरसात के दिनों में बच्चे इतना ख़ुश न होते थे, इसलिए कभी कभी ख़ामोश बैठे कहानियाँ सुनते रहते।

बाज़ औक़ात जब कोई संजीदामिज़ाज आदमी या कोई अच्छी औरत शहर में थोड़े दिनों के लिए आते और बच्चों से घुल-मिल जाते तो वह बच्चों के कहने पर उन्हें कहानियाँ सुनाया करते थे। वह उन्हें बताते, “इस शहर से दूर एक ख़ूबसूरत शहर है। वहाँ का बादशाह निहायत ही नेक और अक़्लमंद है। उसे ख़ास तौर पर बच्चों से बड़ी मुहब्बत और लगाव है। तुम्हारे शहर का हाकिम तो बड़ा शरीर और ज़ालिम है, और उसे हमारे नेक बादशाह से नफ़रत है। लेकिन एक दिन ज़रूर आएगा जब हमारे बादशाह की फ़ौज तुम्हारे शहर के हाकिम पर चढ़ाई करेगी। उस वक़्त तुम्हारा शहर जला दिया जाएगा और लोग क़त्ल कर दिए जाएँगे।”

तब बच्चे उनसे पूछते, “हमारा क्या होगा?”

अजनबी हमेशा यही जवाब देते, “तुम अभी नौजवान और मज़बूत हो। इसलिए इस शहर को अभी छोड़कर हमारे बादशाह सलामत के मुल्क को रवाना हो जाओ। तुम हमारे बादशाह के उस आसमानी शहर में बिलकुल महफ़ूज़ रहोगे।”

यह बात मोमिन ने कई बार सुनी थी, और उसने इस पर ग़ौर भी किया था। लेकिन जब भी उसने इस पर अपने दोस्तों की राय ली और पूछा कि “क्यों न हम आसमानी शहर को चले जाएँ?” तो वह लोग उस पर हँसने लगते और कहते, “मियाँ, बादशाह के बारे में यह बातें बकवास ही हैं। हमारे शहर से बढ़कर भला कोई और शहर उम्दा और पुरअमन हो सकता है?”

लेकिन मोमिन को पूरा यक़ीन था कि जो कुछ अजनबी कहते थे, ठीक ही है। एक दिन इत्तफ़ाक़ से उसे एक पुरानी किताब मिल गई जिसमें

बादशाह और आसमानी शहर के बारे में ऐसा ही ज़िक्र मौजूद था। उसमें बताया गया था कि जब बादशाह चढ़ाई करेगा तो उनका शरीर हाकिम अपने शहर समेत यक़ीनन फ़ना हो जाएगा।

उसने तो यह किताब अपने साथियों को भी दिखाई, लेकिन उन्होंने उसका मज़ाक़ उड़ाया और कहने लगे, "अरे! यह तो कोई सदियों पुरानी किताब है और अब तो यह बेकार हो चुकी है। न तो कभी किसी बादशाह की फ़ौज ने चढ़ाई की और न ही अब कभी ऐसा होगा। यह बातें छोड़ जहाँ तक हो सके ऐश करो और मज़े उड़ाओ।"

लेकिन मोमिन का खेल-तमाशे में जी नहीं लगता था। वह अकसर खेल में उकता जाता और उदास होकर सोचने लगता कि काश मुझे उस आसमानी शहर का रास्ता मिल जाता। लेकिन वह बच्चा ही था, इसलिए उसे डर था कि कहीं मैं रास्ते को भूल न जाऊँ। तब वह दुबारा किताब को खोलकर उस नेक बादशाह के बेटे के बारे में पढ़ने लगता। दिलचस्प बात यह थी कि उसके मुताबिक़ वह एक बार बरबादनगर भी आया था। उस वक़्त वह बच्चों के साथ बड़ी मेहरबानी से पेश आया था। वह अकसर कहता था कि "छोटे बच्चों को मेरे पास आने दो।"

मोमिन सोचने लगा, "काश वह यहाँ होता और मुझे भी अपने ही हमराह ले जाता! लेकिन मैं क्या करूँ? इतना लंबा सफ़र अकेले कैसे तय कर पाऊँगा?"

वह इस सोच से इतना दब गया कि उसकी आँखों से आँसू टपक टपककर गालों से होते हुए उसके मैले कपड़ों पर गिरने लगे। यह कपड़े घिस घिसकर कितने पतले और बोसीदा हो गए थे। यह देखकर वह और भी ज़्यादा ग़मगीन हो गया।"अगर मुझे आसमानी शहर का रास्ता मिल भी गया तो भी आसमानी शहर में पहुँचने से पहले मेरे कपड़े बिलकुल फट चुके होंगे। मैं यह उम्मीद कैसे रख सकता हूँ कि मुझ जैसे चीथड़ों में लिपटे हुए बच्चे को बारयाबी हासिल हो।"

आख़िरकार किताब को हाथ में लेकर वह घर की तरफ़ चल दिया। चूँकि उसकी माँ कई साल पहले फ़ौत हो चुकी थी इसलिए दाया-अम्माँ उसकी देख-भाल करती थी। वह पूछने लगी, "बेटा! इतने निढाल और उदास क्यों हो?"

उसने बड़ी अफ़सुरदगी से जवाब दिया, “मैं आसमानी शहर को जाना चाहता हूँ”

दाया-अम्माँ भी लड़कों की तरह हँस दी और कहने लगी, “बेटा! बड़े भोले हो। कोई आसमानी शहर-वहर नहीं है। अगर यों ही तुम उन अजनबियों के पीछे भटकते रहे तो एक दिन ज़रूर पछताओगे।”

तब मोमिन बिस्तर पर लेट गया और रोते रोते सो गया।

मुबश्शिर से मुलाक़ात

अगले दिन सुबह-सवेरे जब मोमिन चमकती धूप में बाहर निकला तो उसके साथी दौड़े आए, “आओ मोमिन, हमारे साथ खेलो।” लेकिन उसने उन्हें जवाब दिया, “आज मेरा दिल नहीं करता। मेरा तो ख़याल है कि हम लोगों को अब सफ़र पर चलना ही चाहिए।”

यह सुनकर वह चिल्लाने लगे, “तुम तो बहुत बेवुक़ूफ़ लड़के हो। हर वक़्त आसमानी शहर की बातें करते रहते हो। हमारे मूड को ख़राब करने से बेहतर यह है कि तुम आसमानी शहर का पता मालूम कर लो।” यह कहकर वह उसे छोड़कर खेल में मगन हो गए, और मोमिन बेचारा अकेला रह गया।

उसी वक़्त बी मोमिना अपनी नन्ही बहन उठाए गली से आती हुई नज़र आई। गुज़श्ता रोज़ जब लड़के मोमिन का मज़ाक़ उड़ा रहे थे वह पास ही खड़ी थी। उस वक़्त उसे बड़ा अफ़सोस हुआ था। मोमिन को बी मोमिना बड़ी पसंद थी। उसे आते देखकर वह ख़ुश हो गया।

मोमिना ठहर गई। “अरे मोमिन, तुम फिर से रोने लगे। अजनबियों की कहानियाँ सुनना छोड़ दो। इससे तुम्हें दुख होता है। आओ खेत की तरफ़ चलते हैं और इस बच्ची के लिए फूलों का हार बनाते हैं।”

मोमिन को यह बात पसंद आई। बी मोमिना बड़ी अच्छी थी। बेशक उसे भी बाक़ी लड़कों की तरह उन बातों पर जो मोमिन ने किताब में से पढ़कर उसे बताई थीं यक़ीन नहीं था। तो भी वह उसे कभी नहीं सताती थी।

रास्ते में वह उसे बताने लगा, "मुझे इसलिए बादशाह के पास जाना है कि मेरे सर पर एक भारी बोझ है जिसको उस बादशाह के अलावा कोई और मेरे सर से नहीं उतार सकता।"

बी मोमिना ने हैरान होकर पूछा, "सच? बताओ, कहाँ है तुम्हारा यह बोझ?"

"यह मेरी पीठ पर है और मुझे इतना भारी महसूस होता है कि इसकी थकावट की वजह से मैं खेल भी नहीं पाता।"

बी मोमिना ने उस पर संजीदगी से नज़र डाली। "मोमिन! अगर सचमुच तुम्हारे ऐसे ख़यालात हैं तो तुम यक़ीनन बीमार हो। तुम्हारी पीठ पर तो कोई भी बोझ नहीं!"

मोमिन ने जवाब दिया, "अफ़सोस कि तुम्हें यह बोझ दिखाई नहीं देता। लेकिन मुझे तो महसूस होता है। जब तक यह मेरे पीठ से न उतरे मैं तो निढाल रहूँगा।"

तीनों बच्चे खेत में ख़ुशी ख़ुशी खेलते रहे। लेकिन शाम को जब मोमिन घर पहुँचा तो वह फिर आसमानी शहर के ख़यालों में डूब गया और जब तक दाया-अम्माँ उससे नाराज़ न हुई इनमें मगन ही रहा। उसकी माँ तो

थीं नहीं जो उसे दिलासा और तसल्ली देती। बाप शहर का एक बड़ा रईस था, इसलिए बेटे की तरफ़ तवज्जुह देने के लिए उसके पास वक़्त ही नहीं था।

उम्मीद थी कि सुबह-सवेरे मोमिन की मुलाक़ात बी मोमिना से फिर होगी, लेकिन अफ़सोस, वह घर पर मसरूफ़ थी। दूसरे बच्चों से उसका कोई सरोकार न था, क्योंकि उनके नज़दीक वह कुंदज़हन और बेवुक़ूफ़ था, वह इस लायक़ न था कि उनके साथ खेले। इसलिए वह अकेले ही खेतों में घूमने चला गया। फिरते फिरते वह ज़मीन पर बैठकर सोचने लगा। थोड़ी देर बाद उसे नज़दीक ही किसी की आहट सुनाई दी। क्या देखता है कि एक अजनबी शहर की तरफ़ जा रहा है। वह आदमी बहुत ही संजीदा और मेहरबान दिखाई दे रहा था। उसका नाम मुबश्शिर था। उसने मोमिन को पहले भी कई बार देखा था, इसलिए वह नज़दीक आकर उससे बातें करने लगा।

लड़के की आँखों में आँसू देखकर उसने पूछा, "बेटे! तुम क्यों रो रहे हो?"

उसकी प्यार भरी आवाज़ सुनकर मोमिन को बड़ा इतमीनान हुआ। वह बोला, "मुझे बादशाह के पास पहुँचने की बड़ी ख़ाहिश है, लेकिन मेरे साथी मेरा मज़ाक़ उड़ाते हैं, यहाँ तक कि मेरी दाया-अम्माँ और बी मोमिना को भी यक़ीन नहीं होता कि आसमानी शहर के बारे में बातें दुरुस्त हैं।"

मुबश्शिर ने उस पर हमदर्दाना निगाह डालकर कहा, “तमाम बातें दुरुस्त हैं। बादशाह को बच्चों से मुहब्बत है। अगर तुम उसके हुक्म को मानते हुए अपना सफ़र शुरू कर दो तो वह तमाम रास्ते में तुम्हारी निगहबानी करेगा। और जब तुम आसमानी शहर में पहुँच जाओगे तो हमेशा के लिए ख़ुश रहोगे।”

मोमिन बोला,“अगर मुझे रास्ता मालूम हो जाए तो मैं अभी सफ़र पर रवाना होने के लिए तैयार हूँ।”

मुबश्शिर ने मुड़कर खेत के उस पार उस रास्ते की तरफ़ इशारा किया जहाँ से वह आया था और कहा, “वह देखो, मैदान की दूसरी तरफ़ दरवाज़ा है।”

लेकिन मोमिन की आँखें अभी आँसुओं से धुँधलाई हुई थीं इसलिए उसे दरवाज़ा दिखाई न दिया।

मुबश्शिर ने कहा, "ग़ौर से देखो। उसके ऊपर तेज़ रौशनी है। क्या वह तुम्हें नज़र आ रही है?"

लड़के ने जवाब दिया, "हाँ! मालूम तो ऐसा ही हो रहा है।"

"तो सुनो, आसमानी शहर का रास्ता उसी दरवाज़े में से होकर गुज़रता है। अब मैं तुझे बादशाह के नाम एक पैग़ाम लिख के देता हूँ।" यह कहकर मुबश्शिर ने एक काग़ज़ निकालकर मोमिन के हाथ में थमा दिया।

उसमें सुनहरे हरफ़ों से कुछ लिखा था जिसे मोमिन ने बुलंद आवाज़ से पढ़ा। "जो मुझे प्यार करते हैं उन्हें मैं प्यार करता हूँ, और जो मुझे ढूँडते हैं वह मुझे पा लेते हैं।"

"बादशाह का यह वादा तमाम लोगों से है। अब तुम्हें ज़्यादा रोने की ज़रूरत नहीं बल्कि अब जल्दी से जाकर उस दरवाज़े पर खटखटाओ। बादशाह का एक ख़ादिम आकर उसे खोलकर तुम्हें बताएगा कि आगे कहाँ जाना है।"

ज़िद्दी और दो-दिला

शहर के फाटक के पास कुछ लड़के खेल रहे थे। उन्हों ने देखा कि मोमिन मुबश्शिर से बात कर रहा है। उन्हें इस पर ताज्जुब न हुआ, क्योंकि इस क़िस्म के जितने भी लोग आते थे वह अकसर लोगों से बातें किया करते थे। लेकिन जब मुबश्शिर के मुड़ने पर मोमिन मैदान के पार दरवाज़े की तरफ़ भागने लगा तो वह हैरान हुए। सोचने लगे कि आख़िर वह कहाँ जा रहा है?

एक लड़का चिल्लाने लगा, “वह भागा जा रहा है।”

दूसरा बोला, “वह ज़रूर आसमानी शहर को ढूँडने जा रहा होगा।”

तीसरा बोला, “वह कहीं खो जाएगा। चलो हम उसका पीछा करके वापस ले आते हैं।”

ज़िद्दी और दो-दिला नामी दो लड़के मोमिन के अच्छे जाननेवाले थे। गो दोनों उससे बड़े थे तो भी वह उसके साथ खेला करते थे। ज़िद्दी इतना अच्छा साथी नहीं था, क्योंकि वह बात बात पर अड़ जाता था। उसके मुक़ाबले में दो-दिला ताल्लुक़ात ठीक रखने के लिए अकसर दूसरों की मान लेता था। मोमिन को दोनों से इतना लगाव तो नहीं था, तो भी दो-दिला उसे ज़्यादा पसंद था। दोनों लड़कों ने जब अपने साथी को भागते

देखा तो बहुत परेशान हुए। गो उनमें कोई ख़ास दोस्ती नहीं थी, फिर भी वह यह नहीं चाहते थे कि उनका साथी कहीं गुम हो जाए।

ज़िद्दी बोला, “चलो उसे वापस लाएँ। देखो कितना बेवुक़ूफ़ लड़का है कि अजनबियों की बातों में आ गया।”

दो-दिला ने कहा, “तो चलते क्यों नहीं! मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।”

यह कहकर वह दोनों उसके पीछे चल दिए। भागते वह मोमिन को पुकारने लगे, “ठहरो! हमारा इंतज़ार करो!”

लेकिन उनकी आवाज़ें सुनकर मोमिन इतना ख़ौफ़ज़दा हुआ कि उसने मुड़कर उनकी तरफ़ देखा भी नहीं। वह सोचने लगा, “अगर वह मुझे वापस ले गए तो पता नहीं कि फिर वहाँ से निकलने का मौक़ा मिलेगा भी या नहीं।”

उससे जितना भी तेज़ दौड़ा जा सकता था वह दौड़ा, लेकिन अपनी पीठ पर लदे हुए बोझ के बाइस वह जल्द ही थक गया। ज़िद्दी और दो-दिला दोनों उससे क़द में क़दरे लंबे और मज़बूत थे, इसलिए उन्होंने जल्द ही उसे जा लिया।

ज़िद्दी ने चिल्लाकर कहा, “कहाँ जा रहे हो? आख़िर तुम हमें छोड़कर क्यों भागे जा रहे हो?”

मोमिन ने जवाब दिया, “मैं शाही शहर को जाता हूँ। क्या तुम भी मेरे साथ चलोगे?”

ज़िद्दी हँस पड़ा, “नहीं भाई! वहाँ जाने का भला क्या फ़ायदा जबकि हमें अपने घर में हर तरह की ख़ुशी और ऐशो-आराम मुयस्सर है।”

“शाही शहर में हमें इससे भी बढ़कर ख़ुशी होगी। उसका शहर हमारे शहर से कई दर्जा बेहतर, हसीन और ख़ूबसूरत है। इसके अलावा हम वहाँ हर बला से महफ़ूज़ होंगे। मैं तुम लोगों को बता चुका हूँ कि हमारा शहर अब महफ़ूज़ नहीं है।”

ज़िद्दी बोला, “तुम तो ऐसे बातें करते हो जैसे कि तुम वहाँ की बातें जानते हो। ऐसी पागलपन की बातें तुम क्यों करते हो?”

“यह कोई पागलपन नहीं है बल्कि ऐसा तो मेरी इस किताब में लिखा है।”

यह सुनकर ज़िद्दी को फिर हँसी आई। “अरे! मैं कितनी बार तुम्हें बताऊँ कि तुम्हारी यह किताब फ़ज़ूल बातों से भरी हुई है। इसमें लिखी कोई भी बात सच्ची नहीं है। अच्छा अब बताओ, वापस चलते हो कि नहीं?”

ज़िद्दी ज़रा ग़ुस्से से बोल रहा था इसलिए मोमिन का दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा, लेकिन उसने जुर्रत करके जवाब दिया, “नहीं! मैं तो बादशाह के हाँ जा रहा हूँ।”

ज़िद्दी बोला, “अच्छा! तो जाओ। आओ दो-दिला हम चलते हैं। ऐसे बेवुकूफ़ लड़के के पीछे दौड़ना बेकार है, जिसे यह भी पता नहीं कि उसकी भलाई किस में है।”

दो-दिला पहले तो ख़ामोश खड़ा उनकी बातें सुनता रहा। लेकिन फिर थोड़ी देर के बाद कहने लगा, "फ़र्ज़ करो कि किताब सच्ची है। फिर उसका हाल हमारे हाल से अच्छा होगा। मैं समझता हूँ कि उसके साथ जाने में ही हमारी भलाई है।"

मोमिन पुकार उठा, "ज़रूर मेरे साथ चलो। बादशाह के साथ रहकर हम किस क़दर ख़ुश रहेंगे।"

दो-दिला बोला, "क्या तुम्हें यक़ीन है कि तुम शहर को ढूँड लोगे?"

"हाँ, क्योंकि मुबश्शिर ने मुझे समझा दिया कि क्या करना है। उस दरवाज़े तक जाना है तो वहाँ का आदमी हमें रास्ता बता देगा।"

ज़िद्दी बोला, "जाने का ख़याल छोड़ दो। फ़र्ज़ करो कि कोई आसमानी शहर हो भी तब भी तुम जैसे लड़के उस शहर तक कभी नहीं पहुँच सकते।"

दो-दिला ने कोई जवाब न दिया बल्कि वह मोमिन के और भी नज़दीक गया। उसने कितनी मरतबा अजनबियों से शहर के बारे में सुना था, और अब वह सोचने लगा, "मैं क्यों न दरवाज़े तक जाकर देखूँ कि रास्ता कैसा है?"

ज़िद्दी ने बात जारी रखते हुए कहा, "ठीक है, मोमिन जाए तो जाए, लेकिन दो-दिला तुम तो अक़्लमंद हो। मेरे साथ वापस चलो। फ़िकर मत करो। वहाँ जाकर मैं किसी को भी नहीं बताऊँगा कि तुम जाने को कह रहे थे।"

लेकिन आज दो-दिला को अपनी मनमानी करना अच्छा लग रहा था। इसलिए उसने जवाब दिया, “अब आगे बात मत करो, क्योंकि मैंने इरादा कर लिया है। अगर तुम साथ नहीं चलते तो ख़ुदा हाफ़िज़।”

“नहीं! मैं हरगिज़ तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा। मुझे तुम दोनों से छुटकारा पाने की बड़ी ख़ुशी है।” ज़िद्दी यह कहकर हँसते हुए बरबादनगर वापस चला गया।

मायूसी की दलदल

जब दोनों लड़के अकेले रह गए तो दो-दिला ने सवाल किया, “अच्छा अब बताओ कि आसमानी शहर किस तरह का है?”

मोमिन ने जवाब में कहा,“बड़ा ही ख़ूबसूरत है। क्या तुमने अजनबियों की बातें नहीं सुनीं? बादशाह वहीं रहता है और उसकी रिआया को न तो थकावट होती है और न ही उनको उदासी छू सकती है। उनका लिबास नूरानी होता है जो न मैला होता है और न ही फटा-पुराना।”

“मेरा ख़याल है कि वह हमें अंदर दाख़िल नहीं होने देंगे।”

“क्यों नहीं, ज़रूर जाने देंगे। मुबश्शिर ने ऐसा ही कहा था। उसने मुझे यह रुक़्क़ा भी दिया है।” मोमिन ने बादशाह के नाम का पैग़ाम खोलकर पढ़ने के लिए दो-दिला के हवाले कर दिया। “बादशाह ने मुझे यह पैग़ाम भेजा है ताकि मुझे मालूम हो जाए कि यह उसी की मरज़ी है कि मैं उसके शहर को जाऊँ।”

“लेकिन उसने तो मेरे नाम कोई पैग़ाम नहीं भेजा है।”

“तुम मुबश्शिर से मिले ही नहीं हो। लेकिन फ़िकर मत करो। मुझे यक़ीन है कि तुमसे मिलकर बादशाह बहुत ही ख़ुश होगा।”

“अच्छा! कोई और बात? हाँ! तो शहर में जाकर करोगे क्या?”

“पहली बात तो यह कि मेरी बादशाह से मुलाक़ात होगी। अगर वह मेहरबान हुए तो उससे मालूम करूँगा कि मेरी अम्मी कहाँ हैं। तुम्हें मालूम होगा कि वह मुझे बिलकुल छोटा छोड़कर चली गई थीं। बाज़ औक़ात मेरा दिल उनके लिए बहुत तड़पता है। एक अजनबी ने बताया था कि वह बादशाह के हाँ हैं, और मेरा अपना ख़याल भी यही है कि वह आसमानी शहर के अंदर होंगी।”

“वहाँ पहुँचने में हमें कितना अरसा लगेगा? तुमने मुबश्शिर से पूछा था ना? मेरे ख़याल में हमें ज़रा तेज़ क़दम उठाना चाहिए।”

मोमिन ने जो थक चुका था ठंडी आह भरकर कहा, “चाहता तो मैं भी हूँ, लेकिन इस भारी बोझ के बाइस मुझसे जल्दी नहीं चला जाता।”

दो-दिला यह कहने ही वाला था कि “क्या मतलब कि तुम्हारी भारी बोझ है?” कि यकायक उसके पाँव कीचड़ में धँस गए। क्या देखता है कि वह ऐसे मैदान में पहुँच गए हैं जहाँ दलदल है। वह चिल्ला उठा,“अरे! हम कहाँ आ गए?”

बेचारा मोमिन क्या बताता, वह तो ख़ुद अपने बोझ के बाइस दो-दिला से ज़्यादा दलदल में धँस चुका था। उसने सिर्फ़ इतना जवाब दिया, “मैं क्या जानूँ! आओ मिलकर निकलने की कोशिश करते हैं।”

लेकिन लड़के इतने ख़ौफ़ज़दा और परेशान थे कि उनके लिए यह समझना मुश्किल था कि दलदल से किस तरह निकलें। इसे मायूसी की दलदल कहा जाता था। और बच्चे तो बच्चे, यह जगह तो जवानों के लिए

भी ख़तरनाक थी। लड़के निकलने की जितनी भी कोशिश करते उतना ही ज़्यादा दलदल उन्हें नीचे की तरफ़ खींच लेती थी। तंग आकर दो-दिला ग़ुस्से में आ गया और कहने लगा, "देखते नहीं हम कैसी मुसीबत में फँस गए? यह ग़लती तुम्हारी ही वजह से हुई है। काश मैं तुम्हारे साथ न आया होता! अगर सफ़र के शुरू का यह हाल है तो क्या मालूम आगे रास्ते में किन किन मुसीबतों का सामना करना होगा? ज़रा मुझे इस दलदल से निकलने दो तो मैं सीधा अपने घर की राह लूँगा। तुम अकेले ही आगे निकलो!"

मोमिन ने कोई जवाब न दिया, क्योंकि वह ख़ुद बड़ा ख़ौफ़ज़दा और ग़मगीन था। उसके कपड़े कीचड़ से लतपत हो चुके थे। और हर लमहे उसे यही अंदेशा था कि कहीं दलदल में घुटकर मर न जाए। उसने सोचा कि काश मुबश्शिर मेरी मदद करने आए। लेकिन आस-पास कोई भी नज़र नहीं आ रहा था। मैदान के पार बहुत दूर दरवाज़े के ऊपर रौशनी चमकती दिखाई दे रही थी। और पीछे बरबादनगर था। दो-दिला रौशनी की तरफ़ पीठ करके आख़िरकार दलदल से निकलने में कामयाब हो गया, लेकिन उसने रुककर अपने साथी की मदद न की। और जब मोमिन ने पीछे मुड़कर देखा तो वह अपने पूरे ज़ोर से घर की तरफ़ दौड़े जा रहा था। बेचारा मोमिन! जब दो-दिला उसकी आँखों से ओझल हो गया तो उसने अपने आपको बिलकुल तनहा महसूस किया। तो भी वह कहता रहा, "मैं बादशाह के हाँ ज़रूर जाऊँगा।" उसने एक बार फिर कोशिश

की कि दलदल से निकले लेकिन बेसूद। जब वह बिलकुल हिम्मत हार चुका था तो उसे अचानक एक आवाज़ सुनाई दी, “सब्र करो! मैं तुम्हारी मदद को आ रहा हूँ।”

मदद

जब यह दोस्ताना आवाज़ सुनाई दी तो मोमिन दिल खोलकर रोने को था। वह क़रीब क़रीब इस नतीजे तक पहुँच गया था कि मुबश्शिर की तमाम बातें ग़लत हैं, कि बादशाह को ज़रा भी परवा नहीं कि रास्ते पर सफ़र करनेवाले उसके ख़ूबसूरत शहर को पहुँचें।

उसने सोचा, "मैं इतना छोटा और कमअक़्ल हूँ कि ख़ैरियत से मैदान को भी पार नहीं कर सकता। उस वक़्त क्या करूँगा जब ऊँचे पहाड़ की चढ़ाई चढ़नी पड़ेगी या किसी गहरे दरिया को पार करना पड़ेगा?"

लेकिन ऐन उसी वक़्त मदद नामी एक लड़का जो बादशाह के ख़ादिमों में से था, उस दलदल के नज़दीक पहुँच गया। क्या देखता है कि मोमिन दलदल में हाथ-पाँव मार रहा है। मदद बड़ा हमदर्द लड़का था। वह लपककर किनारे पर पहुँचा ताकि किसी न किसी तरह लड़के की मदद करे।

वह पूछने लगा,"तुम इसमें कैसे गिर पड़े?"

"मुबश्शिर ने कहा था कि दरवाज़े पर पहुँच जाओ। लेकिन मैं दलदल के बारे में कुछ नहीं जानता था," मोमिन ने नहीफ़ आवाज़ में जवाब दिया।

"क्या तुमने दलदल को पार करने के लिए रखे हुए पत्थर दिखाई नहीं दिए?"

“नहीं, मैं तो दो-दिला के साथ बातों में मशग़ूल था और हम रास्ते पर ग़ौर ही नहीं कर रहे थे।”

“यह तुम्हारी नादानी थी। दो-दिला कहाँ है?”

“वह निकल तो गया, लेकिन उसने अपने घर की राह ली और मुझे बचाने की कोशिश भी न की।”

“अच्छा! अब डरो मत। मैं एक मिनट में तुम्हारे पास पहुँचता हूँ। बादशाह हमेशा तुम्हारी निगहबानी करेगा। वैसे मैं हैरान था जब उसने मुझे आज इस तरफ़ भेज दिया। उसे मालूम था कि तुम्हें मेरी मदद की ज़रूरत पड़ेगी। मेरा हाथ पकड़कर अपना पाँव यहाँ रखो। अब तुम महफ़ूज़ हो।”

मोमिन खड़ा काँप रहा था। उसकी आँखों से आँसू टपक रहे थे।

कहने लगा, “तुम कितने मेहरबान हो। मैं ख़ुद तो कभी न निकल सकता।”

मदद ने जवाब में कहा, “हाँ! मुझे भी लगता है कि तुम अपनी ताक़त से नहीं निकल सकते थे। क्या तुम आसमानी शहर को जा रहे हो?”

“इरादा तो है। लेकिन डरता हूँ कि मेरे लिए राह कठिन होगी। शायद मेरे लिए यही अच्छा है कि बड़ा होने तक इंतज़ार करूँ।”

“नहीं, इंतज़ार की ज़रूरत नहीं। बादशाह तुम्हारी निगहबानी करेगा। जब भी तुम्हें मदद की ज़रूरत होगी वह किसी न किसी को ज़रूर भेज देगा।”

मोमिन ने सवाल किया, “पक्की बात है? मैं तो सिर्फ़ बच्चा हूँ, और वैसे तो लोगों का कहना है कि मैं भोला-भाला हूँ।”

“लोगों के कहने की परवा न करो। अगर तुम्हें बादशाह से मिलने का इश्तयाक़ है तो तुम सही-सलामत रहोगे। यों तो शायद तुम्हें रास्ता लंबा और सख़्त मालूम हो लेकिन अगर हिम्मत करोगे और चलते रहोगे तो आख़िरकार शहर को पहुँच जाओगे। वहाँ तुम्हारी तमाम तकलीफ़ें दूर हो जाएँगी। बादशाह से मिलकर तुम्हें बड़ी ख़ुशी होगी।”

मदद ने इतनी हमदर्दी से मोमिन के साथ बात की कि उसका सारा डर जाता रहा। वह बड़ी आज़ादी से उसके साथ बात करने लगा। “तुम्हारा क्या ख़याल है, क्या मुझे आसमानी शहर में मेरी अम्मी मिल जाएँगी? क्या वह बादशाह के पास हैं?”

“जब वह गई थीं तो उस वक़्त मैं बच्चा ही था। तो उनकी शक्लो-सूरत मुझे याद नहीं, लेकिन उनकी तस्वीर हमारे घर में पड़ी है। इसलिए अगर

मैं उन्हें देख लूँ तो ज़रूर पहचान लूँगा। वह तस्वीर में बड़ी प्यारी और मेहरबान दिखाई देती हैं।"

मदद कहने लगा, "बेशक बादशाह ने उन्हें बता दिया होगा कि तुम शहर को आ रहे हो। वह ज़रूर तुम्हारा इंतज़ार कर रही होगी।"

मदद ज़मीन पर घुटने टेके घास के तिनकों के साथ मोमिन के कपड़ों पर लगी हुई कीचड़ साफ़ करने लगा। फिर वह खड़ा होकर कहने लगा, "तुमने अपने कपड़ों को बहुत गंदा कर दिया है। लेकिन शहर में पहुँचने से पेशतर तुम्हें नए कपड़े अता किए जाएँगे। दरवाज़े की रौशनी पर नज़रें जमाए रखो और जितना भी हो सके तेज़ तेज़ चलो ताकि वहाँ जल्द अज़ जल्द पहुँच जाओ। ख़ुदा हाफ़िज़। याद रखना, बादशाह तुम्हारा निगहबान है।"

मोमिन ने पूछा, "लेकिन एक बात बताओ। क्या तुम ख़ुद भी कभी उस शहर में गए हो?"

"नहीं। मैं एक बार उसके फाटकों के बिलकुल क़रीब पहुँच गया, लेकिन उस वक़्त बादशाह ने मेरे ज़िम्मे कुछ काम लगा दिया। जब तक वह काम ख़त्म न हो मैं शहर नहीं जा सकता।"

"वहाँ पहुँचने में मुझे कितना अरसा लगेगा?"

"यह तो मैं बता नहीं सकता, क्योंकि कुछ लोगों के लिए यह रास्ता दूसरे लोगों की निसबत ज़्यादा लंबा है। लेकिन अगर तुम्हें बादशाह से सचमुच मुहब्बत है और तुम उसके फ़रमाँबरदार हो तो वह ऐन वक़्त पर

तुम्हें शहर में पहुँचा देगा। अब मैं जाता हूँ। अब से अगर तुम्हें ख़तरा हो, तो बादशाह से फ़रियाद करना, वह ज़रूर तुम्हारी सुनेगा।”

दुनियादार

बरबादनगर से थोड़ी ही दूर एक पहाड़ था। पहाड़ के उस तरफ़ एक छोटा-सा गाँव था। इस गाँव में कुछ ऐसे लोग रहते थे जो अपने आपको बादशाह के ख़ादिम बताते थे। वह ज़ाहिर करते थे कि हमें बादशाह से बेपनाह मुहब्बत है, हम उसके फ़रमाँबरदार हैं। लेकिन सिवाए अपने ऐशो-आराम के उनका और किसी चीज़ से सरोकार न था। अजनबियों की बातें सुनकर वह बरबादनगर में रहने से डरकर चले गए थे। लेकिन साथ ही वह बादशाह के मुल्क में पहुँचने की तकलीफ़ नहीं सहना चाहते थे। इसी लिए उन्होंने पहाड़ के उस तरफ़ अपने मकान बना लिए थे, और वहीं पर उनके खेत और बाग़ भी थे। उनका ख़याल था कि वहाँ हम बिलकुल महफ़ूज़ हैं।

अब ऐसा हुआ कि जिस दिन मोमिन शहर से निकला था उसी दिन इस गाँव का एक लड़का जिसका नाम दुनियादार था वहाँ से गुज़र रहा था। दुनियादार की मोमिन से थोड़ी-बहुत जान-पहचान थी, क्योंकि उस गाँव के लोग अकसर शहर में अपने पुराने अज़ीज़ों से मिलने जाते थे। मोमिन को देखकर वह हैरान हो गया कि वह अपने घर से इतनी दूर क्या कर रहा है।

दुनियादार कहने लगा,“मोमिन! तुम कहाँ? तुम तो शहर से बहुत दूर निकल आए हो!”

दुनियादार लंबा और ख़ूबसूरत लड़का था, और मोमिन को ख़ुशी हुई कि दुनियादार ने उसे पहचान लिया है। उसने जवाब दिया, “मैं उस दरवाज़े की तरफ़ जा रहा हूँ”

“उस दरवाज़े की तरफ़! लेकिन किस लिए?”

“अपने बोझ से छुटकारा पाने के लिए।”

दुनियादार ने जवाब में कहा, “सचमुच यह बोझ बड़े तकलीफ़देह होते हैं। हर आदमी को बोझ महसूस नहीं होता। लेकिन जब भी इसका एहसास हो जाता है तो किसी तरह चैन नहीं मिलता।”

दुनियादार को इस तरह बातें करते सुनकर मोमिन को बड़ा ताज्जुब हुआ। क्योंकि शहर के लड़के-लड़कियाँ इस बात पर उसका

मज़ाक़ उड़ाकर कहते थे कि तुम्हारे दिमाग़ में ख़लल है, इस बोझ का नामो-निशान तक नहीं होता।

मोमिन कहने लगा, "ऐसा मालूम होता है कि मुझे ज़्यादा दूर तक यह बोझ उठाना न पड़ेगा। मैं दरवाज़े तक बड़ी जल्दी पहुँचना चाहता हूँ।"

दुनियादार बोला, "लेकिन किसने तुम्हें वहाँ जाने के लिए कहा था?"

"मेरी मुलाक़ात एक बड़े हमदर्द इनसान बनाम मुबश्शिर से हुई। उसी ने मुझे वहाँ जाने की राहनुमाई की।"

यह सुनकर दुनियादार हँस पड़ा, "वह हमदर्द तो होगा, लेकिन है बड़ा बेवुक़ूफ़। मैं उसे ख़ूब जानता हूँ। मोमिन! ग़ौर करो। मैं तुम्हें इस बोझ से छुटकारा पाने का इससे भी अच्छा तरीक़ा बता सकता हूँ। ऐसे लंबे सफ़र पर जाने की तकलीफ़ मत उठाओ। हाँ, मैं जानता हूँ कि मुबश्शिर ने तुम्हें क्या बताया होगा। वह हर एक आदमी से यही बातें कहता है। तुम तो उस भयानक दलदल से गुज़रे ही होगे। अब जान लो कि अगर तुमने दरवाज़े को तय किया तो आगे उससे भी ज़्यादा भयानक तकलीफ़ें उठानी होंगी। रास्ते में वहशी दरिंदे और हर क़िस्म के ख़तरे हैं। ऐन मुमकिन है कि तुम भूक और थकन से निढाल होकर अपने आप ही मर जाओगे।"

मोमिन ने आह भरकर कहा, "मेरा बोझ तो इतना भारी है कि मुझे इससे ज़रूर छुटकारा पाना है। और मुबश्शिर का कहना है कि इसका बस यही एक तरीक़ा है।"

दुनियादार ने जवाब दिया, "अच्छा! तुम्हारी मरज़ी। लेकिन मेरे ख़याल में यह बेवुकूफी है। तुम्हें किसने बताया कि तुम्हारा कोई बोझ है भी या नहीं?"

"बादशाह की किताब में लिखा है कि हर इनसान का एक बोझ होता है।"

"लो, मुझे सीधा पता चला कि तुम ने उसी किताब में पढ़ा है। वह किताब संजीदा और बड़े बुज़ुर्गों के लिए तो अच्छी है, लेकिन तुम जैसे बच्चे तो उसे समझ ही नहीं सकते। तुम उसे पढ़ तो सकते हो, लेकिन उसके मानी समझना तुम्हारे बस की बात नहीं है। इसी लिए तुम्हारे दिल में हर क़िस्म की फ़ज़ूल बातें उभरने लगी हैं। आओ, मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम्हें क्या करना चाहिए। बरबादनगर की तरफ़ तो तुम वापस नहीं जा सकते, क्योंकि वहाँ तुम्हें डर लगता है। वैसे भी वह रहने के क़ाबिल नहीं रहा। अगर तुम्हारी जगह मैं होता तो मैं पहाड़ के पार होता हुआ गाँव चला जाता। जो पहला मकान तुम्हें मिलेगा उसमें मेरे चंद-एक दोस्त रहते हैं, और अगर तुम उनसे कह दो कि मैंने तुम्हें भेजा है तो वह तुम्हें अपने घर ले जाकर हर तरह से ख़ातिरदारी करेंगे। फिर कुछ दिनों के बाद तुम बिलकुल भूल जाओगे कि तुम्हारा कोई बोझ था भी या नहीं। तुम्हें उसका ख़याल तक भी नहीं रहेगा।"

मोमिन शको-शुबहा में पड़ गया। दुनियादार का लबो-लहजा इतना हमदर्दाना था कि उसकी बातों पर कोई शक भी नहीं कर सकता था।

वह सोचने लगा कि क्या ही अच्छा हो अगर मैं अपने पुराने वतन के नज़दीक ही आबाद हुआ। इस सूरत में कभी कभी बी मोमिना और दीगर हमजोलियों से भी मुलाक़ात हो सकती है।

बात को जारी रखते हुए दुनियादार ने कहा, "मुझसे बेहतर मशवरा तुम्हें कोई और नहीं देगा। मुबश्शिर की बातों को तो जाने दो। रास्ता पहाड़ के दामन से होता हुआ जाता है। मकान तुम्हें बड़ी आसानी से मिल जाएगा, क्योंकि सबसे पहला मकान वही है।"

फिर वह जेब में हाथ डाले चल दिया जबकि मोमिन बादशाह और उसका पैग़ाम भूल गया। वह दरवाज़े का रास्ता छोड़कर पहाड़ के पार गाँव की तरफ़ चल पड़ा।

ग़लत राह पर

मोमिन बड़ी तेज़ी से गाँव की तरफ़ चलने लगा, लेकिन जल्द ही वह थक गया। चलते चलते उसका बोझ इतना भारी होता गया कि वह उसके नीचे दबने लगा। जब वह पहाड़ के दामन में पहुँचा तो इस क़दर थक चुका था कि मुश्किल ही से आगे चल सकता था। वह सोचने लगा कि क्या मैं कभी दुनियादार के दोस्तों के पास पहुँचूँगा भी या नहीं?

लेकिन जब वह सड़क के उस मोड़ पर पहुँचा जहाँ से पहाड़ के दामन में रास्ता जाता था तो उसे अपने बोझ का ख़याल ही न रहा। क्योंकि उस रास्ते से ज़्यादा ख़तरनाक चीज़ उसने कभी देखी नहीं थी। सड़क के ऊपर चटानें यों झुकी हुई थीं कि लगता था कि अभी अभी गिरनेवाली हैं।

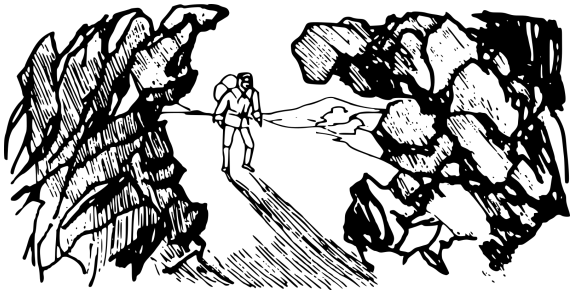

मोमिन थोड़ा-सा रास्ता तो चलता गया, लेकिन जल्द ही इतना ख़ौफ़ज़दा हो गया कि आगे क़दम उठाना मुश्किल हो गया। उसे यों महसूस हुआ कि जैसे चटानों के बीच में से शोले उठ रहे हों। वह ख़ौफ़ से काँपकर सिसकियाँ भरने लगा, "काश मैं इस तरफ़ न आया होता! अब करूँ तो क्या करूँ?"

ऐन उसी वक़्त एक आदमी दिखाई दिया। जब वह नज़दीक पहुँचा तो मोमिन ने उसे पहचान लिया। मुबश्शिर था। लेकिन इस वक़्त उसके चेहरे पर मुसकराहट नहीं थी। यह देखकर मोमिन निहायत शरमिंदा हुआ, और वह चाहता था कि चटानें गिरकर उसे उसके दोस्त की नज़र से छिपा दें। कितनी शर्म की बात थी कि उसने उसकी नसीहत पर अमल नहीं किया था।

मुबश्शिर ने पूछा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" लेकिन मोमिन का सर शर्म से झुक गया, और उससे कोई जवाब न बन पाया।

"क्या तुम ही वह लड़के नहीं जिसे मैंने बरबादनगर से बाहर रोते हुए देखा था?"

मोमिन बिसूरते हुए बोला, "जी हाँ।"

"क्या मैंने तुम्हें दरवाज़े का रास्ता नहीं बताया था?"

"हाँ।"

"फिर तुम यहाँ कैसे पहुँच गए? यह तो दरवाज़े का रास्ता है ही नहीं!"

मोमिन ने रोते हुए कहा, “मैं इधर आना तो नहीं चाहता था, लेकिन एक लड़का मुझसे मिला जिसने मुझे बताया कि मैं गाँव में अपने बोझ से छुटकारा पा सकता हूँ। मैं बहुत थका हुआ था इसलिए चाहता था कि मुझे बोझ से जल्द छुटकारा मिल जाए। लेकिन यह चटानें ज़रूर मुझ पर गिर पड़ेंगी। मैं बहुत डरा हुआ हूँ।”

मुबश्शिर बोला, “मेरी बात सुनो! बादशाह ने मुझे तुम्हारे पास आसमानी शहर का हाल बताने को भेजा था। उसने तुमसे वादा भी कर रखा है कि वह तुमसे मुहब्बत करेगा और तुम्हारा निगहबान होगा। याद है जब तुम दलदल में गिरे थे तो उसी ने तुमको बाहर निकालने के लिए मदद को भेजा था। तुमने अपनी किताब में भी पढ़ा होगा कि वह हर वक़्त उनका निगहबान रहता है जो उस पर भरोसा रखते हैं। तुम दुनियादार की बातों का यक़ीन करके राहे-रास्त से क्यों हटे?”

अब मोमिन फूट फूट रोने लगा। मुबश्शिर ने बड़े प्यार से अपना हाथ उसके सर पर रखा और कहा, “तुमने बादशाह को बहुत ही रंजीदा किया है। लेकिन अगर तुम्हें अपने किए पर दिली अफ़सोस है तो वह तुम्हें माफ़ करेगा।”

मोमिन चिल्ला उठा, “मैं अब कभी ना-फ़रमानी नहीं करूँगा। सचमुच मुझे बहुत अफ़सोस है। क्या आपको यक़ीन है कि बादशाह मुझे माफ़ कर देगा?”

“बादशाह तो तुम्हें हमेशा अपने बेटे की ख़ातिर माफ़ करेगा।”

“और क्या मैं अब भी दरवाज़े को जा सकूँगा, कहीं उसका पहरेदार मुझे वहाँ से वापस न कर दे?”

“बादशाह तो उसे किसी भी को वापस भेजने की इजाज़त नहीं देता। तुम सिर्फ़ खटखटाना तो वह तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोल देगा। मेरा हाथ पकड़ो। मैं तुम्हें पहाड़ के उस तरफ़ पहुँचा दूँगा।”

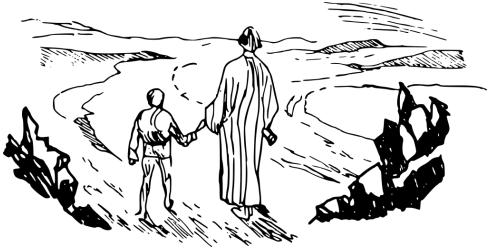

मोमिन ने अपने आँसू पोंछे और मुबश्शिर के हाथ में अपना हाथ देकर बड़ा ख़ुश हुआ और वापस खेतों के रास्ते पर हो लिया। पहाड़ की भयानक चटानें पीछे रह गईं और दरवाज़े के ऊपर की रौशनी साफ़ दिखाई देने लगी।

मुबश्शिर बोला, “अगर तुम जल्दी करो तो अंधेरा होने से पहले ही दरवाज़े पर पहुँच जाओगे। वहाँ तुम सुबह तक आराम से ठहर सकते हो।”

फिर उसने मोमिन को प्यार किया और मुसकराते हुए अलविदा कहा।

मोमिन एक मरतबा फिर अपने सफ़र पर रवाना हो गया।

तंग दरवाज़ा

सूरज अभी ग़ुरूब हो ही रहा था कि मोमिन दरवाज़े पर पहुँच गया। वह तेज़ तेज़ चलता गया, क्योंकि वह अंधेरा होने से पहले खेतों से निकल जाना चाहता था। अब वह बहुत थक चुका था, लेकिन दरवाज़े के क़रीब पहुँचकर उसे बड़ी ख़ुशी हुई।

दरवाज़ा निहायत ही ख़ूबसूरत था। उसकी चौखटें पत्थरों से बनी हुई थीं। दरवाज़े के ऊपर एक बत्ती लटक रही थी। उस बत्ती की रौशनी में इस क़दर चमक थी कि तेज़ धूप में भी उसकी रौशनी साफ़ दिखाई देती

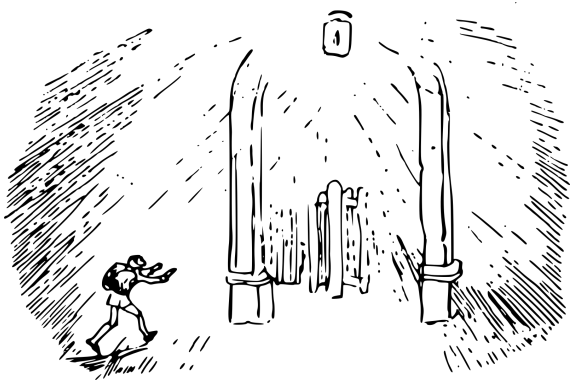

थी। दरवाज़े के ऊपर चंद अलफ़ाज़ लिखे हुए थे। मोमिन रुक गया। उसने पढ़ा, "खटखटाते रहो तो तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोल दिया जाएगा।"

मोमिन के ज़हन में आया कि मुबश्शिर ने भी यही कहा था, और उसने दरवाज़े को खटखटाना शुरू किया। उसने कान लगाए लेकिन किसी के आने की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। उसने दरवाज़े को फिर से खटखटाया तो कुछ देर के बाद एक आदमी ने दरवाज़ा खोला। वह मुबश्शिर से मिलता-जुलता था। उसने भी मुबश्शिर की तरह एक लंबा चोग़ा पहना हुआ था। उसका चेहरा शरीफ़ और पुरसुकून था। वह मोमिन को देखकर मुसकराया और कहने लगा, "बेटे, तुम कौन हो?"

लड़के ने जवाब दिया, "मैं मोमिन हूँ। इजाज़त हो तो अंदर आ जाऊँ।"

पहरेदार का नाम ख़ैरख़ाह था। उसने सवाल किया, "क्या तुम बरबाद-नगर से आए हो?"

"जी, जनाब! और मैं बादशाह के हाँ जाना चाहता हूँ।"

तब ख़ैरख़ाह ने दरवाज़ा खोल दिया और मोमिन का हाथ पकड़कर उसे जल्दी से अंदर खींच लिया।

मोमिन ने पूछा, "आपने ऐसा क्यों किया?"

ख़ैरख़ाह ने जवाब दिया, "शरीर सरदार का क़िला इस दरवाज़े के क़रीब ही है। जब वह देखता है कि कोई अपना वतन छोड़कर बादशाह के दरवाज़े में दाख़िल हो रहा है तो वह अपने सिपाहियों को हुक्म देता है कि वह उस पर तीर बरसाएँ।"

मोमिन ने बाहर की तरफ़ देखा तो उसे बहुत-सारे तीर ज़मीन पर बिखरे हुए दिखाई दिए। जब ख़ैरख़ाह ने किवाड़ बंद कर दिए तो मोमिन बहुत ख़ुश हुआ। कहने लगा, "अब तो मैं महफ़ूज़ हूँ।"

ख़ैरख़ाह उसे अपने घर ले गया। उसका मकान दरवाज़े के सामने ही था। "तुम आराम करो। मैं तुम्हारे लिए खाना लेकर आता हूँ। और हाँ तुम्हें दरवाज़े का रास्ता किसने बताया?"

मोमिन ने जवाब दिया, "मुबश्शिर ने, और वह कहता था कि आगे का रास्ता मुझे आप बताएँगे।"

"हाँ, वह तो मैं बताऊँगा। लेकिन अकेले कैसे आए? क्या तुम्हारे माँ-बाप नहीं हैं?"

"मेरी अम्मी तो बादशाह के हाँ हैं, और मेरे वालिद इतने मसरूफ़ हैं कि वह सफ़र के लिए वक़्त नहीं निकाल सकते। इसलिए मैं मजबूरन अकेला ही सफ़र पर निकला हूँ।"

"अगर तुम्हारी अम्मी बादशाह के हाँ हैं तो वह इसी दरवाज़े से गुज़री होंगी, और तुम अपने रास्ते पर जाते हुए उनका ज़िक्र सुनते जाओगे।"

मोमिन ने शौक़ से कहा, "क्या मुझे सचमुच उनका पता मिल जाएगा?" उसकी सबसे बड़ी आरज़ू यही थी कि कहीं उसे अपनी प्यारी अम्मी का कुछ पता चले। "मदद ने वादा किया था कि बादशाह मेरी अम्मी को ख़बर पहुँचा देगा कि मैं आ रहा हूँ और कि वह मेरे इंतज़ार में होंगी। ठीक है ना!"

"बिलकुल दुरुस्त! वैसे तो जब तक तुम आसमानी शहर में न पहुँचे तुम्हारी उनसे मुलाक़ात नहीं हो सकेगी। लेकिन वह तुम्हें कभी कभी देख सकेंगी। क्या तुम घर से सीधे आ रहे हो? क्या तुम्हें लड़कों ने बहकाया तो नहीं कि तुम भी उनके साथ रहो?"

"ज़िद्दी और दो-दिला तो मेरे साथ रवाना हुए। ज़िद्दी तो जल्द ही नाराज़ होकर वापस चला गया जबकि दो-दिला आसमानी शहर को जाने के लिए तैयार था। लेकिन जब हम दलदल में फँस गए तो वह डर गया, इसलिए वापस चला गया। मुझे भी लग रहा था कि वहाँ से निकलना मुश्किल है, लेकिन ऐन वक़्त पर मदद आया। उसने मुझ पर बड़ी मेहरबानी की।"

"और उसके बाद क्या हुआ?"

मोमिन शरमाकर कहने लगा, “मैं तो दो-दिला से भी बदतर हूँ, क्योंकि जब मेरी मुलाक़ात दुनियादार से हुई तो मैं फ़ौरन उसके जाल में उलझकर गाँव की तरफ़ मुड़ गया। उस तरफ़ सड़क बड़ी ख़तरनाक है, और लगता था कि मैं चटानों के नीचे दब जाऊँगा। लेकिन मुबश्शिर मुझे ढूँडकर फिर सही रास्ते पर ले गया।”

“और अब तुम बादशाह के दरवाज़े में दाख़िल हो चुके हो और उन बच्चों में से एक हो जो उस शहर की तरफ़ जा रहे हैं। आज रात तो तुम्हें यहीं सोना है। कल मैं तुम्हें आसमानी शहर का रास्ता दिखाऊँगा।”

तरजुमान के घर में

जब सुबह हुई तो मोमिन सफ़र के लिए तैयार हुआ। ख़ैरख़ाह ने उसके साथ घर से निकलकर उसे वह तंग रास्ता दिखाया जो मैदान में से निकलकर सीधा जाता था।

मोमिन ने पूछा, “अगर मैं कहीं ऐसी जगह पहुँचूँ जहाँ दो रास्ते हों तो ऐसी सूरत में मैं क्या करूँ?”

ख़ैरख़ाह ने जवाब दिया,“शाही रास्ता हमेशा सीधा ही होता है जबकि जितने भी रास्ते उससे निकलते हैं वह सब टेढ़े-मेढ़े होते हैं। ग़लत रास्ते आम तौर पर चौड़े होते हैं जबकि सीधा रास्ता तंग होता है। अगर तुम ध्यान रखोगे तो कभी नहीं भटकोगे।”

मोमिन ने चलते चलते सवाल किया, “क्या आप मेरा बोझ उतार सकते हैं? अगर यह बोझ न हो तो मेरी रफ़्तार बहुत तेज़ हो जाएगी।”

ख़ैरख़ाह ने जवाब दिया, “यह तो मुझसे नहीं हो सकता, लेकिन जब तुम सलीब के पास पहुँचोगे तो यह अपने आप ही गिर पड़ेगा और फिर कभी भी तुम्हें नज़र नहीं आएगा।”

मोमिन ने ठंडी आह भरकर कहा, "उस वक़्त मुझे कितनी ख़ुशी होगी! जनाब, मुझे बताएँ कि इस मकान के अलावा रास्ते में कुछ और भी मकान हैं?"

"हाँ हैं ना। दोपहर को तुम्हारा गुज़र तरजुमान के मकान से होगा। वह बड़ा मेहरबान आदमी है। अगर तुमने उससे मुलाक़ात की तो वह तुम्हें बहुत ही नादिर और उम्दा उम्दा चीज़ें दिखाएगा।"

सुबह का माहौल बड़ा ख़ुशगवार था, और मोमिन को सफ़र करने में बड़ा मज़ा आया। परिंदों का चहचहाना इतना सुरीला था कि उसका जी चाहता था कि ख़ुद भी उनके साथ मिलकर गाना शुरू कर दे। हवा भी ताज़ी और सुहानी थी। इससे उसकी बरबादनगरवाली सारी थकावट दूर हो गई। वह ख़याल करने लगा, "यहाँ कोई तकलीफ़ देनेवाली चीज़ नहीं। दुनियादार ने कितना झूठ बोला कि मैं डर जाऊँगा।"

चलते चलते वह कुछ थक गया तो सोचने लगा कि कहीं थोड़े अरसे के लिए आराम कर ले। तब उसे सड़क के पार एक कुशादा मकान नज़र आया। उसे याद आया कि यही तरजुमान का मकान होगा। वह दरवाज़े के पास जाकर उसे खटखटाने लगा। एक नौकर ने बाहर आकर पूछा, "क्या बात है?"

उसने कहा,"मैं मुसाफ़िर हूँ, और शाही शहर को जा रहा हूँ। कल रात मैंने तंग दरवाज़े के पास गुज़ारी। वहाँ का बंदा ख़ैरख़ाह ने मुझे बताया

कि मालिके-मकान उसका दोस्त है। क्या मेरी उससे मुलाक़ात हो सकती है?"

नौकर ने जाकर मालिक को इत्तला दी तो तरजुमान बाहर निकल आया। दराज़क़द और उम्ररसीदा था, और उसकी डाढ़ी सफ़ेद थी। मोमिन ने महसूस किया कि वह बहुत दाना है। उसने लड़के के सर पर हाथ फेरकर कहा, "बेटे! मैं तुम्हारी क्या ख़िदमत कर सकता हूँ?"

मोमिन ने कहा, "अगर बुरा न मानें तो मुझे अपनी चंद-एक उम्दा उम्दा चीज़ें दिखा दें।" यह उसने रुक रुककर कहा, क्योंकि उसे डर था कि तरजुमान मुझ जैसे छोटे मुसाफ़िर को देखकर पता नहीं क्या कहेगा। फिर बात पूरी करते हुए बोला, "मुझे ख़ैरख़ाह ने बताया था कि आपसे मुलाक़ात करूँ।"

तरजुमान मुसकराकर कहने लगा, "ख़ैरख़ाह मेरा दोस्त है। अंदर आ जाओ। मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ दिखाता हूँ जो तुम्हें ज़रूर पसंद आएगी।"

वह मोमिन का हाथ पकड़कर उसे अंदर ले गया जहाँ उसका नौकर उसका इंतज़ार कर रहा था। तरजुमान ने शमादान मँगवाकर एक बड़ा कमरा खोला। खिड़कियों पर परदे थे, लेकिन शमादान की रौशनी से तमाम कमरा जगमगा उठा। दरवाज़े के सामने दीवार पर तस्वीर टँगी थी। मोमिन ख़ामोश खड़ा होकर उसे हैरानी से देखने लगा।

एक आदमी की तस्वीर थी जो इतना ख़ूबसूरत था कि मोमिन ने उस जैसा कभी नहीं देखा था। वह एक पहाड़ी रास्ते पर चढ़ रहा था। उसके

इर्दगिर्द चटानों पर ऊँटकटारे और काँटेदार झाड़ियाँ उगी हुई थीं जिनके बाइस कई-एक जगह से उसके कपड़े फट गए थे। नोकीले पत्थरों से ठोकर लगने से उसके पाँवों से ख़ून भी रिस रहा था। उसकी बग़ल में एक छोटा-सा लेला था। लेले का सर थकावट के बाइस उसके कंधों पर रखा हुआ था, और वह बड़ी एहसानमंदी और मुहब्बत भरी नज़रों से उसकी तरफ़ देख रहा था। तस्वीर के नीचे सुनहरी हरफ़ों में यह लिखा था :

"वह भेड़ के बच्चों को अपने बाज़ुओं में महफ़ूज़ रखकर सीने के साथ लगाए फिरेगा।"

मोमिन ने पूछा, "क्या यह लेला गुम हो गया था?"

तरजुमान ने जवाब दिया, "हाँ गुम हो गया था बल्कि मरने के क़रीब था। देखते नहीं वह कितना मुरदा-सा दिखाई देता है। और देखो उसका ऊन भी नुचा हुआ और मैला है। लेकिन अच्छे चरवाहे ने उसकी फ़रियाद सुनी और जब तक उसे ढूँड नहीं लिया, दम नहीं लिया। फिर वह उसे अपने बाज़ुओं में उठाकर घर ले गया।

मोमिन ने कहा, "यह बड़ा कठिन रास्ता लग रहा है। पत्थरों से उसके पाँव भी ज़ख़मी हो गए हैं।"

"रास्ता सचमुच बड़ा ख़तरनाक था, लेकिन उसने इसकी परवा न की, क्योंकि उसे अपने नन्हे लेले से मुहब्बत थी। मैं ने यह तस्वीर तुम्हें सबसे पहले इसलिए दिखाई है, क्योंकि यह चरवाहा हमारे बादशाह का अपना

बेटा है। और जिस तरह चरवाहे को अपने गल्ले से मुहब्बत होती है उसी तरह उसे उन सबसे मुहब्बत है जो शाही शहर की तरफ़ सफ़र करते हैं। मुसाफ़िर लेलों की मानिंद हैं। जब भी तुम पर उदासी छाए या दहशत आए तो उसी का ख़याल करना और याद रखना कि वह तुम्हारा निगहबान है।"

तरजुमान की तरफ़ नज़र उठाकर मोमिन ने कहा, "मैं आसमानी शहर जानेवाला मुसाफ़िर हूँ।"

"अच्छे चरवाहे के लेले, अब मैं तुम्हें कुछ और दिखाता हूँ।"

हवस, सब्र और बहादुर सिपाही

मोमिन का दिल अच्छे चरवाहे की तस्वीर को छोड़ना नहीं चाहता था। वह सोचने लगा, “मैं उसे कभी भूल नहीं पाऊँगा। अच्छा चरवाहा तो मेरी अम्मी से भी ख़ूबसूरत है।”

तरजुमान उसे सीढ़ियों के ऊपर एक ख़ूबसूरत कमरे में ले गया। यह कमरा बच्चों की तरबियतगाह मालूम होती थी। इसमें दो लड़के अपनी अपनी कुरसी पर बैठे थे। उनमें से एक ख़ामोश-सा लेकिन ख़ुश दिखाई दे रहा था जबकि दूसरा शोर मचा रहा था। ऐसा मालूम होता था कि वह बड़ा ग़ुसीला और बेचैन है।

तरजुमान ने कहा, “यह दोनों लड़के यहाँ कुछ अरसे के लिए ठहरे हुए हैं। इनमें से जो चिल्ला रहा है उसका नाम हवस है। उसके भाई का नाम सब्र है।”

मोमिन ने पूछा, “लेकिन यह हवस क्यों चिल्ला रहा है?”

तरजुमान ने जवाब दिया, “यह लड़का अहमक़ है। आज बादशाह की तरफ़ से चंद-एक उम्दा तोह्फ़े आ रहे हैं जिनमें से हर एक लड़के को उसका हिस्सा मिलेगा। सब्र तो इंतज़ार करने के लिए तैयार है लेकिन

हवस ज़िद कर रहा है कि उसे अभी चाहिए। वह वक़्त से पहले ही उनसे लुत्फ़ उठाना चाहता है।"

उसी वक़्त दरवाज़ा खुला और एक आदमी किताबें, खिलौने और दीगर प्यारी प्यारी चीज़ें उठाए हुए दाख़िल हुआ। उसने उन्हें हवस के सामने मेज़ पर रख दिया। हवस ख़ुश हुआ और चिल्लाना बंद करके यह चीज़ें देखने लगा। उनमें सोने के चमकदार सिक्कों से भरी हुई थैलियाँ भी थीं। हवस उन्हें छीनकर सब्र पर हँसने लगा। सब्र बेचारे के लिए कोई भी चीज़ न रही।

तरजुमान ने कहा, "इस वक़्त तो हवस बड़ा ख़ुश है, लेकिन चंद दिनों के अंदर अंदर उसकी तमाम पूँजी ख़त्म हो जाएगी। उसने जो उम्दा चीज़ें उठाई हैं वह जल्द ही टूट-फूट जाएँगी जबकि तोह्फ़ा भेजनेवाले बादशाह में उसका कोई हिस्सा न होगा। उस वक़्त उस की यह ख़ाहिश होगी कि काश मैंने सब्र की तरह इंतज़ार किया होता!"

मोमिन ने पूछा,"क्या बादशाह के तोह्फ़े इन चीज़ों से भी उम्दा होते हैं?"

"कहीं उम्दा। वह ऐसे ख़ज़ाने हैं जो कभी ख़राब नहीं होते। सब्र तो बड़ा अक़्लमंद है कि वह उनका इंतज़ार कर रहा है।"

मोमिन ने कहा, "हवस तो अभी हँस रहा है। लेकिन मेरे ख़याल में सब्र ही आख़िर में सबसे उम्दा इनाम पाएगा।"

तरजुमान ने जवाब दिया, "यक़ीनन। याद रखो मैं जो कुछ तुम्हें दिखा रहा हूँ इससे मैं तुम्हें तालीम दे रहा हूँ। यहाँ यह सीखना है कि सिर्फ़ वह चीज़ें अच्छी होती हैं जो बादशाह ख़ुद भेजता है। दूसरी चीज़ों का लालच करना फ़ज़ूल बल्कि नुक़सानदेह है। सिर्फ़ बादशाह ही समझता है कि हममें से हर एक के लिए कौन-सी चीज़ अच्छी है। वह हमेशा हमें वही चीज़ अता करता है जिससे हमें हक़ीक़ी ख़ुशी हो। अगर हमारा रवैया हवस का-सा हो और हम अपनी मनमानी करें तो मायूस ही रहेंगे।"

अब तरजुमान मोमिन को मकान से बाहर ले गया और अपने बाग़ में से होता हुआ एक ऐसे मक़ाम पर पहुँचा जहाँ पर उन्हें एक ख़ूबसूरत महल दिखाई देता था। यह महल क़रीब ही था, और उसकी छत पर बेशुमार लोग टहल रहे थे। उनका लिबास सोने की मानिंद चमक रहा था।

मोमिन ने पूछा, "क्या यह बादशाह का महल है?"

"है तो। लेकिन हर एक के लिए इसमें दाख़िल होना आसान नहीं।"

मोमिन को महल के बाहर बड़ा हुजूम नज़र आया। लगता था कि हर एक महल में दाख़िल होना चाहता था, लेकिन डर के मारे वह झिझक रहे थे। तब उसने देखा कि कुछ लोग दरवाज़े के गिर्द हथियार लिए खड़े हैं। वह बड़े ज़ालिम लग रहे थे, इसलिए बाहरवालों में इतना हौसला नहीं था कि उनके पास से गुज़रें। दरवाज़े से दूर एक आदमी मेज़ पर बैठा हुआ था। उसके सामने एक किताब थी जिसमें वह उन लोगों के नाम दर्ज कर रहा था जो महल में दाख़िल होने की कोशिश कर रहे थे।

यह देखकर मोमिन का जी चाहता था कि कोई आदमी जुर्रत करके महल में दाख़िल हो जाए। "बादशाह इन शरीर सिपाहियों को यहाँ से भगा क्यों नहीं देता? अगर वह इन्हें यहाँ से भगा दे तो तमाम लोग महल में दाख़िल हो सकेंगे।"

तरजुमान ने जवाब दिया, "वह तो यह आसानी से कर सकता है, लेकिन वह यह देखना चाहता है कि कितने लोगों को महल में दाख़िल होने की सचमुच ख़ाहिश है। जो लोग बादशाह से दिल से मुहब्बत करते हैं, उन्हें सिपाहियों से कोई डर नहीं होता। चलो कुछ देर हम इंतज़ार करते हैं। देखना कोई न कोई तो ज़रूर दाख़िल हो जाएगा।"

दोनों घास पर बैठ गए, और मोमिन लोगों को देखने लगा। तब हुजूम में से एक आदमी निकलकर दरवाज़े के पास की मेज़ पर पहुँचा। उसका नाम किताब में दर्ज हुआ। फिर उसने ज़िरा बाँधी और तलवार निकालकर सिपाहियों पर हमला किया। वह काफ़ी देर तक उनसे लड़ता रहा, और मोमिन को लगा कि मारा ही जाएगा। लेकिन काफ़ी ज़ख़मी होने के बावुजूद भी वह आख़िरकार महल में दाख़िल हुआ। तब छत के तमाम लोगों ने गाना शुरू कर दिया :

"अंदर आओ। अंदर आओ
अबदी जलाल तुम हासिल करोगे।"

मोमिन मुसकराया, “तो इसका मतलब यह है कि हमें डरना नहीं चाहिए, क्योंकि बादशाह हमारी मदद करेगा और हिफ़ाज़त से अपने शहर में ले जाएगा।”

तरजुमान कहने लगा, “हाँ। मुझे यक़ीन था कि तुम ख़ुद ही समझ जाओगे। आज तो तुमने बहुत कुछ देख लिया है। अभी हमें तुम्हारे लिए बिस्तर का बंदोबस्त करना है ताकि आराम कर सको। कल अपने सफ़र पर रवाना हो जाना।”

नजात पहाड़ी

उस रात मोमिन बड़े आराम की नींद सोया। सुबह उसने अपने मेहरबान दोस्त को अलविदा कहा।

तरजुमान के मकान की दूसरी तरफ़ शाही शहर पहुँचानेवाला रास्ता तलाश करना आसान था, क्योंकि सड़क के दोनों तरफ़ ऊँची दीवारें बनी हुईं थीं। मोमिन ने सोचा, "अब से मेरा सफ़र इतना मुश्किल नहीं रहेगा।"

लेकिन तरजुमान बोला, "आसमानी शहर के तमाम रास्ते पर दीवार नहीं होती। जो भी हो, सीधे रास्ते पर चलते रहना और जब तक तुम ऐसा करते रहोगे, महफ़ूज़ रहोगे।"

तरजुमान की मौजूदगी में मोमिन अपना बोझ भूल चुका था। लेकिन ज्योंही उसने चलना शुरू किया और सूरज की गरमी ज़्यादा होती गई तो उसे फिर बोझ महसूस होने लगा। दिल करता था कि इससे जल्द छुटकारा पाए। वह सोचने लगा, "ख़ैरख़ाह ने कहा था कि सलीब के पास यह बोझ उतर जाएगा। न जाने सलीब यहाँ से कितनी दूर होगी?"

उसी वक़्त वह एक ऐसे मक़ाम पर पहुँचा जहाँ सड़क के किनारे पहाड़ी-सी थी। उस पहाड़ी पर उसे वह चीज़ दिखाई दी जिसका वह बड़ी शिद्दत से ख़ाहिशमंद था, यानी सलीब। जब मोमिन उस तरफ़ जानेवाली

पगडंडी पर चढ़ने लगा तो उसे महसूस हुआ कि जिस रस्सी से बोझ बँधा हुआ है वह टूट रही है। यकायक बोझ उसके कंधों से गिर गया और लुढ़कता हुआ पहाड़ी की तह में जा पहुँचा। जब उसने मुड़कर देखा तो वह नज़रों से ओझल हो चुका था।

पहले उसे यक़ीन ही न आया कि यह ज़ालिम बोझ जाता रहा है। फिर वह सोचने लगा, "कहीं ऐसा तो नहीं कि मैं कोई ख़ाब देख रहा हूँ।" वह कुछ देर तक यों ही झिझकता रहा। उसने अपनी आँखें मलें, लेकिन बोझ वापस न आया। परिंदे चहचहा रहे थे और सूरज आबो-ताब से सलीब पर चमक रहा था। आख़िर में उसे यक़ीन हुआ कि मैं सोया हुआ नहीं हूँ बल्कि बादशाह ने हमेशा के लिए मेरे कंधों से बोझ को उतार दिया है।

मोमिन ख़ुशी से ललकारा, “अब तो मैं जितना भी चाहूँ तेज़ चल सकता हूँ।” वह शुक्रगुज़ारी से भरे हुए दिल के साथ सलीब पर नज़रें जमाए हुए रुका रहा।

मोमिन अपनी किताब में पढ़ चुका था कि एक मरतबा बादशाह का अपना बेटा मोमिन के वतन में आया था। गो वह हर एक से हमदर्दी और नेकी के साथ पेश आया, फिर भी अकसर लोगों को उससे नफ़रत थी। आख़िरकार उन्होंने उसे पकड़कर सलीब पर चढ़ाया और बेदर्दी से मार डाला। बाद में मालूम हुआ कि यह सब कुछ बादशाह की मरज़ी थी। वह जानता था कि लोग अपनी ही ताक़त से अपने गुनाहों से आज़ाद नहीं हो सकते और इसलिए सज़ाए-मौत के लायक़ हैं। फिर भी बादशाह की इनसान के लिए मुहब्बत इतनी गहरी थी कि उसने एक निहायत मुश्किल क़दम उठाया। उसने अपने बेटे को उनके पास भेज दिया। शहज़ादे से एक भी गुनाह नहीं हुआ था, लेकिन अब उसने ख़ुद ही वह सज़ा बरदाश्त की जिसके लायक़ इनसान था यानी सज़ाए-मौत। यों उसने लोगों को आसमानी शहर में दाख़िल होने के क़ाबिल बना दिया। बाद में वह मोजिज़ाना तौर पर जी उठा। अब आसमानी शहर की तरफ़ जानेवालों का रास्ता लाज़िमी सलीब से होकर जाता था, क्योंकि सिर्फ़ उसी से गुनाहों का बोझ उतर सकता था, सिर्फ़ उसी के वसीले से मुसाफ़िर आसमानी शहर के लिए पाक-साफ़ हो जाता था।

सलीब के क़रीब खड़े होकर मोमिन ने सोचा कि बादशाह का बेटा कितना नेक है। अब मुझे समझ आई है कि मुबश्शिर और अजनबी मुझसे इतनी मुहब्बत क्यों करते हैं, कि वह उसका ज़िक्र करने से कभी उकताते नहीं।

वह सोचने लगा, "बेशक जब वह मेरी तरह आसमानी शहर के सफ़र पर थे तो उनके कंधों पर भी बोझ था। इसी तरह जब वह सलीब के क़रीब आए तो उनका बोझ भी उतर गया होगा। लेकिन काश लोगों ने बादशाह के बेटे के साथ इतना ज़ुल्म न किया होता!" उसने सलीब की तरफ़ नज़र डाली तो उसकी आँखों से आँसू टपकने लगे।

उसी वक़्त उसे पीछे से आवाज़ सुनाई दी, "तुम पर सलामती हो।" मोमिन ने जल्दी से मुड़कर देखा तो उसे तीन लोग पास ही खड़े नज़र आए। उन्होंने बड़े चमकीले लिबास पहन रखे थे। जब मोमिन ने उनकी तरफ़ देखा तो उसकी आँखें कुछ उस तरह चुँधिया गईं जैसे कि सूरज की तरफ़ देख रहा हो।

उसने सोचा, "यह लोग इतने नूरानी और ख़ूबसूरत हैं, यह ज़रूर आसमानी शहर से आए होंगे।"

उनमें से एक कहने लगा, "मोमिन, तुमने बादशाह को बहुत बार नाराज़ किया है। लेकिन मैं तुम्हें यह बताने आया हूँ कि उसने तुम्हें बिलकुल माफ़ कर दिया है। जो शरारतें तुमने की हैं वह कभी याद नहीं की जाएँगी।"

दूसरे ने उसका हाथ पकड़कर कहा, “तुम्हारे जिस्म के सारे कपड़े फटे हुए और मैले-कुचैले हैं। बादशाह चाहता है कि मुसाफ़िरों के लिबास साफ़-सुथरे हों, इसलिए मैं तुम्हारे लिए एक नई पोशाक लाया हूँ।” इससे पहले कि मोमिन कोई जवाब देता, उसके पुराने कपड़े उतार दिए गए और वह सफ़ेद लिबास पहने हुए खड़ा था।

फिर तीसरे ने उसके माथे पर बादशाह का निशान लगाकर उसे एक परवाना थमा दिया। उस ने हिदायत दी, “तुम सफ़र करते हुए इसे पढ़ते जाओ और पूरी तरह महफ़ूज़ रखो, क्योंकि आसमानी शहर के फाटक पर तुम्हें यह परवाना दिखाना पड़ेगा।”

इसके बाद तीनों नूरानी हस्तियाँ चली गईं, जबकि मोमिन ख़ुशी मनाता रहा कि बादशाह ने मुझ पर इतनी मेहरबानी फ़रमाई है।

सोए हुए लड़के

मोमिन चलते चलते कितना ख़ुश था। वह दिल में कहने लगा, “मेरा बोझ भी उतर गया, और बादशाह ने मुझे यह ख़ूबसूरत पोशाक भी अता की। अगर मुझे मालूम होता कि इस सफ़र में मेरा बोझ उतर जाएगा तो मैंने कब का सफ़र शुरू कर दिया होता।”

फिर उसे बी मोमिना याद आई, “कितने अफ़सोस की बात है कि वह मेरे साथ नहीं आई।” लेकिन उसे पता था कि उसके लिए इतने लंबे सफ़र पर जाना बहुत मुश्किल है, क्योंकि छोटी बहन के अलावा उसके तीन भाई भी थे, और उसे उन सबकी देख-भाल करनी पड़ती थी।

वह सोचने लगा, “हम बारी बारी छोटी बच्ची को उठा लेते, लेकिन फिर भी उसके भाई थक जाते। शहर पहुँचकर मैं बादशाह से इल्तिजा करूँगा कि वह किसी को बच्चों की मदद करने उसके पास भेज दे ताकि वह भी यहाँ आने की बरकत पाए।”

फिर वह ख़याल करने लगा, “क्या मेरी अम्मी ने बादशाह को बताया कि वह बरबादनगर में एक लड़का छोड़ आई है? और हाँ, क्या अम्मी को इल्म है कि मेरा बोझ उतर चुका है और कि बादशाह ने उसके मुझे इतने ख़ूबसूरत तोह्फ़े भेजे हैं?”

जो लिबास नूरानी आदमी ने उसे पहनाया था उसे देखकर वह कहने लगा, "यह कितना ख़ूबसूरत लिबास है! यह तो बर्फ़ की मानिंद सफ़ेद है, वह मेरे पुराने कपड़ों से कितना फ़रक़ है! यह न तो गरम है और न ही बोझल।"

वह इन बातों पर ध्यान ही दे रहा था कि उसके ऐन सामने तीन लड़के सड़क के किनारे घास पर लेटे दिखाई दिए। जब उसने ग़ौर से उन पर नज़र डाली तो मालूम हुआ कि वह गहरी नींद में सोए हुए हैं। साथ साथ उनके पाँव लोहे की बेड़ियों में जकड़े हुए हैं।

उस दिन बड़ी गरमी थी, और यह नादान लड़के रास्ते को छोड़कर कुछ देर आराम करने के लिए लेट गए थे। लेकिन शरीर सरदार के नौकर हर वक़्त बेपरवा मुसाफ़िरों की ताक में रहते हैं। जब उन्होंने देखा कि यह लड़के सोए हुए हैं तो उन्होंने जल्दी से उनके पाँव बाँध दिए ताकि जब तक बादशाह किसी को मदद के लिए न भेजे वह आसमानी शहर की तरफ़ एक क़दम भी न बढ़ा सकें।

मोमिन इन लोगों को अपने हाल पर छोड़ना नहीं चाहता था, इसलिए उसने उनके क़रीब जाकर आवाज़ दी, "उठ बैठो, यह जगह सोने के लिए मुनासिब नहीं है! क्या तुम्हें मालूम नहीं कि किसी ने तुम्हारे पाँव बाँध दिए हैं?"

उनमें सादालौह नामी शख़्स ने आँखें खोले बग़ैर जवाब दिया, “क्या बात है? मुझे तो कोई भी ख़तरा दिखाई नहीं देता! अरे एक मिनट तो हमें आराम करने दो।”

लेकिन मोमिन बोला, “यक़ीन करो, तुम्हें बड़ा ख़तरा लाहिक़ है। जल्दी करो! मैं इन बेड़ियों को खोलने में तुम्हारी मदद करूँगा।”

सादालौह के पास ही जो लड़का लेटा हुआ था उसका नाम सुस्त था। वह उठ बैठा और अपनी आँखें मलने लगा। उसने मोमिन की तरफ़ देखा लेकिन उसकी नसीहत पर तवज्जुह न दी। कहने लगा, “तुम हमें क्यों मुज़तरिब करते हो? अब चले जाओ। मैं तो आराम करने के बाद ही चला जाऊँगा।”

तीसरा लड़का जिसका नाम घमंडी था बोल उठा, “हम तो अपनी मरज़ी से चलते हैं। अगर हम किसी ख़तरनाक जगह सो रहे हैं तो यह हमारी मरज़ी है। तुम्हें इससे क्या? भई, तुम अपनी राह लो और दूसरों के साथ मत उलझो।”

तब वह दोनों सादालौह के पहलू में लेट गए। चंद ही लमहों में सबके सब दुबारा गहरी नींद सो गए थे।

ऐसे सुस्त लोगों की मदद करना बेकार था इसलिए मोमिन आगे बढ़ा। उसे अफ़सोस था कि उन्होंने उसकी नसीहत न मानी और न ही इस बात का यक़ीन किया कि वह शरीर सरदार के क़ब्ज़े में हैं।

रस्मपरस्त और मुनाफ़िक़

जब मोमिन कुछ आगे बढ़ा तो उसने मुड़कर पीछे उस जगह की तरफ़ देखा जहाँ तीनों लड़के बेख़बर सोए हुए थे, कि शायद वह उठ बैठे हों और लोहे की बेड़ियों से छुटकारा पाने के ख़ाहाँ हों। लेकिन उसने उनका नामो-निशान तक न देखा। अभी वह आगे बढ़नेवाला ही था कि उसे अपने बाईं तरफ़ शोर सुनाई देने लगा। अचानक दो लड़के दीवार को फाँदते हुए नज़र आए। उनके नाम रस्मपरस्त और मुनाफ़िक़ थे।

मोमिन ने उनसे पूछा, “तुम लोग कहाँ से आए हो?”

रस्मपरस्त और मुनाफ़िक़ ने जवाब दिया, “हम मुल्के-तकब्बुर के रहनेवाले हैं। लेकिन अब बादशाह की मुलाक़ात के लिए आसमानी शहर को जा रहे हैं।”

मोमिन ने हैरत से पूछा, “लेकिन क्या तुम्हें मालूम नहीं कि तंग दरवाज़े से होकर आना पड़ता है?”

लड़के चिल्ला उठे, “अरे वह तो हमारे मुल्क से बहुत ही दूर है। हम तो खेतों मे से छोटा रास्ता निकालकर दीवार फाँदकर आए हैं।”

मोमिन कहने लगा, “मेरे ख़याल में तो तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। यह तरीक़ा बादशाह को पसंद नहीं होगा।”

लड़कों ने जवाब दिया, “तुम इसकी फ़िकर न करो। हमारे मुल्क के रहनेवाले तंग दरवाज़े से होकर नहीं जाते। बड़ी बात तो यह है कि हम रास्ते पर पहुँचे हैं। देखो! तुम तंग दरवाज़े से आए हो और हम दीवार फाँदकर, लेकिन इस वक़्त दोनों एक ही मक़ाम पर हैं।”

मोमिन ने एतराज़ किया, “फिर भी मुझे लगता है कि तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था।”

वह हँस पड़े, “कितनी फ़ज़ूल बातें करते हो। तुम्हारी तरह हम भी तो आसमानी शहर जा रहे हैं। फ़रक़ सिर्फ़ इतना है कि तुम्हारे कपड़े उम्दा हैं और वह भी सिर्फ़ इसलिए कि किसी ने यह देखकर कि तुम्हारे पुराने कपड़े किसी से मिलने के लायक़ नहीं तुम्हें यह कपड़े दिए होंगे।”

लड़कों ने बड़ी बदतमीज़ी से बात की। मोमिन का जी चाहा कि उन्हें उसी अंदाज़ में जवाब दे, लेकिन उसने किताब में पढ़ा था कि बादशाह के ख़ादिमों को हमेशा नरमी से पेश आना चाहिए। इसलिए एक मिनट ख़ामोश रहकर आहिस्ता से बोला, "बात तो सही है। मेरे तमाम कपड़े ख़राब होकर फट चुके थे, इसलिए बादशाह ने यह पोशाक मुझे ख़ुद दी है। यह उसकी बड़ी मेहरबानी है। और मैं इसलिए उसका बड़ा शुक्रगुज़ार हूँ क्योंकि मुझे यक़ीन है कि जब मैं शहर में दाख़िल हो जाऊँगा तो वह ज़रूर मुझे पहचान लेगा। नूरानी आदमी ने मेरे माथे पर बादशाह का निशान लगाया है, और मेरे पास एक परवाना भी है जिसे मैं अपने सफ़र के अंजाम पर दिखाऊँगा। तुम्हारे पास इनमें से कोई भी चीज़ नहीं है, क्योंकि तुम लोग तंग दरवाज़े से नहीं आए।"

लेकिन लड़कों ने सिर्फ़ हँस दिया, इसलिए मोमिन उन्हें पीछे छोड़कर ख़ुद ही आगे बढ़ गया।

अब वह एक पहाड़ के दामन में पहुँचा जिसका नाम कोहे-मुश्किल था। शाही रास्ता पहाड़ के ऊपर से जाता था। पहाड़ की चढ़ाई बहुत थी, लेकिन मोमिन को यक़ीन था कि अब मुनासिब नहीं कि रास्ते से हट जाऊँ। रास्ते के पास ही ठंडे पानी का चश्मा उबल रहा था। उसे प्यास लगी थी इसलिए उसने वहाँ का ठंडा पानी पिया, फिर उस पथरीले रास्ते पर चढ़ने लगा।

रस्मपरस्त और मुनाफ़िक़, मोमिन से कुछ पीछे ही रह गए थे। जब वह पहाड़ पर पहुँचे तो उन्हें दो रास्ते दिखाई दिए जो सीधी सड़क से निकल रहे थे। एक रास्ता पहाड़ के दामन के साथ साथ दाएँ हाथ जाता था और दूसरा बाएँ हाथ। वह बोले, "अरे! इस ढलान पर चढ़ाई से क्या हासिल। यह दोनों रास्ते आसान और हमवार हैं। बेशक यह पहाड़ का चक्कर लगाकर दूसरी तरफ़ फिर शाही रास्ते पर मिलते होंगे।"

रस्मपरस्त कहने लगा, "भाई! मैं तो उस रास्ते पर जाऊँगा" जबकि मुनाफ़िक़ बोला, "मैं तो इस रास्ते पर चलूँगा।"

यों दोनों लड़के इस ख़याल से कि जल्द ही फिर एक दूसरे से जा मिलेंगे, एक दूसरे से जुदा हो गए।

लेकिन अगर वह तंग दरवाज़े से दाख़िल हो गए होते तो उन्हें भी मोमिन की तरह पता चलता कि यह सीधा रास्ता ही दुरुस्त है। लेकिन अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि दोनों इसलिए गुम हो गए कि उन्होंने न तो बादशाह की फ़रमाँबरदारी की थी, न ही सफ़र को सही तरीक़े से शुरू किया था।

रस्मपरस्त चलते चलते ख़तरे के रास्ते पर पड़ गया और जल्द ही एक बड़े जंगल में जा निकला। वह कई दिन-रात तक वहाँ भटकता रहा। लेकिन वहाँ से बाहर निकलने का उसे कोई रास्ता न मिला। आख़िरकार वह भूक और सर्दी के मारे वहीं पर तड़प तड़पकर मर गया।

बरबादी का रास्ता, जिसे मुनाफ़िक़ ने इख़्तियार किया था, रस्मपरस्त के रास्ते से कुछ बेहतर न था। यह रास्ता तारीक पहाड़ों के बीचों-बीच होकर गुज़रता था। उन टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर चढ़ते और उतरते हुए लड़के का पाँव फिसल गया, और वह तेज़ और नोकीली चटानों से सख़्त ज़ख़मी हो गया। वह भी बड़ी इबरतनाक मौत मर गया।

कोहे-मुश्किल

मोमिन को पहाड़ के ऊपर का रास्ता बड़ा सख़्त लगा। रास्ता नोकीले पत्थरों और ख़ारदार चटानों से भरा पड़ा था जिनकी वजह से उसके पाँव ज़ख़मी हो गए। उस पर चढ़ते चढ़ते चढ़ाई बढ़ती गई, यहाँ तक कि उसे हाथों और घुटनों के बल रेंगना पड़ा। अब तो धूप भी तेज़ हुई जा रही थी क्योंकि दोपहर हो चुकी थी। उसे गरमी सताने लगी, और वह थकन से चूर हुआ। वह सोचने लगा, “अगर इस पहाड़ पर मुझे कल चढ़ना पड़ता तो मैं क्या करता। ऐसे ख़तरनाक रास्ते पर मैं अपना बोझ उठाकर कभी भी नहीं जा सकता था।”

जब वह आधे रास्ते पर पहुँच गया तो चलना आसान होने लगा। अब तो पत्थर उस क़दर नोकीले नहीं थे, और वह पाँवों पर चलने के क़ाबिल हो गया। फिर भी चढ़ाई सख़्त थी। कुछ देर बाद वह सायदार पेड़ों की छाऊँ में पहुँच गया। यह देखकर लड़का बड़ा ख़ुश हुआ। यह छाऊँ बादशाह के हुक्म से बनाई गई थी ताकि पहाड़ी रास्ते पर मुसाफ़िरों को सुस्ताने की जगह मिल सके।

मोमिन वहाँ कुछ देर तक बैठ गया। यह जगह ठंडी और पुरसुकून थी। इतने में उसे ख़याल आया कि अब मेरे पास इतनी फ़ुरसत है कि मैं उस परवाने को पढ़ सकूँ जो मुझे मिल गया है। वह परवाने को निकालकर उसे पढ़ने लगा। फिर बजाए इस के कि वह पहाड़ की चोटी पर जाने की जल्दी करता वह इतमीनान से बैठकर अपनी पोशाक का जायज़ा लेने लगा और इधर-उधर की बातें सोचने लगा। आख़िर उसकी आँखें बंद हो गईं और वह सो गया।

पिछले पहर देर से उसकी आँख खुल गई। जब उसने आसमान की तरफ़ निगाह की तो मालूम हुआ कि सूरज ढलने लगा है। वह फ़ौरन उठा और तेज़ी से चलने लगा।

इससे पहले कि वह पहाड़ की चोटी पर पहुँचता, उसकी मुलाक़ात दो लड़कों से हुई जो बड़ी तेज़ी से वापस दौड़ रहे थे। उनके चेहरों का रंग ख़ौफ़ से उड़ गया था, और उनके जिस्म काँप रहे थे। लेकिन मोमिन को देखते ही वह उससे बात करने के लिए रुक गए।

मोमिन पूछने लगा, "क्या बात है? तुम ग़लत सिम्त में क्यों दौड़ रहे हो?"

बड़े लड़के का नाम कमहिम्मत था। उसने चिल्लाकर कहा, "हम तो शाही शहर को जा रहे थे। लेकिन जितना भी हम आगे बढ़ते गए, उसी क़दर हमें ख़तरा पेश आया, इसलिए अब हम वापस घर जा रहे हैं।"

दूसरा लड़का, जिसका नाम बदगुमान था बोला, "हाँ, रास्ते में हमें दो शेर पड़े दिखाई दिए। हमें पता न चला कि वह सोए हुए हैं कि जाग रहे हैं, लेकिन यह पक्की बात है कि अगर हम वहाँ से गुज़रने की कोशिश करते तो वह हमारी बोटी बोटी कर डालते।"

यह सुनकर मोमिन भी ख़ौफ़ज़दा हुआ और कहने लगा, "तो मैं क्या करूँ?"

कमहिम्मत बोला, "हमारे साथ वापस चलो, और क्या! इन वहशी दरिंदों के पास फटकना तो बेवुक़ूफी है।"

मोमिन ने जवाब दिया, "अगर मैं वापस चला जाऊँ तो बादशाह से कैसे मुलाक़ात करूँगा?"

बदगुमान बोला, "लेकिन अगर तुम इस रास्ते पर चले भी गए तब भी मुलाक़ात नहीं कर सकोगे, क्योंकि शेर तुम्हें चीर-फाड़ डालेंगे।"

लेकिन मोमिन को याद आया कि मुबश्शिर, ख़ैरख़ाह और तरजुमान ने उसे इन तमाम बातों के बारे में बता रखा था कि जब भी तुम्हें डर लगे और तकलीफ़ हो तो बादशाह ज़रूर तुम्हारी मदद करेगा और

तुम्हारा निगहबान होगा। वह कहने लगा, "मैं तो वापस नहीं जाऊँगा। क्या पता, हो सकता है कि शेर न जागें। आओ हम सब इकट्ठे चलें।"

कमहिम्मत और बदगुमान दोनों चिल्ला उठे, "अरे नहीं! हममें हिम्मत नहीं। हम तो घर पहुँचकर ही दम लेंगे।"

यह कहकर वह पहाड़ से नीचे उतरे और मोमिन अपने रास्ते पर तनहा रह गया। उस पर भी ख़ौफ़ तारी हुआ, और वह सोचने लगा, "अपना परवाना तो देखूँ कि उसमें इन शेरों के बारे में क्या लिखा है।" लेकिन जब उसने अपने कोट को टटोला तो परवाना वहाँ नहीं था। वह सख़्त घबरा गया। उसे याद था कि नूरानी आदमी ने उससे कहा था कि "परवाने को एहतियात से रखना, क्योंकि यह तुम्हें आसमानी शहर के फाटक पर दिखाना पड़ेगा।"

मोमिन चिल्ला उठा,"उसके बग़ैर तो मैं नहीं जा सकता। हाय! मैं क्या करूँ?" उसकी आँखों से आँसू फूटकर बहने लगे।

ख़ूबसूरत महल

परवाना गुम हो जाने पर मोमिन सख़्त परेशान हुआ। अपनी मुसीबत में उसे शेरों का ख़याल तक न आया। वह सिर्फ़ अपनी ला-परवाई को कोस रहा था जिसके बाइस उसे बादशाह का क़ीमती तोह्फ़ा गुम हो गया था। अचानक उसे वह जगह याद आई जहाँ उसने पिछले पहर आराम किया था। “क्या परवाना वहीं कहीं गिर पड़ा हो? जब मैं जल्दी जल्दी वहाँ से निकला तो हो सकता है कि वह ग़लती से वहाँ रह गया हो। हाय! मुझसे कितनी बेवुक़ूफी हो गई। मुझे वहाँ सिर्फ़ आराम करना चाहिए था, लेकिन मैंने तो वहाँ बेख़बरी में बहुत-सारा वक़्त ज़ाया कर दिया, और अब तो पहाड़ की चोटी पर पहुँचते पहुँचते रात हो जाएगी।”

वह मुड़कर आहिस्ता आहिस्ता वापस चलने लगा। वह रास्ता-भर देखता रहा कि कहीं रास्ते में ही न गिर गया हो। आख़िर वह उस जगह पहुँच गया जहाँ उसने आराम किया था। क्या देखता है कि जिस बेंच पर उसने आराम किया था उसी के नीचे परवाना पड़ा हुआ है। उसने उसे जोश और वलवले के साथ उठाकर बादशाह का शुक्र अदा किया कि उसने उसे दुबारा हासिल करने का मौक़ा दिया।

लेकिन परवाने को तलाश करने में मोमिन को बहुत-सारा वक़्त ज़ाया हो गया था। अब उसने पहाड़ पर चढ़ने में बड़ी फुरती से काम लिया। फिर भी इससे पहले कि वह चोटी पर पहुँचता सूरज ग़ुरूब हो चुका था। वह अपने आपको कोसता रहा, "यह मेरा अपना क़ुसूर है! अगर मैं सुस्त न होता तो मेरा परवाना कभी भी गुम न होता और मैं रात होने से पहले पहले किसी ऐसी जगह पहुँचता जहाँ आराम कर सकता।"

फिर उसे शेर याद आए। वह जानता था कि यह वहशी दरिंदे रात को शिकार की तलाश में घूमते रहते हैं। जितनी रौशनी कम हो जाती उतनी उसका डर बढ़ता जाता था। ऐन उसी वक़्त उसे सामने कुछ फ़ासले पर एक बड़ी इमारत नज़र आई। मोमिन लपककर उसकी तरफ़ चलने लगा तो मालूम हुआ कि एक शानदार महल है। शाही रास्ते पर चलते हुए वह उसके फाटक तक पहुँच गया। वहीं पर चौकीदार का छोटा-सा कमरा था। वह जल्दी जल्दी उसके पास पहुँचा, इस उम्मीद में कि वहीं रात बसर करने की इजाज़त मिल जाएगी।

अब तो रास्ता भी तंग हो चला था। जब मोमिन महल के फाटक के नज़दीक पहुँचा तो उसे वह दो शेर जिनसे बदगुमान और कमहिम्मत डर गए थे सड़क के दोनों तरफ़ पड़े दिखाई दिए। शेर तो ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे, लेकिन रात इतनी अंधेरी थी कि मोमिन को ज़ंजीर नज़र न आई। उसने सोचा, "अब मैं क्या करूँ? शेरों के दरमियान थोड़ी ही जगह बाक़ी है। अगर मैं उनके बीच में से गुज़र जाऊँ तो वह मुझ पर टूट पड़ेंगे।"

चौकीदार का नाम चौकस था, और उसे मालूम था कि आसमानी शहर के मुसाफ़िर उन शेरों से कितना डरते हैं। इसलिए जब भी कोई नज़दीक आता तो वह अपने कमरे के दरवाज़े पर आ जाता। मोमिन को देखकर उसने आवाज़ देकर कहा, "डरो मत। दोनों शेर बँधे हुए हैं। रास्ते के ऐन दरमियान हो जाओ। तुम्हें इनसे कोई तकलीफ़ नहीं पहुँचेगी।"

तब मोमिन काँपता और डरता हुआ एहतियात से रास्ते के दरमियान रहा। जब वह उनके दरमियान से गुज़रने लगा तो यह हैबतनाक दरिंदे गरजने तो लगे, लेकिन बग़ैर किसी क़िस्म की हरकत किए वह पड़े रहे, यहाँ तक कि उन्होंने अपने बड़े बड़े पंजे फैलाकर उसे छूने की कोशिश भी न की। शेरों के बीच में से गुज़रकर मोमिन ने ख़ुशी से ताली बजाई और दौड़कर मेहरबान चौकीदार के पास जा पहुँचा जो फाटक पर खड़ा था।

उसने पूछा, "यह कौन-सा महल है?"

चौकस ने जवाब दिया, "इसे ख़ूबसूरत महल कहते हैं, और यह बादशाह की मिलकियत है। इसे उसने आसमानी शहर जानेवाले मुसाफ़िरों की ख़ातिर बनाया है। क्या तुम भी आसमानी शहर को जा रहे हो?"

मोमिन ने जवाब दिया, "हाँ! कल रात मैं तरजुमान के मकान पर सोया था। क्या मैं यहाँ सुबह तक ठहर सकता हूँ?"

चौकीदार ने पूछा, "तो तुम इतनी देर से सफ़र क्यों कर रहे हो?"

तब मोमिन ने उसे अपना माजरा सुनाया कि पिछले पहर मुझ पर सुस्ती तारी हुई, और नतीजे में मेरा परवाना गुम हो गया, इसी लिए मुझे उसकी तलाश में वापस लौट जाना पड़ा।

चौकस कहने लगा, “अच्छा! मैं घर की मालिका को बुलाता हूँ, और अगर तुम सचमुच बादशाह के मुसाफ़िर हो तो वह तुम्हारी ख़ातिर-तवाज़ो करेगी।”

दोनों महल के दरवाज़े पर पहुँचे, और चौकीदार ने घंटी बजाई।

नए दोस्त

मोमिन चौकस के पास खड़ा होकर ख़ूबसूरत महल की ड्योढ़ी में इंतज़ार करने लगा। तब एक औरत बाहर निकली और उसके साथ बात करने लगी। उसका नाम तमीज़ था। जब मोमिन की नज़र उस पर पड़ी तो उसे लगा कि ऐसा ख़ूबसूरत और प्यारा चेहरा मैंने कभी नहीं देखा है। वह तो हूबहू उसकी अम्मी की तस्वीर की मानिंद लग रही थी।

तमीज़ ने चौकस से पूछा, “तुमने मुझे किस लिए बुलाया?” फिर मोमिन को देखकर उसने उसके कंधे पर बड़ी शफ़क़त और प्यार से हाथ रखा।

चौकस ने मालिका को जवाब दिया, “यह लड़का आसमानी शहर को जा रहा है। अब रात हो चुकी है इसलिए आगे नहीं जा सकता। अगर आप इसे अंदर आने की इजाज़त दें तो यह ख़ुशी से यहाँ ठहरेगा।”

तब तमीज़ ने मोमिन से बहुत-सारे सवाल किए। वह जानना चाहती थी कि वह कौन-से शहर से आया है और उसने अपना वतन क्यों छोड़ा है। उसने यह भी पूछा कि किसने तुम्हें शाही रास्ते के बारे में बताया? तब मोमिन ने उसे सब कुछ कह सुनाया।

आख़िर वह बोली, “तुम्हारा नाम क्या है?”

लड़के ने जवाब दिया, "मोमिन। अगर आप सुबह तक मुझे यहाँ ठहरने दें तो मैं आपका बहुत शुक्रगुज़ार हूँगा।"

उसके परेशान चेहरे को देखकर तमीज़ मुसकराई और बड़े प्यार से बोली, "बेशक, लेकिन ज़रा ठहरो! मैं पहले अपनी लड़कियों को बुलाकर लाती हूँ।"

वह वापस घर के अंदर चली गई और अपनी तीनों लड़कियों को लेकर आ गई। उनमें से दीनदारी और दानिश मोमिन से बड़ी थीं, जबकि सबसे छोटी लड़की मुहब्बत उसकी हमउम्र थी।

तमीज़ बोली, "यह आसमानी शहर का छोटा मुसाफ़िर है, क्या इसके लिए महल के अंदर जगह है?"

दानिश ने फ़ौरन जवाब दिया, "क्यों नहीं।" और मुहब्बत ने दौड़कर उसका हाथ बिलकुल उसी तरह पकड़ लिया जिस तरह वतन में बी मोमिना उसका हाथ पकड़ा करती थी।

दीनदारी बोली, "अंदर आ जाओ। हमें तुमसे मिलकर बहुत ख़ुशी हुई है।"

महल के दालान में बहुत-सारे आदमी थे। जब मोमिन अंदर जाने लगा तो उन्होंने बड़ी मुहब्बत से उसकी तरफ़ देखा।

मुहब्बत बोली, "माँ इनकी मेहमान-नवाज़ी करती है जबकि हम छोटे मुसाफ़िरों की ख़िदमत करते हैं।

तमीज़ ने कहा, “खाने का तो अभी वक़्त नहीं हुआ, लेकिन मोमिन बेचारा तो सचमुच थका हुआ होगा। उसे कमरे में ले जाओ ताकि वह थोड़ी देर तक आराम करे।”

तीनों लड़कियाँ उसे एक आरामदेह कमरे के अंदर ले गईं जहाँ पर जलती हुई बत्ती दीवारों पर ख़ुशगवार रौशनी डाल रही थी। दीवारों पर ख़ूबसूरत और हसीन तस्वीरें आवेज़ाँ थीं। मोमिन बैठ गया जबकि दीनदारी और दानिश सिलाई के काम में लग गईं। मुहब्बत चौकी लेकर मोमिन के पास बैठ गई। वह एकनरममिज़ाज नन्ही लड़की थी। उसे बड़ा शौक़ था कि अपनी माँ के मेहमानों की ज़्यादा से ज़्यादा ख़िदमत करे और उनके आराम का ख़ास ख़याल रखे।

दीनदारी ने कहा, “अगर तुम्हें ज़्यादा थकावट न हो तो थोड़ी देर हमारे साथ बातें कर लो। हम चाहती हैं कि तुमसे तुम्हारे सफ़र का हाल मालूम करें। अच्छा ज़रा बताओ तो तुमने अपने घर को क्यों छोड़ा?”

मोमिन ने जवाब दिया, “मैं डर गया था, क्योंकि अजनबी हमारे शहर में आकर हमें बताते थे कि हमारा शहर बरबाद हो जाएगा।”

“और तुम्हें शाही रास्ते पर आने का ख़याल कैसे सूझा?”

“मैंने अपनी किताब में आसमानी शहर के बारे में पढ़ा था, और एक दिन मेरी मुलाक़ात मुबश्शिर से हुई। उसी ने मुझे तंग दरवाज़े का रास्ता बता दिया।”

“क्या तुमने तरजुमान के मकान में भी क़ियाम किया?”

मोमिन ने जवाब दिया, “जी। उसने तो मुझ पर बड़ी मेहरबानी की। वहाँ पर मैंने अच्छे चरवाहे की तस्वीर देखी। मैंने वह सिपाही भी देखा जो जंग करके महल में दाख़िल हुआ। काश मैं कुछ अरसा और वहाँ ठहर सकता!”

“और तुमने आज क्या किया?”

“पहले तो मैं सलीब के पास से गुज़रा जहाँ मेरा बोझ उतर गया। तब एक नूरानी आदमी ने मुझे यह नया सफ़ेद लिबास दिया। दूसरे ने मुझे बादशाह के नाम एक परवाना दिया और तीसरे ने मेरे माथे पर निशान लगा दिया। उसके बाद मुझे रास्ते पर सोए हुए लड़के मिले। मैं उन्हें जगाना चाहता था, लेकिन उन्होंने मेरी एक न सुनी। फिर रस्मपरस्त और मुनाफ़िक़ दीवार फाँदकर रास्ते पर आए। मेरे ख़याल में जब हम पहाड़ पर पहुँच गए तो उन्होंने ग़लत रास्ता इख़्तियार किया, क्योंकि मैंने उन्हें फिर नहीं देखा।”

दीनदारी : “पहाड़ की चढ़ाई बहुत सख़्त है क्या?”

“हाँ! मुझे तो लगा कि मैं कभी भी ऊपर नहीं पहुँचूँगा। जब मैंने शेरों को देखा तो मैं वापस मुड़ने ही वाला था। लेकिन चौकीदार ने मुझे बुलाकर बताया कि वह ज़ंजीरों से बँधे हुए हैं।”

फिर दानिश मुसाफ़िर से सवाल करने लगी, “क्या तुम्हें अपने पुराने घर का ख़याल कभी आया है?”

"एक या दो बार। उस वक़्त मैं बड़ा थका हुआ था। लेकिन मुझे यक़ीन है कि आसमानी शहर हमारे शहर से कहीं ज़्यादा अच्छा है। और मैं समझता हूँ कि वहाँ पहुँचकर मुझे बेहद ख़ुशी मिलेगी।"

"ख़ुशी क्योंकर मिलेगी?"

मोमिन ने जवाब दिया, "क्योंकि वहाँ मेरी मुलाक़ात शहज़ादे से होगी। शरीर लोगों ने कितना बड़ा ज़ुल्म किया कि उसे कील ठोंककर सलीब पर चढ़ा दिया। मुझे तो उससे मुहब्बत है क्योंकि वह हमारी ही ख़ातिर मौत के घाट उतर गया। इसके अलावा मेरी अम्मी बादशाह के पास हैं। जब मैं छोटा बच्चा था तो वह मुझे छोड़कर चली गई थी। लेकिन मैं तो उन्हें पहचान लूँगा, क्योंकि मैंने उनकी तस्वीर देखी है।"

मुहब्बत ने पूछा, "क्या तुम्हारी कोई छोटी बहन भी है?"

"नहीं। लेकिन बी मोमिना मेरे साथ खेला करती थी। वह बड़ी अच्छी है।"

मुहब्बत ने कहा, "लेकिन तुम उसे अपने साथ क्यों नहीं लाए? अगर साथ लाते तो कम-से-कम रास्ते में तुम्हारे साथ कोई बात करनेवाला तो होता!"

मोमिन ने जवाब दिया, "उसे तो अजनबियों की बातों पर यक़ीन ही नहीं था। और उसे अपने भाई-बहनों की देख-भाल भी करनी होती है। उनके माँ-बाप नहीं हैं ना! बी मोमिना को ही सब कुछ करना पड़ता है।"

"क्या तुमने उसे नहीं कहा था कि तुम्हारे साथ चले?"

“मैंने तो कई-एक बार उसके सामने शहर का ज़िक्र किया। अगर मुबश्शिर मुझे रास्ता न बताता तो मैं भी यहाँ न पहुँचता। मुबश्शिर से मिलते ही मैं तैयार हो गया, इसलिए बी मोमिना को आख़िरी बार मिल भी न सका।”

ऐन उसी वक़्त घंटी बजी। दोनों बड़ी लड़कियाँ अपना काम समेटकर कहने लगीं, “आओ, खाना खाने चलें। खाना तैयार है।”

मोमिन भूका था और थका-माँदा भी। उसे उस मज़ेदार खाने का बड़ा मज़ा आया। खाने के बाद तमीज़ उसे दूसरी मनज़िल के एक उम्दा कमरे में ले गई जिसकी एक खिड़की मशरिक़ की तरफ़ खुलती थी। वहाँ यह थका-माँदा मुसाफ़िर गहरी नींद सो गया। उसकी आँख उस वक़्त खुली जब सूरज निकल आया था।

ख़ुशी का दिन

सुबह हुई तो मोमिन को ख़याल आया कि उसे अपना सफ़र जारी रखना चाहिए। लेकिन जब लोग नाश्ते से फ़ारिग़ हुए तो तमीज़ ने उसे बड़ी हलीमी से अपने पास बुलाया। कहने लगी, "मेरे ख़याल में अगर तुम मेरे साथ चंद दिन ठहरो तो तुम्हारे लिए अच्छा होगा। तुमने घर छोड़ने के बाद काफ़ी लंबा सफ़र किया है। मुसाफ़िरों के लिए अच्छा नहीं कि वह सफ़र की इब्तिदा में ही इतनी फुरती दिखाएँ।"

"अगर मैं आप लोगों के लिए तकलीफ़ का बाइस न बनूँ तो मैं बड़ी ख़ुशी से ठहर जाऊँगा।"

"तुम तकलीफ़ के बाइस हरगिज़ नहीं बनोगे। आसमानी शहर के मुसाफ़िरों की ख़िदमत करना बादशाह की तरफ़ से मेरी बेटियों के ज़िम्मे है, और जब भी कोई महल में ठहरता है तो उन्हें बहुत ख़ुशी होती है।"

"क्या मेरी अम्मी यहाँ ठहरी थीं? उनका नाम सलामती था। जब बादशाह ने उन्हें बुलाया तो वह ज़रूर यहाँ से गुज़री होंगी। यह बड़े अरसे की बात है। जब वह गईं तो उस वक़्त मैं छोटा बच्चा ही था।"

"हम उनका नाम दफ़्तर में तलाश करेंगे। अगर वह यहाँ ठहरीं तो वहाँ ज़रूर लिखा होगा।"

मोमिन ने शरमाते हुए कहा, “मुझे लगता है कि वह आपसे मिलती-जुलती हैं।”

तमीज़ ने झुककर मोमिन की आँखों से आँसू पोंछे और उसे बोसा दिया। कहने लगी, “मोमिन! वह तुमसे दुबारा ज़रूर मिलेगी। बादशाह बड़ा नेक है, और उसे मालूम है कि माओं को अपने बच्चों से मुहब्बत होती है।”

“क्या शाही शहर में मेरी उनसे मुलाक़ात होगी?”

“हाँ। और फिर तुम उनसे कभी भी जुदा नहीं हो जाओगे।”

मोमिन ने शौक़ से कहा, “और मेरे अब्बा जी? क्या वह हर वक़्त मसरूफ़ रहेंगे या आपको लगता है कि वह भी कभी यहाँ आएँगे?”

तमीज़ ने जवाब दिया, “यह मैं नहीं कह सकती। मुझे यक़ीन है कि बादशाह के पैग़ाम उन तक पहुँचते रहेंगे। ऐन मुमकिन है कि जब उन्हें पता चले कि तुम और तुम्हारी अम्मी बहुत ख़ुश हो तो उनमें भी सफ़र करने की ख़ाहिश पैदा होगी।”

मोमिन ने कहा, “उन्हें रास्ते में डर नहीं लगेगा, क्योंकि वह बहादुर हैं। लेकिन मुझे लगता है कि मेरी अम्मी शेरों के पास से गुज़रना पसंद नहीं करती होंगी। जब मेरे अब्बा जी आएँ तो उन्हें बता देना कि मैं यहाँ ठहरा था और कि मैं उनकी राह देखूँगा जब वह आसमानी शहर के फाटकों पर पहुँचेंगे।”

तमीज़ ने जवाब दिया, “मैं तो ज़रूर कहूँगी। अब मुझे बहुत-सारे काम करने हैं। इसलिए फ़िलहाल मुहब्बत तुम्हें लाइब्रेरी में ले जाएगी। और हाँ, अगर तुम चाहो तो दफ़्तर में जाकर अपनी अम्मी का नाम भी ढूँड सकते हो।”

मोमिन ने वह दिन बड़ी ख़ुशी से गुज़ारा। बाज़ औक़ात मुहब्बत उसके हमराह होती तो बाज़ औक़ात दानिश और बाज़ औक़ात दीनदारी। सब बहुत ही मेहरबान और शरीफ़ थे, और वह अपने मेहमान की हर मुमकिन ख़ातिर करते थे।

आम लड़कों की तरह मोमिन को भी कहानियाँ पढ़ने और तस्वीरें देखने का बड़ा शौक़ था। ख़ूबसूरत महल की लाइब्रेरी में काफ़ी चीज़ें थीं

जो उसे दिलचस्प लगीं। दानिश ने उसे बताया कि कौन-सी किताबें पढ़नी चाहिएँ जबकि दीनदारी उसे तमाम तस्वीरें दिखाती रही।

वहाँ बच्चों की बहुत-सारी तस्वीरें लगी थीं—मसलन दरिया के किनारे टोकरे में मूसा लेटा हुआ, ख़ुदा के घर में समुएल बत्ती जलाता हुआ और छोटा तीमुथियुस अपनी माँ से तालीम पाता हुआ।

दीनदारी ने कहा, "और यह प्यारे शहज़ादे की तस्वीर है। तुमने अपनी किताब में पढ़ा होगा कि वह हमारे दरमियान रहा और एक ग़रीब घराने का छोटा बच्चा बना। यह देखो, वह अपनी माँ की गोद में है जबकि गडरिये उसके गिर्द घुटने टेके हैं।"

मोमिन को यह तस्वीर बहुत पसंद आई। कुछ देर वह उसके सामने खड़ा रहा। फिर मुहब्बत ने उसे बुलाया ताकि उसे अपनी पसंदीदा तस्वीर दिखाए। मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते की तस्वीर थी। उसमें एक बच्चा तंग रास्ते पर चल रहा था जबकि उसके पीछे एक ख़ूबसूरत फ़रिश्ता खड़ा था। उसके फैले हुए बाज़ू बच्चे के कंधे को छू रहे थे।

मुहब्बत ने कहा, "देखते हो, वह गिर नहीं सकता। बादशाह ने फ़रिश्ता भेजा है ताकि वह उसे मज़बूती से पकड़ रखे ताकि गिर न जाए।"

वक़्त इतनी तेज़ी से गुज़रा कि जब शाम हुई तो मोमिन को ताज्जुब हुआ। तमीज़ तमाम दिन मसरूफ़ रही थी। लेकिन इससे पहले कि बत्ती जलाई जाती वह लाइब्रेरी में आई जहाँ पर मोमिन मुतालआ कर रहा था। मोमिन ने अपनी किताब एक तरफ़ रख दी। तमीज़ ने उसे अपने बाज़ुओं

में लेकर बड़े धीमे और प्यारे लहजे में अपने नेक बादशाह और उसके बेटे शहज़ादे के बारे में बहुत-सी बातें बताईं।

मोमिन ने सोते वक़्त कहा, "मेरी ज़िंदगी में इस जैसा ख़ुशी का दिन कभी नहीं गुज़रा। अगर बादशाह के महल में रहने की मेरी सबसे बड़ी ख़ाहिश न होती तो मैं हमेशा यहाँ रहना पसंद करता।"

ख़ास हथियार

मोमिन ने तीन दिन ख़ूबसूरत महल में बसर किए। दूसरे दिन तमीज़ ने उसे उस कमरे को देखने की इजाज़त दी जहाँ हथियार रखे हुए थे। उस बड़े-से कमरे में हर क़िस्म के हथियार बादशाह के नौकरों के इस्तेमाल के लिए जमा किए गए थे।

मोमिन ने वहाँ चमकते हुए ख़ोद, ढालें, पीतल की बेहतरीन सिपरें, दमकती तलवारें और जूतों की क़तारें देखीं। मुहब्बत ने उसे बताया कि यह जूते कभी नहीं घिसते। यह तमाम चीज़ें न सिर्फ़ बड़े लोगों के लिए थे बल्कि वहाँ ऐसे ख़ोद भी थे जो मोमिन के नाप से भी छोटे थे। इतनी छोटी छोटी तलवारें भी थीं जो सिर्फ़ बच्चे ही इस्तेमाल कर सकते थे।

उसने पूछा, “क्या यह खिलौने हैं?”

दीनदारी ने कहा, “नहीं, यह तो छोटे मुसाफ़िरों के लिए हथियार हैं।”

इस पर मोमिन के दिल में यह आरज़ू पैदा हुई कि काश मेरे पास भी ढाल और तलवार होती, काश मैं बादशाह के सिपाहियों में होता।

दीनदारी खिड़की में बैठकर मोमिन को बादशाह के सिपाहियों के बड़े बड़े काम सुनाए। जो कहानी उसे सबसे ज़्यादा पसंद आई वह लड़के

दाऊद की थी। दाऊद अभी लड़का ही था कि उसकी एक देव से लड़ाई हुई। तो भी उसने उसे मार डाला।

दीनदारी ने कहा, "देव बादशाह का दुश्मन था। समझता था कि लड़के को आसानी से मार देगा। वह सर से पाँव तक हथियारों से लैस था जबकि दाऊद ने सिर्फ़ गडरियों का लिबास पहन रखा था। उसके पास न तो तलवार थी और न ही नेज़ा।"

मोमिन ने पूछा, "फिर उसने किस चीज़ से जंग की?"

"उसके पास सिर्फ़ एक फ़लाख़न और चंद-एक पत्थर थे। लेकिन जब उसने पत्थर फेंका तो बादशाह ने उसे इतनी तौफ़ीक़ दी कि उसका निशाना ऐसा ठीक बैठा कि देव का माथा फूट गया और वह मर गया।"

इस कहानी से मोमिन को इतमीनान हुआ, क्योंकि जिस बादशाह ने दाऊद की मदद की वह बिला-शुबहा आसमानी शहर के हर एक मुसाफ़िर की मदद करने के लिए तैयार होगा।

मोमिन ने तीसरे दिन दानिश से पूछा, "अभी मेरे सफ़र पर जाने का वक़्त हुआ है कि नहीं?"

दानिश ने जवाब दिया,"अभी नहीं। आज धुंद है, और तुमने महल की छत पर चढ़कर नज़ारा नहीं देखा।"

यों मोमिन ने वहाँ ख़ुशी का एक और दिन बसर किया।

उगली सुबह जब उसने खिड़की खोली तो देखा कि धुंद ख़त्म हो गई है। चुनाँचे नाश्ते के बाद तीनों लड़कियाँ उसे छत पर ले गईं।

मोमिन ने जुनूब की तरफ़ निगाह डाली। काफ़ी फ़ासले पर ख़ूबसूरत पहाड़ों का सिलसिला नज़र आया। जगह जगह सब्ज़ खेत, बाग़, ताकिस्तान और सायदार जंगल दिखाई दिए, और ख़ामोश वादियों में धूप में नदियाँ जगमगा रही थीं। वह पुकार उठा, "वाह! कितना प्यारा मुल्क है!"

दीनदारी ने कहा, "हाँ, यही तो इम्मानुएल का मुल्क है, और शाही रास्ता उसी में से गुज़रता है। उन पहाड़ों को ख़ुशनुमा पहाड़ कहते हैं। वहाँ से तुम्हें आसमानी शहर के फाटक नज़र आएँगे।"

मोमिन ने पूछा, "तो वहाँ पहुँचने में कितना अरसा लगेगा?"

दीनदारी ने जवाब दिया, "मुझे मालूम नहीं। तुम बच्चे हो, और तुमसे तेज़ नहीं चला जा सकता।"

इतने में तमीज़ ने आवाज़ दी, "हमें मोमिन को जल्द ही भेज देना चाहिए ताकि गरमी होने से पहले ही वादी में दाख़िल हो जाए।"

मोमिन ने यह बात सुनकर कहा, "मैं तैयार हूँ।" लेकिन मुहब्बत ने उसकी बात काटी, "नहीं अम्मी, वह अभी तैयार नहीं हुआ है। अभी तो हमें उसके लिए और भी बंदोबस्त करना है।"

"हाँ, यह ठीक है," तमीज़ ने जवाब दिया। वह उसे लेकर उस कमरे की तरफ़ चल दी जहाँ हथियार थे। "बादशाह के दुश्मन ख़ूबसूरत महल और आसमानी शहर के दरमियान के रास्ते पर मुसाफ़िरों को तकलीफ़ देते हैं, इसलिए बच्चों को भी हथियारों की ज़रूरत होती है।"

मोमिन को जब पता चला कि उसे भी हथियार मिलने हैं तो उसके गाल ख़ुशी के मारे सुर्ख़ हो गए। यह देखकर तमीज़ और उसकी बेटियाँ भी बहुत ख़ुश हुईं।

मुहब्बत बोली, "मैं तुम्हें सिपाही बना हुआ देखना चाहती हूँ।" मोमिन को हसरत थी कि काश बी मोमिना भी वहाँ होती।

तमीज़ ने उसके नाप का एक ख़ोद पसंद किया और कहने लगी, "हमेशा अपने हथियारों का ख़याल रखना। हमेशा उन्हें साफ़-सुथरा और चमकाकर रखना।"

तब दीनदारी ने उसके लिए एक ढाल ढूँड निकाली जिससे वह अपनी हिफ़ाज़त कर सके और जो इतनी भारी भी न हो कि बोझल लगे।

दानिश ने उसकी कमर पर तलवार बाँधी, और मुहब्बत ने जूते पहनाए। जब वह यों तैयार हो गया तो तमीज़ ने पहले की तरह झुककर उसे बोसा दिया और कहने लगी, "बादशाह का फ़ज़्लो-करम आपके साथ हो। सारी उम्र उसके दियानतदार सिपाही और ख़ादिम बने रहो।"

मोमिन मारे ख़ुशी के बोल न सका, लेकिन उसने तमीज़ के गले में यों बाँहें डालीं कि जैसे वह उसकी सगी माँ हो। वह भी ख़ूब जानती थी कि उसका दिल मुहब्बत और शुक्रगुज़ारी से मामूर है। कहने लगी,"तुम्हें बादशाह ही का शुक्रगुज़ार होना चाहिए। उसी ने यह तमाम चीज़ें तुम्हें इनायत की हैं।"

एक ज़बरदस्त दुश्मन

जब मोमिन महल से बाहर निकला तो चौकस दरवाज़े पर खड़ा था। दरवाज़ा खोलते हुए मोमिन से बोला, “अभी अभी एक और मुसाफ़िर लड़का यहाँ से गुज़रा है। कहता था मेरा नाम वफ़ादार है।”

मोमिन बोल उठा, “अच्छा, मैं उसे ख़ूब जानता हूँ। उसका मकान हमारे घर से बिलकुल क़रीब था। वह कब गया है? क्या मैं उसे जा लूँगा?”

चौकस ने जवाब दिया, “मुझे देखे आधा घंटा हो गया है। इस वक़्त वह पहाड़ के दामन में होगा।”

मोमिन इस ख़याल से कि साथी मिल जाएगा बड़ा ख़ुश हुआ, और उसने तहैया कर लिया कि जल्दी जल्दी चलकर वफ़ादार से जा मिले। लेकिन सबसे पहले उसे अपने दोस्तों को अलविदा कहना था जो फाटक तक उसे छोड़ने आए थे।

तमीज़ ने कहा, “यह सुबह कितनी सुहानी है। अगर मोमिन के साथ पहाड़ के दामन तक जाएँ तो कितना अच्छा होगा।”

मुहब्बत बोली, “बड़ी अच्छी बात है और मुमकिन है वफ़ादार भी वहाँ मिल जाए। पता नहीं उसने हमसे मुलाक़ात क्यों नहीं की?”

तमीज़ ने कहा, “अभी सवेरा है। उसने सोचा होगा कि जितनी जल्दी सफ़र कर ले उतना ही अच्छा है।”

ख़ूबसूरत महल कोहे-मुश्किल की चोटी पर वाक़े था, और उसके नीचे फ़रोतनी की वादी थी। महल के फाटक से जो रास्ता जाता था उसकी उतराई बहुत थी। मोमिन ख़ुश था कि तमीज़ ने उसका हाथ अपने हाथ में मज़बूती से थामे रखा था कि कहीं गिर न पड़े। “पहाड़ पर चढ़ना मुश्किल था, लेकिन उससे उतरना भी ख़तरनाक है,” उसने कहा।

तमीज़ ने जवाब दिया, “हाँ, बाज़ औक़ात लोग इस रास्ते पर से बुरी तरह गिरते हैं।”

थोड़े ही अरसे में वह वादी में पहुँच गए। तमीज़ ने मोमिन को खाने की कुछ चीज़ें दे दीं। कहने लगी, “तुम्हें मिलकर हमें बड़ी ख़ुशी हुई। जब भी तुम्हारा बाप महल में आएगा मैं तुम्हारा पैग़ाम उसे दे दूँगी।”

अलविदा होते हुए मोमिन को बड़ा अफ़सोस हुआ। जब तमीज़ और उसकी बेटियाँ उसे छोड़कर चली गईं तो वह तनहाई महसूस करने लगा। वादी बड़ी पुरसुकून और पुरफ़ज़ा थी, और वह तेज़ तेज़ चलता गया। उसे बड़ी उम्मीद थी कि जल्द ही वफ़ादार को पा लेगा, लेकिन वफ़ादार के बजाए उसे एक डरावनी शक्ल का आदमी मिला जो रास्ते में उसकी तरफ़ बढ़ रहा था। जब वह नज़दीक हुआ तो मोमिन को उसका नाम याद आ गया—वह हलाकू कहलाता था। उसे देखते ही मोमिन भाँप गया कि

“यह बादशाह का दुश्मन है जो मुझे ज़रूर नुक़सान पहुँचाने की कोशिश करेगा। ऐसे में क्या करना चाहिए?”

पहले तो यह ख़याल आया कि पलटकर पहाड़ के दामन को भाग जाए। मुमकिन है तमीज़ मुड़कर उसे देख ले या चौकस चौकीदार महल के फाटक से मदद के लिए किसी को भेज दे। लेकिन फिर सोचने लगा कि मेरी पीठ पर कोई हथियार नहीं है, और अगर मैं दुश्मन के आमने-सामने होकर मुक़ाबला न करूँ तो मेरी ढाल और सिपर बेकार रहेंगी। चुनाँचे उसने फ़ैसला किया कि बादशाह पर भरोसा रखकर सीधा जाऊँगा। मुमकिन है हलाकू मुझे बच्चा समझकर ध्यान किए बग़ैर पास से गुज़र जाए। यह सोचकर वह बेधड़क चलता गया।

चंद ही लमहों में हलाकू उसके बिलकुल क़रीब आ गया। हलाकू मोमिन के सामने रुककर और उसके चमकीले हथियारों की तरफ़ देखकर कहने लगा, "तुम कहाँ से आए हो?"

मोमिन डरा हुआ बोला, "बरबादनगर से।"

"और कहाँ जा रहे हो?"

"शाही शहर को।"

हलाकू ने कहा,"शायद तुम भूल गए हो कि मैं बरबादनगर का मालिक हूँ। अगर तुम बच्चे न होते तो बग़ैर इजाज़त भागने के जुर्म में तुम्हें अभी क़त्ल कर देता। लेकिन मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ, इसलिए कि तुम्हें वापस ले जाया जा सकता है।"

मोमिन ने जुर्रत करके जवाब दिया, "मैं जानता हूँ कि वह शहर तुम्हारा है, लेकिन तुमसे भी बड़ा बादशाह मुझसे मुहब्बत रखता है। और मैं चाहता हूँ कि उसी के पास रहूँ।"

इस पर हलाकू मुसकराया। कहने लगा, "बेवुक़ूफ़ न बनो। जिन्हें पसंद करता हूँ उन पर मेहरबान भी होता हूँ। अगर तुम मेरे साथ वापस हो जाओ और वादा करो कि आइंदा कभी नहीं भागोगे तो मैं तुमसे नाराज़ नहीं हूँगा बल्कि तुम मेरे मकान में ठहरकर मेरे नौकर हो जाओगे।"

मोमिन ने कहा, "मैं तो बादशाह का नौकर हूँ।"

"कोई बात नहीं। बादशाह के नौकर अकसर उसके पास से भाग जाते हैं। और हाँ, तुम तो जब अपने वतन में थे मेरे नौकर थे। तुम्हें ख़ुश होना चाहिए कि मैं तुम्हें माफ़ करने और वापस ले जाने को तैयार हूँ।"

बेचारे मोमिन को महसूस हुआ कि उसकी आँखों से आँसू टपकनेवाले हैं। उसके होंट काँपने लगे। लेकिन जवाब में कहने लगा, "मैं बादशाह से मुहब्बत रखता हूँ और उसी का नौकर बन गया हूँ। मेहरबानी से मुझे जाने दो।"

हलाकू चाहता था कि मोमिन उसके साथ घर को लौट जाए, इसलिए कहने लगा, "जल्दबाज़ी न करो। ज़रा उन मुश्किलात का तो ख़याल करो जो रास्ते में तुम्हें पेश आएँगी। हमारे सिपाही हर जगह मौजूद हैं, और अगर तुम उन्हें मिल गए और उन्होंने तुम्हें तकलीफ़ पहुँचाई तो बादशाह कहाँ तुम्हारी मदद करेगा? तुम जानते हो, जब से निकले हो तुमने उसकी अच्छी नौकरी नहीं की। तुम इतने बेपरवा थे कि दलदल में जा गिरे और दुनियादार के धोके में आकर सीधे रास्ते से मुड़ भी गए। फिर तुम छाऊँ में सो गए जहाँ तुम्हारा परवाना गुम हो गया। और जब तुम्हें शेर नज़र आए तो तुम इतने डर गए कि तक़रीबन मुड़नेवाले थे। इसके बावुजूद तुमने ख़ूबसूरत महल में इतनी शेख़ी बघारी कि जैसे तुम ही दियानतदार नौकर हो। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम उससे यह तवक़्क़ो कैसे रख सकते हो कि वह तुम्हारे लिए कुछ करे।"

मोमिन को मालूम था कि वह जो कुछ कह रहा है दुरुस्त है, और वह हैरान हुआ कि हलाकू को इन तमाम बातों का इल्म हुआ है। कहने लगा, “मुझे इसका बहुत अफ़सोस है, और बादशाह मुझे माफ़ कर देगा, क्योंकि वह जानता है कि मैं बच्चा ही हूँ।”

अब तो हलाकू ज़्यादा देर तक अपना ग़ुस्सा दबा न सका। वह अब तक इसलिए नरमी से बात कर रहा था कि मोमिन अपनी ख़ुशी से बादशाह की नौकरी छोड़ दे, लेकिन जब उसे मालूम हुआ कि मोमिन उसकी बात नहीं मानेगा तो ग़ुस्से से लाल-पीला हो गया और चिल्ला उठा, “मुझे तुम्हारे बादशाह से नफ़रत है। तुम मेरे नौकर हो और आसमानी शहर को कभी नहीं जाओगे। मैं तुम्हें मार डालूँगा।”

पहली जंग

पेशतर इससे कि मोमिन अपनी ढाल आगे करता हलाकू ने उस पर आतिशीं तीर बरसाने शुरू कर दिए। लगता था कि वह जल्द ही क़त्ल हो जाएगा। लेकिन दाऊद और देव का जो क़िस्सा उसने ख़ूबसूरत महल में सुना था वह याद आ गया। वह सोचने लगा, "दाऊद तो सिर्फ़ गडरियों का लिबास पहने था, और मैं उम्दा हथियार पहने हूँ जो बादशाह ने इनायत किए हैं। मैं उस पर तवक्कूल रखूँगा और नहीं डरूँगा।"

तब वह ढाल को मज़बूती से पकड़कर हलाकू के तीरों को रोकने में कामयाब हुआ। हलाकू यह देखकर ग़ुस्से से पागल हो गया। छोटे सिपाही पर लपककर उसे अपने मज़बूत हाथों में ले लिया। मोमिन चंद-एक तीरों को अपनी ढाल से न रोक सका था, और वह उसे लगे। उनसे उसके

हाथ-पाँव ज़ख़्मी हो गए, और इतना ख़ून बहने लगा कि वह ग़श खाकर गिरने को था। हलाकू ने यह देखकर बच्चे को ज़मीन पर पटक दिया। मोमिन ने मियान से तलवार निकाल ली थी, लेकिन जब हलाकू ने उसे ज़मीन पर पटका तो यह उसके हाथ से गिर पड़ी। लगता था कि अब वह ज़ालिम दुश्मन से बचेगा नहीं। लेकिन ज्योंही हलाकू उस पर आख़िरी वार करनेवाला था तो मोमिन ने देखा कि तलवार क़रीब ही पड़ी है। उसने हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लिया और पेशतर इसके कि हलाकू अपना बचाव करता उसने उसे उसके जिस्म में घोंप दिया जिससे उसे बहुत गहरा ज़ख़्म लगा।

बादशाह की तलवार से लगे हुए ज़ख़्म का दर्द शरीर सरदार के सिपाही से कैसे बरदाश्त हो सकता था। वह चीख़ उठा। तब मोमिन ने जुर्रत करके दूसरी बार अपने दुश्मन पर वार किया। तब हलाकू सर पर पाँव रखकर वादी से भाग गया, और मोमिन अकेला ही रह गया। थोड़ी देर तक वह रास्ते में पड़ा रहा और फिर उठकर इधर-उधर देखने लगा। इर्दगिर्द की घास पर वह तेज़ तीर पड़े थे जो उस पर बरसाए गए थे। लेकिन हलाकू भाग चुका था। वह मोमिन को कहीं दिखाई न दिया।

मोमिन सोचने लगा, "बादशाह ने मेरी मदद की है।" इस अजीब रिहाई के लिए उसका दिल शुक्रगुज़ारी से भर गया। लेकिन बेचारे छोटे सिपाही को भी गहरा ज़ख़्म आया था, और ख़ून बहने से ग़श आ रहा था। वह मजबूर होकर एक बड़ी चटान के साथ सर टेककर घास पर बैठ गया।

इस कमज़ोर और निढाल हालत में वह सो गया। तब उसने एक अजीब ख़ाब देखा।

क्या देखता है कि वादी में से होती हुई उसकी अपनी प्यारी माँ जो उसे अरसा हुआ छोड़कर चली गई थीं उसकी तरफ़ आ रही हैं। उनका चेहरा ऐसा चमक रहा था जैसे कि अंधेरी रात में चाँद की किरणें चमकती हैं। उनके गिर्द रौशनी मालूम होती थी। वह तमीज़ से भी ज़्यादा ख़ूबसूरत थीं और उनकी आँखें मुहब्बत और रहम से भरपूर नज़र आती थीं। मोमिन ने अपने हाथ उनकी तरफ़ बढ़ाए। वह उसके पास आकर घास पर बैठ गईं और मोमिन को अपनी बाँहों में ले लिया। फिर उन्होंने शफ़क़त से उसके ज़ख़्मों की मरहम-पट्टी की। मोमिन ख़ामोश पड़ा सोचने लगा कि कहीं वह फ़रिश्ता तो नहीं! उन्होंने उससे बात न की बल्कि उसे घास पर लिटा दिया और उसके माथे पर प्यार किया।

वह चिल्ला उठा, "अम्मी जान, अम्मी जान!" लेकिन जब उसने आँखें खोलीं तो वह वहाँ मौजूद न थीं। वह चटान के पास पड़ा था जहाँ से वह पूरी वादी को देख सकता था। अब वह बिलकुल तनहा था। वह उठ बैठा और अपने ज़ख़्मों को देखने लगा। उनमें से न तो अब ख़ून बह रहा था और न ही दर्द था।

वह ख़याल करने लगा, "बेशक यह ख़ाब था। फिर भी तमाम ज़ख़्म दुरुस्त हो चुके हैं। लगता है वह मेरी अपनी अम्मी थीं। शायद बादशाह ने मुझे बीमार और ग़श खाते हुए देखकर उन्हें मेरी मदद को भेजा हो।"

फिर उसे याद आया कि तमीज़ ने उसे कुछ खाना दिया था। वह इतमीनान से खाना खाने लगा। खाना खाते हुए उसे ख़याल आया कि जल्दी करनी चाहिए, क्योंकि काफ़ी वक़्त ज़ाया हो चुका है। क्या पता हलाकू बहुत दूर चला गया हो या वापस आकर मुझे तलाश करे। हलाकू ने तो कहा था कि उसके सिपाही आस-पास हैं, इसलिए उनसे मुक़ाबला करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

वह तलवार को पकड़कर चारों तरफ़ चटानों और झाड़ियों को देखते हुए अपने सफ़र पर रवाना हुआ।

तारीकतरीन वादी

जब मोमिन फ़रोतनी की वादी के आख़िर में पहुँचा तो पिछले पहर का आख़िरी वक़्त था। अब तक हलाकू वापस नहीं आया था। मोमिन सोच ही रहा था कि अपनी तलवार को वापस मियान में डाल ले कि क्या देखता है कि दो लड़के उसकी तरफ़ भागे आ रहे हैं। उनके चेहरों का रंग उड़ा हुआ था। उन्हें अपनी तरफ़ आते देखकर मोमिन बोला, “तुम कहाँ जा रहे हो?”

लड़के चिल्ला उठे, “वापस, और अगर तुम भी ख़ैरियत चाहते हो तो हमारे साथ वापस चलो।”

मोमिन ने पूछा, “क्यों, क्या बात है?”

उन्होंने जवाब दिया, “बात यह है कि हम भी तुम्हारी तरह आसमानी शहर को जा रहे थे और जहाँ तक हमारी हिम्मत थी गए भी। लेकिन अगर चंद क़दम और बढ़ते तो अब इस क़ाबिल न होते कि वापस आकर तुम्हें बचाते।”

मोमिन ने कहा, “वहाँ तुमने क्या देखा?” उसकी सबसे बड़ी फ़िकर यह थी कि रात को कहाँ गुज़ारे? वापस जाने का तो उसे ख़याल तक नहीं था, क्योंकि जो फ़तह उसने हलाकू पर हासिल की थी इससे उसे हमेशा

के लिए बादशाह की मुहब्बत और मदद का यक़ीन हो चुका था। लेकिन शायद लड़कों से मालूम हो जाए कि अपनी हिफ़ाज़त का बंदोबस्त कैसे कर सके।

उन्होंने कहा, "हमारे ऐन सामने तारीकतरीन वादी है, लेकिन हमने उसे वक़्त पर देख लिया और जल्दी से भाग आए।"

"वह कैसी है?"

"बड़ी भयानक। बड़ी ख़तरनाक जगह है। हमने आज तक ऐसी कोई जगह नहीं देखी। बस अंधेरा ही अंधेरा है। सिवाए दुखी लोगों की चीख़-पुकार के हमने कुछ नहीं सुना। यक़ीनन वह ऐसे मुसाफ़िर होंगे जो रास्ते से भटक गए होंगे।"

मोमिन ने पूछा, "क्या शाही रास्ता उसमें से सीधा निकलता है?"

लड़कों ने जवाब दिया, "जी हाँ।"

"फिर हम कैसे उससे बच सकते हैं?"

"अगर चाहो तो आज़मा लो। अगर उस शहर में पहुँचना हो तो कोई और रास्ता इख़्तियार करना पड़ेगा।"

यह कहकर वह उसे छोड़कर चले गए, और मोमिन तलवार थामे हुए आगे बढ़ता गया।

तारीकतरीन वादी फ़रोतनी की वादी से कहीं ज़्यादा नीचे और तंग थी। जब मोमिन उसमें दाख़िल हुआ तो लगता था कि सर पर काली चटानें गिरनेवाली हैं। शाम होने को थी, और रास्ते में इतनी धुंद छा गई

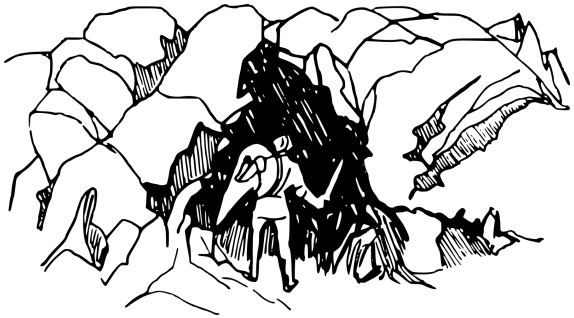

थी कि हाथ को हाथ सुझाई नहीं देता था। इस धुंद में से कभी कभी रौशनी की चमक फूटती थी। लेकिन पता नहीं चलता था कि आग के शोले हैं या बिजली के। साथ साथ इतनी ख़तरनाक आवाज़ें गूँज रही थीं कि उसका दिल दहल गया। शोलों की रौशनी में इतना नज़र आता था कि रास्ता बड़ा ख़तरनाक है। दाएँ हाथ गहरी खड और बाएँ हाथ दलदल थी। सिवाए इसके और कोई चारा नहीं था कि अपने आपको दोनों तरफ़ गिरने से बचाए।

सफ़र का यह मरहला निहायत ही मुश्किल था। गो वह बादशाह और उसकी नेकी पर सोचता रहा तो भी वह दहशत की गिरिफ़्त में रहा। वादी के एक हिस्से में शरीर सरदार के नौकर बेचारे मुसाफ़िरों को तंग करने की ताक में बैठे थे। वहाँ उसे अपने पीछे आवाज़ यों सुनाई दी जैसे कि कोई उसके कानों में गंदी बातें फुसफुसा रहा हो। लेकिन कोई दिखाई न

दिया, और मोमिन यह सोचते हुए परेशान हुआ कि शायद मैंने ख़ुद ही यह गालियाँ दीं। उसे डर था कि कहीं इस हरकत से बादशाह नाराज़ न हो जाए।

आधी रात को जब वह तारीकी में आहिस्ता आहिस्ता आगे बढ़ रहा था तो अचानक दूर से पाँवों की आहट सुनाई दी। कुछ लोग उसकी तरफ़ चीख़ते-चिल्लाते बढ़े चले आ रहे थे। वह समझा, "यह शरीर सरदार के नौकरों का जत्था होगा, वह मुझे तकलीफ़ देंगे और मुमकिन है क़त्ल भी कर दें।" उसका जिस्म काँपने लगा, और वह सचमुच वापस चले जाने पर मायल हो रहा था। लेकिन अब वह वादी का काफ़ी सफ़र तय कर चुका था इसलिए कहने लगा कि "शायद अब मैं निकलनेवाला हूँ। इस सूरत में आगे बढ़ना पीछे मुड़ने से बेहतर है।"

उसी वक़्त क्या देखता है कि शरीर सिपाहियों ने दूसरा रास्ता इख़्तियार कर लिया है। उनकी आवाज़ें हौले हौले दूर होती गईं। जब ख़ामोशी दुबारा छा गई तो मोमिन के आगे आगे आसमानी शहर के किसी और मुसाफ़िर की आवाज़ सुनाई दी जो बादशाह की किताब में से ख़ूबसूरत अलफ़ाज़ दोहरा रहा था। यह सुनकर मोमिन को इतमीनान हुआ। अंधेरा इस क़दर था कि पता न चला कि दूसरा मुसाफ़िर कौन है। अलबत्ता बड़ी उम्मीद थी कि वफ़ादार होगा और कि वह उसे जल्दी जा लेगा। उसने उसे आवाज़ दी। वफ़ादार ने मोमिन की आवाज़ तो सुनी, लेकिन वह नहीं जानता था कि कौन उसे बुला रहा है, इसलिए उसने कोई जवाब न दिया। फिर भी मोमिन को यक़ीन था कि वही है, और तनहाई का ख़ौफ़ जाता रहा।

सफ़र में साथी

उस रात मोमिन को आराम न मिला। उस तारीकतरीन वादी में लेटकर सो जाने की उसे कैसे जुर्रत हो सकती थी! उसे यह फ़िकर थी कि कहीं शरीर सिपाही जो चटानों पर इधर-उधर घूम रहे थे उसे उठाकर बरबादनगर न ले जाएँ। गो वह थका-माँदा था, फिर भी दिलेरी से धुंद और अंधेरे को चीरते हुए आगे बढ़ता चला गया। साथ साथ वह अपने दिल में दुआ करता रहा कि बादशाह मेरा निगहबान हो। उसे बादशाह की किताब का यह जुमला भी याद रहा कि "वह अपने फ़रिश्तों को हर राह पर तेरी हिफ़ाज़त करने का हुक्म देगा।"

फिर उसे मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते की तस्वीर जो ख़ूबसूरत महल में पड़ी थी याद आई। दिल में कहने लगा, "तस्वीर दुरुस्त है। वह बच्चा भी ऐसे ही रास्ते पर जा रहा था, और बादशाह का फ़रिश्ता उसकी हिफ़ाज़त कर रहा था। शायद इस वक़्त मेरे साथ भी कोई फ़रिश्ता हो।"

मोमिन का यह ख़याल दुरुस्त था। इस भयानक रात में फ़रिश्ता उसके साथ था। गो मोमिन को यह नूरानी मुहाफ़िज़ नज़र न आया तो भी उसके मेहरबान हाथ उसे रास्ते के ख़तरों से बचाने के लिए फैले हुए थे। और

अगर कहीं इस पुर-ख़तर रास्ते पर से उसके पाँव फिसलते तो उसके ज़ोरावर बाज़ू उसे मज़बूती से सँभालने को तैयार थे।

आख़िरकार धुंद छुटी, और उसके ऊपर रौशनी चमकने लगी। मोमिन ने जो ऊपर देखा तो उसे लटकती चटानों के दरमियान आसमान की झलक नज़र आई। इससे उसने अंदाज़ा लगाया कि दिन निकलनेवाला है। ज्योंही सूरज की सुनहरी किरणें तारीकतरीन वादी में चमकने लगीं उसने इतमीनान का साँस लेकर पीछे देखा। उसे अपने इर्दगिर्द काली चटानें और तंग रास्ता नज़र आया जिसके एक तरफ़ दलदल और दूसरी तरफ़ गहरे गढ़े थे जो रात की निसबत अब कहीं ज़्यादा ख़तरनाक नज़र आते थे। मोमिन हैरान हुआ कि वह हिफ़ाज़त से ऐसे ख़ौफ़नाक मक़ाम से निकल आया था।

फिर उसने आगे देखा और शुक्र किया कि दिन निकल आया है। क्योंकि मुसाफ़िरों के रास्ते में रुकावट डालने और तकलीफ़ देने के लिए शरीर सिपाहियों ने बाक़ीमाँदा रास्ते में जाल और फंदे बिछा रखे थे। उन्होंने ख़तरनाक जगहों पर गढ़े भी खोद रखे थे। रास्ते को मुश्किल और ख़तरनाक बनाने में जो कुछ उनसे हो सकता था उन्होंने कर रखा था। मोमिन सोचने लगा, "अगर मुझे अंधेरे में यहाँ से गुज़रना पड़ता तो ऐन मुमकिन था कि फँसकर गिर जाता और ज़ख़मी हो जाता।"

तारीकतरीन वादी के आख़िर में पहाड़ के एक तरफ़ बड़ा-सा ग़ार था जिसमें कभी दो ज़बरदस्त देव रहते थे। जब कभी किसी मुसाफ़िर का उनकी खोह से गुज़र होता तो देव उस पर हमला करके मार डालने की कोशिश करते। यह जगह काफ़ी मुद्दत तक ख़तरनाक बनी रही, लेकिन एक देव मर गया और दूसरा बुढ़ापे के बाइस कमज़ोर हो गया था, इसलिए अब वह मुसाफ़िरों पर लपकने के क़ाबिल न रहा था।

मोमिन ग़ार के क़रीब पहुँचा तो उसने देखा कि देव बाहर बैठा है। उसे कुछ डर तो लगा लेकिन जब देव में हरकत पैदा न हुई तो वह आगे बढ़ने लगा। उसे देखकर देव को बड़ा ग़ुस्सा आया, और वह चाहता था कि लड़के को पकड़कर ग़ार में ले जाए। लेकिन चूँकि उसमें ताक़त नहीं थी इसलिए मोमिन वहाँ से बेख़तर निकल गया।

तारीकतरीन वादी अपने तमाम ख़तरों समेत पीछे रह गई, और सामने की ज़मीन ऊँची होती गई। मोमिन फुरती से रास्ते पर चढ़ता गया। जब चोटी पर पहुँचा तो उसे कुछ फ़ासले पर सड़क दिखाई देने लगी।

थोड़ा-सा आगे एक लड़का शाही शहर को मुँह किए जा रहा था। उसने मोमिन की मानिंद सफ़ेद पोशाक पहनी हुई थी, लेकिन उसके पास हथियार न थे।

मोमिन ने सोचा, "ज़रूर वफ़ादार होगा," और पुकारने लगा, "ठहर जाओ, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।"

यह सुनकर वफ़ादार ने पीछे मुड़कर देखा। मोमिन ने फिर आवाज़ दी, "मेरे पहुँचने तक ठहरे रहो।"

लेकिन वफ़ादार ने जवाब दिया, "मैं शाही शहर को जा रहा हूँ, और दुश्मन पीछे लगे हुए हैं।"

मोमिन यह देखकर ग़ुस्से हुआ कि वफ़ादार इंतज़ार करने को तैयार नहीं। वह दौड़ने लगा और वफ़ादार को पीछे छोड़ता हुआ उससे आगे निकल गया। लेकिन वह यह देखना भूल गया कि कहाँ जा रहा है। अचानक उसके पाँवों को पत्थर की ठोकर लगी और वह ज़मीन पर गिर पड़ा। यह देखकर वफ़ादार उसकी तरफ़ दौड़ा और उसे खड़ा किया।

वफ़ादार का क़िस्सा

एक दूसरे को देखकर दोनों लड़के बड़े ख़ुश हुए, क्योंकि बरबादनगर में यह दोनों दोस्त थे। वफ़ादार शुरू से ख़ामोशमिज़ाज और समझदार लड़का था। उस वक़्त वह और मोमिन मिलकर बादशाह की किताब और उन उम्दा उम्दा बातों का मुतालआ करते रहते थे जो अजनबी उन्हें सुनाते थे।

मोमिन ने कहा, “तुम्हें मिलकर मुझे बड़ी ख़ुशी हुई। मिलकर सफ़र करना अच्छा रहेगा।”

वफ़ादार ने जवाब दिया, “मेरा इरादा था कि सारा सफ़र तुम्हारे साथ रहूँ, लेकिन तुम इतनी जल्दी चल पड़े कि मुझे तुम्हारे चले जाने के बाद ही पता लगा।”

“तुम शहर में कितने दिन और ठहरे रहे?”

“सिर्फ़ दो या तीन दिन। तुम्हारे जाने के बाद लड़कों में बादशाह के पैग़ामों के बारे में बड़ी बातचीत हुई, लेकिन मुझे लगा कि वह इनका यक़ीन नहीं करते थे।”

वह दो-दिला से क्या कहते थे?”

“उसे देखते ही मालूम हुआ कि वह कहाँ गया था, क्योंकि जब वह पहुँचा तो कीचड़ में लतपत था। वह उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे और उसे अपने साथ खेलने भी नहीं देते थे।”

मोमिन बोला, “मज़ाक़ उड़ाने की क्या ज़रूरत थी जबकि वह ख़ुद आना ही नहीं चाहते थे।”

“असल में वह उसे इसलिए छेड़ते रहे कि पहली मुसीबत पर ही दुम दबाकर भाग आया। दूसरे दिन मैंने उसे गली में देखकर तुम्हारे बारे में दरियाफ़्त करना चाहता था, लेकिन वह खिसककर यों ग़ायब हो गया जैसे मुझे देखा ही नहीं।”

मोमिन ने कहा, “अफ़सोस कि वह फिर घर लौट गया। अब अपनी सुनाओ।”

वफ़ादार बोला, “मैं दलदल में न गिरा। हाँ, तंग दरवाज़े पर पहुँचने से पहले मुझे ऐयाश नामी लड़की मिली। वह शरीर सरदार के महल की नौकरानी है। जब उसे मालूम हुआ कि मैं कहाँ जा रहा हूँ तो उसने बड़ी कोशिश की कि उसके साथ वापस हो जाऊँ। मुझे डर था कि उसकी मान जाऊँगा, क्योंकि वह लंबी और ताक़तवर थी। लेकिन जो कुछ उसने कहा उसकी मैंने सुनी ही नहीं। आख़िरकार उसने मुझे कहा, “तुम बेवुक़ूफ़ लड़के हो और इस लायक़ नहीं कि तुमसे बात की जाए।”

मोमिन को याद आया कि जब दुनियादार ने उसे धोका दिया तो उसने किस तरह सीधे रास्ते से मुँह मोड़ लिया था। वह कहने लगा, “अच्छा

हुआ कि तुमने उसकी बात न सुनी। उसके अलावा किसी और को भी मिले?"

"कुछ अरसे तक तो नहीं, लेकिन जब मैं कोहे-मुश्किल पर पहुँचा तो वहाँ सड़क के किनारे मुझे एक बूढ़ा आदमी मिला। उसने पूछा, 'क्या तुम आसमानी शहर को जा रहे हो? मेरा मशवरा है कि तुम मेरे साथ जाकर रहो। मैं तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक करूँगा, और मेरी वफ़ात पर मेरा तमाम मालो-दौलत तुम्हारा ही होगा।' वह इतना ख़ुशमिज़ाज था कि मैं उसकी सुने बग़ैर न रह सका और उसके साथ जाने पर क़रीब क़रीब रज़ामंद हो गया।"

मोमिन चिल्ला उठा, "ओहो, वह तुम्हें शरीर सरदार के पास ले जाता।"

"हाँ, हाँ। वह यही चाहता था। लेकिन जब मैंने ग़ौर से देखा तो वह अजीब अंदाज़ से मुसकरा रहा था। उस वक़्त मुझे ख़याल आया कि

कहीं शरीर सरदार के नौकरों में से न हो। इसलिए मैंने कहा, 'मैं नहीं जाऊँगा।'"

यह सुनकर वह नाराज़ होकर कहने लगा, 'मैं तुझे सज़ा देने को किसी को भेज दूँगा।' फिर भी मैं उससे बचकर पहाड़ पर चढ़ गया।"

मोमिन ने पूछा, "तो क्या उसने किसी को भेजा?"

"जी। जब मैं उस सायदार जगह से गुज़र रहा था तो मैंने सुना कि कोई तेज़ी से मेरे पीछे पीछे आ रहा है। वह बादशाह का ख़ादिम था। कहने लगा, "पहले तुमने बूढ़े आदमी की बात मानी, इसलिए मैं तुम्हें सज़ा देने आया हूँ।" उसका नाम अदल था। वह मुझे इस तरह डंडा मारने लगा जैसा कि मार डालना चाहता हो। लेकिन उस वक़्त एक रहमदिल आदमी आया और अदल से कहने लगा कि "इसे ज़्यादा मत मारना।" पहले तो मैंने उसे नहीं पहचाना, लेकिन जब वह पहाड़ पर चढ़ने लगा तो मैंने उसके पाँवों पर निशान देखे और मुझे यक़ीन आया कि वह हमारा प्यारा शहज़ादा है।"

मोमिन ने कहा, "मैंने अदल के बारे में सुना है, लेकिन शहज़ादा उसे मुसाफ़िरों को हद से ज़्यादा सज़ा देने नहीं देता। क्या तुमने पहाड़ की चोटी पर महल देखा?"

"जी, देखा। शेर भी देखे। वह सोए पड़े थे। अभी सवेरा था, इसलिए आगे निकल जाने का फ़ैसला किया।"

“चौकस ने मुझे बताया कि उसने तुम्हें देखा। काश तुम महल में ठहर जाते! वहाँ के लोग बड़े अच्छे हैं। क्या वादी में किसी से मुलाक़ात हुई?”

“बेक़नाअत से मुलाक़ात हुई। वह तो सचमुच उकता देनेवाला बंदा है।”

“क्या तुम्हारी हलाकू से मुलाक़ात न हुई?”

“नहीं।”

मोमिन ने कहा, “मेरी हुई। मैं तो उससे बाल बाल बच गया।”

बातूनी

दोनों लड़के आपस में बातें करते ख़ुशी ख़ुशी चल रहे थे कि अचानक शाही रास्ता मामूल से ज़्यादा चौड़ा हुआ। अब क्या देखते हैं के सड़क के दूसरे किनारे एक और लड़का चला आ रहा है जो बड़ा ख़ूबसूरत है। वफ़ादार को ख़याल आया कि यह अच्छा साथी रहेगा। उससे पूछने लगा, "क्या तुम भी आसमानी शहर को जा रहे हो?"

लड़के ने जवाब दिया, "जी हाँ।"

वफ़ादार बोला, "तो आओ, इकट्ठे चलें। हम भी उसी तरफ़ जा रहे हैं।"

लड़के ने जवाब में कहा, "मैं भी यही चाहता हूँ।" वह क़रीब आकर वफ़ादार से बात करने लगा। उसे बादशाह, उसके ख़ादिमों और उसकी शरीअत के बारे में बहुत कुछ मालूम था। वफ़ादार को बड़ी ख़ुशी हुई कि एक ऐसा दोस्त मिला है जो इतना अच्छा और होशियार है।

अब वह मोमिन के इंतज़ार में जो उससे चंद क़दम पीछे था रुक गया और उसके कान में कहने लगा, "कैसा अच्छा लड़का है। मुझे यक़ीन है यह अच्छा साथी साबित होगा।"

मोमिन मुसकराया और पूछने लगा, "जानते हो यह कौन है?"

वफ़ादार बोला, "नहीं। इससे पहले मुझे कभी नहीं मिला।"

"सच? वह तो हमारे शहर का रहनेवाला है। उसका नाम बातूनी है। यह अकसर अपने आपको बादशाह का मुसाफ़िर जताता रहता है। लेकिन मुझे ख़याल तक न आया कि यहाँ तक पहुँच जाएगा।"

"क्या वह शरीर लड़का है?"

"मुझे शक है कि उसे बादशाह से मुहब्बत नहीं। तुम्हें जल्द ही पता चल जाएगा।"

अब वफ़ादार फिर दौड़कर बातूनी के पहलू में चलने लगा।

वफ़ादार ने सोचा, "मुमकिन है वह उतना बुरा न हो जितना मोमिन समझता है। हम उसे अपने साथ जाने पर आमादा कर लें।" लेकिन लड़के ने जितनी ज़्यादा बातें कीं उतना ही ज़्यादा वह वफ़ादार को बुरा लगा। आख़िर में उसे यक़ीन हो गया कि हम दोनों कभी दोस्त नहीं बन सकते। ज़ाहिर था कि बातूनी बड़ा शेख़ीबाज़ और बेवुक़ूफ़ है। बेशक वह बादशाह की तारीफ़ करके कहता था कि उसका ख़ादिम होना बड़ी ख़ुशक़िसमती है, तो भी वफ़ादार को उसमें आसमानी शहर में दाख़िल होने का कोई जज़बा दिखाई न दिया।

कुछ अरसा तो वफ़ादार ख़ामोशी से उसकी बातें सुनता रहा। वह बादशाह की मेहरबानियों का ज़िक्र करता रहा। फिर वफ़ादार कहने लगा, "लगता है कि तुम बादशाह की शरीअत के बड़े फ़रमाँबरदार हो।"

बातूनी को बड़ी शर्म महसूस हुई, क्योंकि गो वह अपने दोस्तों को तो बादशाह के अहकाम बताता रहता था, लेकिन ख़ुद वह हमेशा अपनी ही

मरज़ी के तहत चलता था। इसलिए बिगड़कर कहने लगा, "तुम्हें इससे क्या मतलब?"

वफ़ादार ने जवाब दिया, "अगर तुम बादशाह से मुहब्बत का इतना दावा करते हो तो तुम्हें अच्छी तरह उसकी ख़िदमत भी करनी चाहिए।"

बातूनी ने जवाब दिया, "तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि मैं उसकी ख़िदमत नहीं करता?"

वफ़ादार ने कहा, "मैं यक़ीन से तो नहीं कह सकता लेकिन मुझे शक है कि तुम उसकी ख़िदमत नहीं करते।"

"मैं नहीं समझता। तुम जैसे झूठे लड़के को मुझे नसीहत करने का हक़ कैसे हासिल हुआ," बातूनी ग़ुस्से से चिल्ला उठा। "मैं तुमसे बहुत बड़ा हूँ।"

"मेरा मतलब तुम्हें नसीहत करना नहीं, लेकिन मुझे यक़ीन नहीं आता कि तुम सचमुच आसमानी शहर के मुसाफ़िर हो।"

"मैं हक़ीक़ी मुसाफ़िर हूँ। लेकिन मैं जानता हूँ कि क्या बात हुई है। जब तुम पलटकर मोमिन से बात करने गए तो उसने मेरे बारे में बहुत-से क़िस्से बताए होंगे। अब तुम उन्हीं को दुरुस्त मानते हो।"

वफ़ादार की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दे, क्योंकि ज़ाहिर था कि बातूनी बहुत ही नाराज़ है। वह ख़ामोशी से चलता गया। आख़िर बातूनी बोला, "मुझे क्या परवा। अगर तुम मेरे बारे में बुरी बातें मानते हो तो यह तुम्हारी अपनी ग़लती है, मेरी नहीं। वैसे तुम बस जंगली

और बदतमीज़ लड़के हो, और मैं तुमसे और बातें नहीं करना चाहता। तुम अपना रास्ता लो और मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो।"

वह इतना नाराज़ था कि वफ़ादार ने कोई जवाब न दिया बल्कि उसका साथ छोड़कर मोमिन का इंतज़ार करने लगा। वह जल्द ही उससे आ मिला।

यह माजरा सुनकर मोमिन बोल उठा, "फ़िकर न करो। अच्छा हुआ कि वह हमारे साथ नहीं रहा। भला उससे हमें क्या हासिल हो सकता था।"

मुबश्शिर का मशवरा

दोनों मुसाफ़िर बातूनी से जुदा होने के थोड़े अरसे बाद एक वसी उजाड़ मैदान में पहुँच गए। वहाँ न तो कोई दरख़्त था और न ही छोटी छोटी सूखी घास पर कोई फूल था। शाही रास्ता उसमें से सीधा गुज़रता गया, और मोमिन को ख़ुशी हुई कि मैं इस वसी और सुनसान मैदान में अकेला नहीं। वफ़ादार की रिफ़ाक़त के बाइस वक़्त जल्द गुज़र गया। और जब पिछला पहर ख़त्म हुआ तो लड़कों को यह मालूम करके ख़ुशी हुई कि वह मैदान की सरहद से ज़्यादा दूर नहीं हैं। मैदान के आगे सरसब्ज़ और ख़ूबसूरत इलाक़ा था, और बड़ी उम्मीद थी कि जल्द ही बादशाह के किसी दूसरे मकान तक पहुँच जाएँगे, जहाँ सुबह तक आराम मिल जाए।

वफ़ादार को किसी के क़दमों की आहट सुनाई दी। वह मुड़कर देखा तो उसे एक पुराने दोस्त का जाना-पहचाना चेहरा नज़र आया।

एक पल तो वह चुप-चाप खड़ा रहा और फिर चिल्ला उठा, “मोमिन! मोमिन! देखते हो हमारे पीछे कौन आ रहा है?”

मोमिन ने मुड़कर देखा तो ख़ुशी से ताली बजाने लगा, “यह तो मुबश्शिर है।”

लड़कों को जब उनका अच्छा दोस्त नज़र आया तो बहुत ही ख़ुश हुए। मुबश्शिर ने उनसे बहुत कुछ सुना। वह मुसकराने लगे कि लड़के किस शौक़ से अपना तजरिबा और कारकरदगी सुना रहे हैं।

आख़िर में उसने कहा, "बादशाह ने तुम पर बड़ी मेहरबानी की है। बेशक तुम्हारा दुश्मनों से भी पाला पड़ा और मुसीबतें भी आईं, लेकिन उसने हमेशा तुम्हारी मदद की। वह अब भी तुम्हारी मदद करेगा। शर्त यह है कि तुम उस पर भरोसा रखो।"

मोमिन ने कहा,"वह यक़ीनन मदद करेगा।"

वफ़ादार ने मज़बूती से मुबश्शिर का हाथ पकड़ लिया, क्योंकि वह बात करने से शरमाता और क़दरे डरता था। लेकिन मुबश्शिर जानता था कि वह अपने सारे दिल से बादशाह से मुहब्बत और उस पर पूरा भरोसा रखता है। हाँ, अगर शरीर सरदार के नौकरों ने उस पर हमला किया तो वह भी मोमिन की-सी जुर्रत दिखाएगा।

मोमिन ने कहा, "मेहरबानी से रास्ते के बारे में हमें और बताइए। आपके ख़याल में अब से आसानी होगी या हमें फिर ख़तरनाक मक़ामात से गुज़रना पड़ेगा?"

मुबश्शिर संजीदा होकर कहने लगा, "मैं तुमसे मिलने आया हूँ, क्योंकि बहुत जल्द तुम लोग एक बड़े शहर में पहुँचनेवाले हो जो शरीर सरदार का है। यह ख़ूबसूरत शहर हर क़िस्म की क़ीमती चीज़ों से भरा पड़ा है। अकसर मुसाफ़िर जब इसमें दाख़िल होते हैं तो उनका जी ललचाता है

कि आगे जाने की बजाए वहीं रह जाएँ। मैं नहीं चाहता कि तुम बेवुक़ूफ़ बनो, इसलिए तुम्हें ख़बरदार करने आया हूँ।"

वफ़ादार बोला, "तो ऐसी जगह से हमें क्यों गुज़रना पड़ता है?"

"शरीर सरदार के हुक्म पर इस शहर को शाही रास्ते के दोनों तरफ़ तामीर किया गया ताकि इसके बीच में से गुज़रे बग़ैर मुसाफ़िर आसमानी शहर को न जा सकें।

"तो हमें क्या करना चाहिए?"

"गली-कूचों में से चुप-चाप गुज़रते जाना। बाज़ार की दुकानों में पड़ी हुई ख़ूबसूरत चीज़ों को आँख उठाकर न देखना और न ही बच्चों की बातों में आकर खेलने लगना। आम तौर पर तो शहरी लोग मुसाफ़िरों को इतनी तकलीफ़ नहीं देते, लेकिन कभी कभी वह उनसे बहुत बुरा सुलूक करते हैं।"

मोमिन ने पूछा, "तो क्या वह हमें क़त्ल कर देंगे?"

मुबश्शिर ने जवाब दिया, "मुमकिन है तुम्हें क़ैद कर दें। और बाज़ औक़ात उन्होंने यहाँ तक ज़ुल्म किया है कि जिन लोगों ने उनके सरदार की फ़रमाँबरदारी नहीं की उनको क़त्ल भी कर दिया। लेकिन घबराना नहीं। अगर तुम वहाँ मर भी गए तो बादशाह अपने फ़रिश्ते भेजेगा जो तुम्हें सीधे आसमानी शहर में ले जाएँगे जहाँ तुम्हें आइंदा किसी क़िस्म का दुख-दर्द नहीं होगा।"

जब मुबश्शिर ने लड़कों को अलविदा कहा तो सूरज ग़ुरूब हो रहा था। अंधेरा छाने से पेशतर उन्हें कुछ फ़ासले पर एक शानदार शहर की दीवारें और फाटक नज़र आए।

मोमिन ने वफ़ादार से कहा, "क्या तुम्हें डर लगता है?"

वफ़ादार ने जवाब दिया, "इतना भी नहीं। बादशाह हमारी हिफ़ाज़त करेगा। न सिर्फ़ यह बल्कि तुम्हारे पास तो हथियार भी हैं।

"हाँ। काश कि तुम भी ख़ूबसूरत महल में रुक जाते तो तुम्हें भी इसी क़िस्म के हथियार मिल जाते!"

वफ़ादार बोला, "कोई बात नहीं। मैं तुम्हारे क़रीब रहूँगा। अगर मैं क़त्ल हो गया तो मुझे और दुश्मनों का मुक़ाबला करने से नजात मिल जाएगी।" वह मोमिन का हाथ थामे चल दिया।

मोमिन को बादशाह का ख़याल आया, और वह कोशिश करने लगा कि ख़ौफ़ज़दा न हो। चौड़े दरवाज़े से गुज़रते ही वह उनके पीछे धड़ाम से बंद हो गया। उसने वफ़ादार के कान में कहा, "काश इस वक़्त मुबश्शिर मेरा हाथ पकड़ता!"

वफ़ादार बोला, "हाँ, शायद अगर हम उसे कहते तो वह हमारे साथ ही शहर में से गुज़रता। कितनी अफ़सोस की बात है कि हमें उस वक़्त ख़याल ही न आया।"

बुतलान मेला

शरीर सरदार को आसमानी शहर के नेक बादशाह से सख़्त दुश्मनी थी। मुसाफ़िरों को बरबादनगर से निकलकर बादशाह के मुल्क को जाते हुए देखकर वह बड़ी उलझन में रहता था। इसी लिए उसने तारीकतरीन वादी और बयाबान के पास ही बुतलान मेला नामी शहर आबाद किया था। वह तो जानता था कि उसके फाटकों तक पहुँचते पहुँचते मुसाफ़िर थककर चूर हो चुके होंगे। उन्हें आसानी से वरग़लाया जा सकेगा कि आगे शाही रास्ते पर जाने की बजाए वहीं रुककर आराम करें। इस मक़सद के तहत शहर में हर क़िस्म की उम्दा और क़ीमती चीज़ें रखी हुई थीं। हर तरफ़ कुशादा गलियाँ, शानदार मकान और उम्दा सामान से भरी हुई दुकानें। लोग दिन-भर आने-जाने में मसरूफ़ रहते। नफ़ीस लिबास पहने हुए वह तमाम वक़्त ऐशो-इशरत में गुज़ारते थे। शरीर सरदार उन्हें ख़ुश रखने के लिए हर क़िस्म की क़ीमती चीज़ें देता रहता ताकि एक पल के लिए भी बादशाह का ख़याल न आए। बुतलान मेला में कुछ अरसा रहने के बाद अकसर मुसाफ़िर तो बादशाह को बिलकुल भूल जाते थे। तब वह भी शरीर सरदार के नौकरों के साथ मिलकर नए मुसाफ़िरों को वरग़लाने लगते कि सफ़र तर्क कर दें।

दोनों लड़के शहर में पहुँचे तो अंधेरा हो चुका था। उन्होंने फाटक के पास सुबह तक एक महफ़ूज़ कोने में रात बसर की। ज्योंही सूरज निकला उन्होंने शहर में चलना शुरू किया, क्योंकि उनका ख़याल था कि सवेरे चले तो गलियों में भीड़ लगने से पहले पहले वह दूसरे फाटक पर पहुँच जाएँगे। लेकिन मोमिन के चमकते हुए हथियार और दोनों का सफ़ेद लिबास बुतलान मेला के बच्चों के लिबास से बहुत फ़रक़ था। वह अभी थोड़ी ही दूर गए थे कि चंद-एक बच्चों का ध्यान उन पर जा पड़ा।

लड़के चिल्लाने लगाने, "अरे वह हैं दो मुसाफ़िर। आओ चलें, उन्हें रोकें।"

मोमिन और वफ़ादार ने सुना कि लड़के उनके पीछे भागे आ रहे हैं, लेकिन उन्होंने इधर-उधर नहीं देखा।

मोमिन ने कहा, “हमें बिलकुल ध्यान नहीं देना चाहिए। क्या पता वह हमसे सिर्फ़ बात ही करें।”

लेकिन जब लड़के पहुँचे तो उन्होंने मुसाफ़िरों के गिर्द घेरा डालकर उनका रास्ता रोक लिया। उनमें से एक बोला, “बताओ, तुम कहाँ से आ रहे हो?”

दूसरा चिल्ला उठा, “और यह हथियार और यह सफ़ेद पोशाक तुम्हें किसने दी है?”

तीसरे ने पूछा, “तुम दुकानें क्यों नहीं देखते? तुम जैसे लड़के तलवार और ढाल नहीं लगाते। इन्हें बेचकर अच्छी अच्छी चीज़ें ख़रीद लो।”

तमाम लड़कों को बोलता सुनकर मोमिन को कोई जवाब बन न आता था। वह घबरा गया। लेकिन वफ़ादार ने जुर्रत से जवाब दिया, “हमें तुम्हारी चीज़ों की ख़ाहिश नहीं, हम तो आसमानी शहर को जा रहे हैं।”

यह सुनकर लड़कों ने बदतमीज़ी से हँसना शुरू किया। एक ने वफ़ादार को धक्का दिया। अगर उसने मोमिन का हाथ न पकड़ा होता तो गिर पड़ता।

इतने में बड़ी उम्र के लड़के भी दौड़कर वहाँ पहुँच गए, और चंद-एक और लोग भी तमाशा देखने को खड़े हो गए। साथ साथ शरीर सरदार का एक नौकर भी वहाँ पहुँच गया और मोमिन के चमकते हुए हथियार देखकर भाँप गया कि यह लड़के मुसाफ़िर हैं। वह भीड़ को चीरकर आगे

बढ़ा और दोनों को शाने से पकड़कर पूछने लगा, "क्या कर रहे हो? हमारा सरदार बच्चों को गलियों में लड़ने नहीं देता।"

मोमिन बोला, "हम नहीं लड़ रहे। हम तो चुप-चाप चल रहे थे।"

आदमी ने जवाब दिया, "यह झूठ है। तुम्हारी ही वजह से यहाँ भीड़ लगी है, और तुम ही इस गड़बड़ के ज़िम्मेदार हो। मेरे साथ चलो।"

वफ़ादार बोला, "हम बादशाह के मुसाफ़िर हैं। हम किसी से लड़ते-झगड़ते नहीं। हम तो सिर्फ़ शहर में से गुज़र रहे हैं।"

आदमी ने जवाब दिया, "मुझे बादशाह के मुसाफ़िरों का इल्म नहीं। मैं इतना जानता हूँ कि तुम दोनों बेवुक़ूफ़ और फ़सादी हो। लाज़िम है कि तुम्हें हाकिम के आगे पेश किया जाए।"

वह दोनों को पकड़कर गलियों में से होता हुआ हाकिम के पास पहुँच गया। शहर के बच्चे बेचारे मुसाफ़िरों का मज़ाक़ उड़ाते और उनकी नक़लें उतारते उनके पीछे पीछे चलते रहे।

बादशाह की ख़ातिर दुख

शहर का हाकिम शरीर सरदार का ख़ास आदमी था। उसे भी बादशाह और उसके मुसाफ़िरों से उतनी ही नफ़रत थी जितनी कि उसके मालिक को। जब वफ़ादार और मोमिन को उसके सामने पेश किया गया तो वह बड़ा ख़ुश हुआ कि उनको नुक़सान पहुँचाने का बहाना मिल गया है। कहने लगा, “तुम दोनों बड़े ख़राब लड़के हो। तुम्हें पिटवाकर लोहे के पिंजरे में बंद कर दिया जाएगा ताकि शहर के बच्चों को इबरत हो।”

मुसाफ़िरों के लिए कुछ कहना बेकार था। मोमिन की आँखों में हाकिम की ज़ालिमाना बात सुनकर आँसू आ गए। वह सोचने लगा, "जो कुछ मुझ पर बीत रही है क्या मेरी माँ को उसका इल्म है?"

वफ़ादार का रंग ज़रद हो गया, लेकिन वह मोमिन के कान में बोला, "मुबश्शिर ने कहा तो था कि यह हमें तकलीफ़ देंगे। लेकिन अगर हम मरे तो सीधे आसमानी शहर में पहुँचेंगे। मैं बादशाह की बातों से लगा रहूँगा, क्योंकि वह यक़ीनन मेरी मदद करेगा। रोने-धोने की ज़रूरत ही नहीं।"

यह कुछ सुनकर मोमिन ने इरादा कर लिया कि मैं भी जुर्रत दिखाऊँगा। उसे तरजुमान के घर में लगी हुई अच्छे चरवाहे की तस्वीर याद आई जिसमें चरवाहे के पाँव ज़ख़्मी थे और उनमें से ख़ून टपक रहा था। मोमिन ने ख़याल किया, "वह हमारा शहज़ादा है, फिर भी उसने दुख-दर्द की परवा न की। मैं भी परवा नहीं करूँगा, क्योंकि मैं भी बादशाह का ख़ादिम हूँ, और मेरी किताब में लिखा है कि बादशाह के ख़ादिमों को शहज़ादे की मानिंद होना चाहिए।" गो उसकी पीठ और बाज़ू भारी डंडों से ज़ख़्मी हो चुके थे तो भी उसने बहादुर सिपाही की तरह सब कुछ बरदाश्त किया और किसी क़िस्म का वावैला न किया।

लोहे का पिंजरा बाज़ार के दरमियान था। उसके आगे लोहे की सलाखें लगी हुई थीं। वह बिलकुल जंगली जानवरों का पिंजरा मालूम होता था। मार खाने के बाद एक आदमी मुसाफ़िरों के हाथ-पाँवों को ज़ंजीरों से बाँधकर उन्हें पिंजरे में बंद कर दिया और चला गया।

दोनों दर्द से बेहाल हो रहे थे। वह इतने कमज़ोर हो चुके थे कि उनमें खड़े होने की ताक़त न थी। दोनों फ़र्श पर बैठ गए और एक दूसरे को बादशाह के वादे याद दिलाकर तसल्ली देने लगे।

वफ़ादार बोला, "यह तो हमें मालूम था कि वह हम पर जुल्म ढाएँगे। लेकिन चूँकि सब कुछ बादशाह की ख़ातिर है इसलिए वह हमें ज़्यादा तकलीफ़ नहीं पहुँचने देगा।"

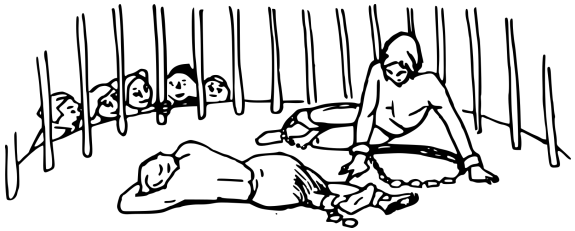

जब लोगों को मालूम हुआ कि बादशाह के यह मुसाफ़िर पिंजरे में बंद हैं तो देखते ही देखते बेहूदा लड़के-लड़कियों और मर्द-औरतों की भीड़ लग गई ताकि वफ़ादार और मोमिन का तमाशा देखकर उनका मज़ाक़ उड़ाएँ।

मुसाफ़िरों को चिड़ाने के लिए बुतलान मेला के रहनेवालों ने हर क़िस्म की बदकलामी की। लेकिन मोमिन और वफ़ादार ख़ामोश बैठे रहे। दोनों में से किसी ने भी उनकी बदकलामी और बदतमीज़ी पर ग़ुस्से का इज़हार न किया।

आख़िरकार जब चंद-एक लड़कों ने देखा कि मुसाफ़िर कितना सब्र कर रहे हैं तो उन्हें शर्म आई और चिल्ला उठे, "इन्हें छोड़ दो। देखो मार पड़ने पर भी उन्होंने शिकायत नहीं की। अब इन्हें मज़ीद मत सताओ।"

लेकिन दूसरे लड़के बेरहम थे। उन्हें बेचारे मुसाफ़िरों के ज़रद चेहरे और काँपते होंट देखने में बड़ा मज़ा आता था, इसलिए उन्होंने छेड़ना और मज़ाक़ करना जारी रखा। तब पहले लड़के उनसे लड़ने-झगड़ने लगे। थोड़ी ही देर में बाज़ार में फ़साद हो गया।

लड़ाई बंद कराने के लिए हाकिम को अपने आदमी भेजने पड़े। उसके हुक्म से मोमिन और वफ़ादार एक मरतबा फिर पीटा गया, क्योंकि उसे लगा कि झगड़ा उनके बाइस हुआ। फिर उन्हें वापस पिंजरे में बंद कर दिया गया जहाँ उन्होंने तमाम रात बड़े दुख में बसर की।

वफ़ादार के सफ़र का ख़ातमा

सुबह होते ही मोमिन और वफ़ादार को अदालत में पेश किया गया। मुंसिफ़ बूढ़ा था। चेहरे से सख़्तमिज़ाज और ज़ालिम मालूम होता था। हाकिम की मानिंद उसे भी बादशाह और मोमिन से नफ़रत थी। मोमिन और वफ़ादार को हथकड़ियाँ लगाकर उसकी कचहरी में पेश किया गया। वह गरजा, “तुम लोग कहाँ से आए हो और क्या कर रहे हो?”

तब हसद नामी एक लड़का उठकर मुंसिफ़ के सवालों का जवाब देने लगा। वह उनमें से एक था जिन्होंने सबसे पहले बाज़ार में मोमिन और वफ़ादार को सताया था। अब वह बोला, “मैं मोमिन और वफ़ादार को

बचपन से जानता हूँ। यह दोनों ना-फ़रमान और झगड़ालू हैं। यह शरीर सरदार की जो हमारे मुल्क का हाकिम है ताज़ीम नहीं करते।"

हसद के बाद दो और लड़कों ने बयान दिए। उन्होंने हसद के बयान की ताईद की। उन्होंने मुंसिफ़ को यह भी बताया कि अगर उन्हें खुला छोड़ दिया गया तो ख़तरा है कि वह बुतलान मेला के बच्चों को बहुत ख़राब करें। क्योंकि वह शहर के मालो-दौलत का मज़ाक़ उड़ाकर कहते हैं कि ऐसी फ़ज़ूल चीज़ रखना बेफ़ायदा है। वह यह भी दावा करते हैं कि हमें इससे शानदार शहर का इल्म है जहाँ के बादशाह का क़ानून शरीर सरदार से अच्छा है।

अदालत में बारह आदमी बैठे थे। उनका यह फ़र्ज़ था कि वह मुंसिफ़ को मशवरा दें कि वह सज़ा के लायक़ हैं या नहीं। यह बारह लोग पंचायत या ज्यूरी कहलाते थे। यह सब शरीर सरदार के मुलाज़िमों में से चुने जाते थे, इसलिए उनसे यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि वह बादशाह के किसी मुसाफ़िर की रिआयत या हमदर्दी करेंगे। तो भी वह जताते यही थे कि वह मुजरिमों के साथ इनसाफ़ करते हैं, इसलिए जब वफ़ादार ने बात करने की इजाज़त चाही तो मुंसिफ़ ने जवाब दिया, "तुम्हें अपने जुर्मों के एवज़ सीधे मौत की सज़ा मिलनी चाहिए। लेकिन हम तुम्हारा बहाना सुनेंगे। कहो जो कहना चाहते हो।"

मोमिन हैरान था कि वफ़ादार ऐसा दिलेर कैसे हो गया। गो उसका चेहरा ज़रद था लेकिन ख़ौफ़ज़दा मालूम नहीं होता था,

हालाँकि अदालत के लोग शरीर और ज़ालिम दिखाई देते थे। मोमिन को बाद में मालूम हुआ कि बादशाह की मदद से ही वह दिलेर और मज़बूत बना था। इसी लिए वह किसी क़िस्म का ख़ौफ़ महसूस नहीं कर रहा था बल्कि सबके सामने कह दिया कि मुझे बादशाह से बड़ी मुहब्बत है, और मैं किसी दूसरे की ताबेदारी नहीं करूँगा।

वफ़ादार का बयान सुनकर मुंसिफ़ पंचायत से कहने लगा, "इन लड़कों के बारे में जो कुछ हसद और उसके साथियों ने बयान किया वह आपने सुन लिया है। ख़ुद वफ़ादार इसका इनकार नहीं करता। वह हमारे सरदार की फ़रमाँबरदारी नहीं करेगा इसलिए हमारे शहर के क़ानून की रू से वह सज़ाए-मौत का हक़दार है।"

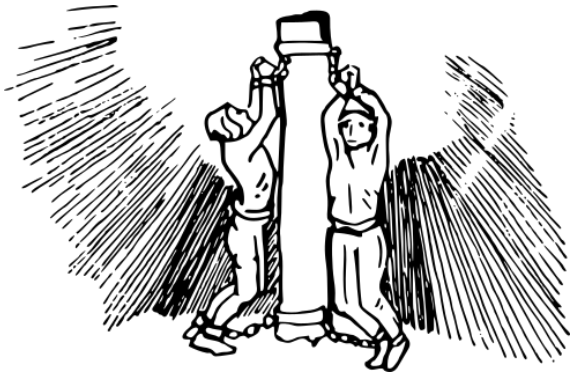

तब उन बारह आदमियों ने जवाब दिया, "ज़ाहिर है कि दोनों बड़े शरीर लड़के हैं। लेकिन वफ़ादार दूसरे से बदतर है, क्योंकि वह हमारे सरदार के ख़िलाफ़ बात करने से भी नहीं डरता। उसे मौत की सज़ा देनी चाहिए जबकि मोमिन को वापस क़ैदख़ाने में भेजा जाए।"

बेचारे मोमिन का दिमाग़ इतना परेशान था कि उसे समझ न आई कि पंचायतवाले क्या कह रहे हैं। जब सिपाही वफ़ादार को कचहरी से निकालकर ले गए तो वह घबराया कि उसे कहाँ ले जा रहे हैं? थोड़ी ही देर बाद सिपाही मोमिन को भी बाज़ार में ले गए जहाँ उसके साथी को ज़ालिम लोगों के हवाले कर दिया गया था। यह लोग अपने तेज़धार हथियारों से उसे मार मारकर ज़ख़मी करने लगे।

मोमिन चिल्ला उठा, "वफ़ादार, वफ़ादार!" लेकिन वफ़ादार ने कोई जवाब न दिया। उसकी आँखें ऊपर आसमान की तरफ़ देख रही थीं, और उसका चेहरा अजीब तौर से रौशन था। उसके चेहरे पर ऐसा नूर था जैसा कि मोमिन को अपनी माँ के चेहरे पर नज़र आया था जब उसने उसे ख़ाब में देखा था।

जहाँ वफ़ादार खड़ा था उसके ऊपर हवा में फ़रिश्तों की एक टोली भी नज़र आई। उन्होंने अपने पर फैलाए हुए थे। मोमिन जानता था कि वह वफ़ादार की रूह को उसके वतन यानी आसमानी शहर पहुँचाने के मुंतज़िर हैं।

बुतलान मेला से रिहाई

मोमिन जानता था कि फ़रिश्ते वफ़ादार को उठाकर हिफ़ाज़त से बादशाह के हुज़ूर पहुँचा देंगे। वह चंद लमहों के लिए इस बात को भूल गया कि वह बुतलान मेला में शरीर सरदार के मुलाज़िमों के दरमियान घिरा हुआ है। शहर के लड़कों ने अचानक ख़ुशी का नारा लगाया, क्योंकि मुसाफ़िर को सज़ा पाते देखकर उन्हें बड़ी ख़ुशी हो रही थी। उनके शोर से मोमिन चौंक उठा। उसने एक मरतबा फिर अपने बिछड़े दोस्त को देखने की कोशिश की।

लेकिन बादशाह बड़ा रहीम है। वह नहीं चाहता था कि मोमिन को पता चले कि बेचारे वफ़ादार को कैसी तकलीफ़ पहुँच रही थी। उसकी आँखों के सामने धुंद छा गई, और वह चिल्ला उठा, “वफ़ादार, वफ़ादार!” इतने में एक अजीब एहसास उस पर छा गया। अचानक उसे लगा कि मेरी प्यारी माँ भीड़ चीरकर मुझे अपने बाँहों में उठाकर खुली जगह में ले जा रही है जहाँ न तो सिपाही हैं और न ही शोर मचानेवाले।

वह कुछ अरसा वहाँ पड़ा रहा। उसे इतनी कमज़ोरी महसूस हो रही थी कि उससे न तो हिला जाता था और न ही उसमें बात करने की हिम्मत थी। लेकिन जब आँखें खुलीं तो उसने अपने आपको क़ैदख़ाने में छोटे-से

बिस्तर पर पाया जहाँ एक औरत उस पर झुकी हुई थी। उसका लिबास बुतलान मेला की दीगर औरतों की तरह भड़कीला था।

वह सख़्तदिल नज़र नहीं आती थी, लेकिन उसकी शक्ल मोमिन की माँ से मुख़्तलिफ़ थी। वह क़ैदख़ाने के दारोग़े की बीवी थी। जब सिपाही उस बेहोश लड़के को उठाकर क़ैदख़ाने में लाए थे तो उसे देखकर औरत को बहुत अफ़सोस हुआ था। थोड़ा-सा पानी मँगवाकर उसने आहिस्ता आहिस्ता उसके मुँह-हाथ धोए और उसके होश में आने तक उसके पास ठहरी रही।

जब लड़का होश में आया तो औरत ने कहा, "ऐ बच्चे, तुम तो सफ़र करने के लायक़ नहीं। मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे पास रहो और मैं तुम्हारी परवरिश करूँ।"

मोमिन कहने लगा, “आप बड़ी मेहरबान हैं, लेकिन मेरा ठहरना नामुमकिन है। मैं बादशाह के पास जा रहा हूँ।”

औरत ने जवाब दिया, “अच्छा। हाँ, एक बार मैं भी बादशाह के पास जाने लगी थी, लेकिन रास्ता कठिन था। तब से मैं शहर में ख़ुशी ख़ुशी रही हूँ।”

मोमिन बोला, “इससे ज़्यादा ख़ुश आप बादशाह के पास होंगी। वफ़ादार वहाँ पहुँच गया है। मैंने देखा कि फ़रिश्ते उसके मुंतज़िर थे। यक़ीन करें, अगर मुझे क़ैदख़ाने से बाहर निकाला गया तो मैं जब तक सफ़र ख़त्म न हुआ जितनी जल्दी हो सके चलता रहूँगा।”

लड़के के बालों को नरमी से सहलाकर औरत कान में कहने लगी, “वफ़ादार तो मर गया है। मुझे सुनकर बड़ा अफ़सोस हुआ, लेकिन वह तुम्हें नहीं मारेंगे।”

मोमिन ने कहा, “मुझे इसकी परवा नहीं, क्योंकि इस तरह मैं सीधा आसमानी शहर पहुँच जाता। और अब शायद मुझे हमेशा के लिए यहाँ रहना पड़े या अगर नहीं तो सारा सफ़र अकेले ही तय करना पड़े।”

औरत ने जवाब दिया, “वह तुम्हें क़ैद में थोड़े दिन रखेंगे। मेरे साथ ठहरो। मैं तुम्हारे साथ मेहरबानी से पेश आऊँगी।”

लेकिन मोमिन ने सर हिलाया, “मैं ठहर नहीं सकता। मुझे बादशाह से मुहब्बत है, और मुझे उसके पास जाना है।”

चंद दिनों बाद क़ैदख़ाने का दारोग़ा उसके पास आकर कहने लगा कि शहर के हाकिम ने हुक्म दिया है कि तुम्हें बरी कर दिया जाए। यों मोमिन

क़ैदख़ाने से निकलकर दुबारा आसमानी शहर की सिम्त चल पड़ा। हमदर्द औरत ने उसे जाते देखकर अफ़सोस किया और प्यार करते हुए कहा, "कभी मुझे भी याद करना।"

मोमिन ने कहा, "मैं बादशाह को बता दूँगा कि आपने मुझ पर मेहरबानी की है। मुमकिन है किसी दिन आप भी दुबारा बादशाह के मुसाफ़िर बन जाएँ। अगर मैंने आसमानी शहर में आपको आते देखा तो पहचान लूँगा।"

वह ख़ामोशी से बाज़ार में उतरने लगा। चूँकि अब तक पूरी तरह तनदुरुस्त नहीं हुआ था इसलिए तेज़ चलने के क़ाबिल नहीं था। अब तक ख़तरा था कि लड़के दुबारा उसका पीछा करें। लेकिन वफ़ादार की मौत से उनका दिल ठंडा हो चुका था। पीले चेहरेवाले मुसाफ़िर को देखकर उन्होंने उसका मज़ाक़ तो उड़ाया लेकिन न तो उसे हाथ लगाया और न नुक़सान पहुँचाया। शहर के फाटक से निकलते वक़्त उसे अपने पीछे किसी के भागने की आवाज़ आई। फिर उसे अपने कंधों पर एक हाथ महसूस हुआ। वह घबरा गया कि क्या मुसीबतें फिर से शुरू हो गई हैं? लेकिन रोकनेवाला लड़का उसके कान में कहने लगा, "मुझे भी अपने साथ ले चलो। मैं अब यहाँ ठहर नहीं सकता।"

मोमिन ने कहा, "तुम्हारी मुराद बादशाह का मुसाफ़िर बनने से है?"

"हाँ। मुझे पुरउम्मीद कहते हैं, और मैं तुम्हारे साथ जाना चाहता हूँ। सड़क पर पहुँचने के बाद मैं तुम्हें सारा माजरा सुनाऊँगा।"

इब्नुल-वक़्त

मोमिन ने ज़रा तेज़ चलने की कोशिश की, और पुरउम्मीद उसके साथ लगा रहा। लेकिन जब तक शहर से दूर नहीं हुए वह उससे बात करने से डरता था। आख़िर कहने लगा, “हमें इस बात का बड़ा अफ़सोस हुआ कि उन्होंने वफ़ादार को क़त्ल कर दिया। वह कितना दिलेर था। और मुझे यक़ीन है कि नेक भी था। शहर में और लड़के-लड़कियाँ भी हैं जिनका यह कहना है कि अगर शहर में ऐसे ज़ुल्म होते रहे तो हम शहर में ज़्यादा अरसा नहीं ठहरेंगे। जब मैं क़ैदख़ाने के पास से गुज़र रहा था तो तुम बाहर आ गए। फिर जब मैंने देखा कि कोई देखनेवाला नहीं तो मैं तुम्हारे पीछे दौड़ पड़ा। तुमने मेरे आने का बुरा तो नहीं मनाया?”

मोमिन ने जवाब दिया, “नहीं, अगर तुम्हें बादशाह से हक़ीक़ी मुहब्बत हो तो। मेरा ख़याल था कि बाक़ी रास्ता मुझे अकेले ही काटना पड़ेगा। अगर तुम साथ हो तो मुझे बड़ी ख़ुशी होगी।”

पुरउम्मीद ने जवाब दिया, “हाँ, मैं ज़रूर चलूँगा। मैं पहले से बड़ा बेचैन था और चाहता था कि किसी न किसी दिन भाग जाऊँ।”

मोमिन पुरउम्मीद से यह सवाल करने ही वाला था कि वह कब से बुतलान मेला में है कि उन्होंने एक और लड़के को जा लिया जो आहिस्ता

आहिस्ता चला जा रहा था। वह एक ऐसे शहर से आया था जो बुतलान मेला से ज़्यादा दूर नहीं था। उसके बाशिंदे अपने आपको बादशाह के ख़ादिम ज़ाहिर करते थे और दावा करते थे कि उन्हें उससे बेहद मुहब्बत है, लेकिन उनका तौर-तरीक़ा ऐसा था कि जैसे शरीर सरदार उनका हाकिम हो। शरीर सरदार उन्हें पसंद करता था। जब उसे पता चलता था कि उनमें से कोई मुसाफ़िर बन रहा है तो वह उसे रोकने की कोशिश नहीं करता था, क्योंकि उसे यक़ीन था कि जब भी उन्हें ज़रा-सी मुश्किल पेश आई या ख़तरा महसूस हुआ तो वह सीधे वापस आ जाएँगे।

लड़के का नाम इब्नुल-वक़्त था। वह थोड़ी देर तक मोमिन और पुरउम्मीद के साथ चलता रहा। बताने लगा कि मेरे तमाम अज़ीज़ और रिश्तेदार बड़े अमीर हैं। वह अपने ख़ानदान पर बड़ा नाज़ कर रहा था और मोमिन और पुरउम्मीद को हिक़ारत की नज़र से देखने लगा।

सूरज निकल आया था, और ठंडी हवा चल रही थी। पुरउम्मीद बोला, "कैसा सुहाना दिन है!"

इब्नुल-वक़्त ने जवाब दिया, "हाँ, सफ़र के लिए तो बहुत ही सुहाना है। वैसे हमारे शहर के मुसाफ़िर सर्दियों में सफ़र शुरू नहीं करते। हमें गरमियों का मौसम पसंद है। हवा और बारिश के ख़िलाफ़ जिद्दो-जहद करना बेवुकूफी है।"

मोमिन बोला, "गरमियों में भी तूफ़ान आते रहते हैं।"

इब्नुल-वक़्त ने कहा, “इनमें सफ़र करने की ज़रूरत नहीं। अगर बारिश हो जाए तो मैं किसी घनी झाड़ी के नीचे घुस जाऊँगा और जब तक बारिश रुक न जाए वहाँ से नहीं निकलूँगा।”

मोमिन मुसकराया, “मुझे यक़ीन है कि अच्छे मुसाफ़िर कभी ऐसा नहीं करते। हमें मौसम की कभी परवा नहीं करनी चाहिए।”

इब्नुल-वक़्त कहने लगा, “तुम्हारी जो मरज़ी हो करो। इस पर झगड़ने की ज़रूरत नहीं। अगर तुम तूफ़ान में चलना पसंद करते हो तो करो। लेकिन मैं तो उस वक़्त का इंतज़ार करूँगा जब तक कि वह गुज़र न जाए।”

मोमिन ने अपनी किताब में पढ़ा हुआ था कि उन लोगों के साथ जो बादशाह के सही मुसाफ़िर न हों दोस्ती रखना हमाक़त है। इसलिए कहने लगा, “मैं समझता हूँ अगर तुम्हारा ऐसा ख़याल है तो हम तुम्हारे अच्छे साथी साबित नहीं होंगे। हम तो सीधे ही जाएँगे ख़ाह आसमान साफ़ हो या तूफ़ान आए।”

इब्नुल-वक़्त ने जवाब दिया, “बहुत अच्छा। तुम अपनी मरज़ी के मुताबिक़ जाओ। तुम्हारे आने से पहले मैं मुतमइन था, और अब मैं चाहता भी नहीं कि तुम मेरे साथ रहो।”

पुरउम्मीद के साथ चलते हुए मोमिन ने कहा, “उसे नाराज़ करने का अफ़सोस है, लेकिन इसके सिवा कोई चारा भी न था। फ़र्ज़ करो वह

हमारे साथ होता और तूफ़ान आ जाता तो वह हमें वरग़लाकर वापस मोड़ लेता।"

इब्नुल-वक़्त अपने आपको बिलकुल तनहा समझ रहा था। जब मोमिन और पूरउम्मीद उसे मिले थे तो उसे बड़ी ख़ुशी हुई थी, लेकिन वह बेहद सुस्त और अपनी ऐश का ज़्यादा दिलदादा था, इसलिए बादशाह की दिल से ख़िदमत करने के लिए तैयार न था। उसका जी तो चाहता था कि उनके पीछे दौड़े और कहे कि मुझे तूफ़ान वग़ैरा की कोई परवा नहीं। लेकिन वह अपनी जेब में हाथ डालकर यों टहलने लगा जैसे कि उनसे बिछड़ने का उसे कोई अफ़सोस न हो। तो भी दिल में वह सोचने लगा, "बेशक इससे कुछ फ़रक़ तो नहीं पड़ता। यह बेवुक़ूफ़ लड़के हैं, लेकिन उनका साथ जाना अकेले रहने से तो अच्छा था।"

इससे पहले कि इब्नुल-वक़्त फ़ैसला करता कि उसे क्या करना चाहिए उसे पीछे से शोरो-ग़ुल सुनाई दिया। मुड़कर जो देखा तो उसके तीन हमजमात इशारा करके कह रहे थे, "हमारा इंतज़ार करो।"

वह उसके पास आकर कहने लगे, "तुम कहाँ जा रहे हो?"

इब्नुल-वक़्त बोला, "घर में तो कोई ख़ास काम नहीं था, इसलिए मैंने सोचा सफ़र पर ही क़िस्मत-आज़माई करूँ।"

"हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे। वह आगेवाले लड़के कौन हैं? हमने देखा तुम उनसे बात कर रहे थे।"

इब्नुल-वक़्त ने जवाब दिया, “वह भी मुसाफ़िर हैं, लेकिन हमारी तरह के नहीं। वह बादशाह के ख़ादिम हैं। मैंने उन्हें कह दिया कि मैं तो तब ही सफ़र करूँगा जब मौसम अच्छा होगा। इस पर वह कहने लगे कि तुम अपनी मरज़ी करो। मुझे आँधी-तूफ़ान में एड़ियाँ रगड़ने में कोई फ़ायदा नज़र नहीं आता। तूफ़ान गुज़र जाने तक इंतज़ार करना ही अच्छा है।”

एक लड़का बोला, “इसमें क्या शक है। लेकिन बादशाह के ख़ादिम हमेशा ऐसे ही होते हैं। अगर उनकी हाँ में हाँ न मिलाई जाए तो वह ताल्लुक़ात ही तोड़ देते हैं। उन्हें जाने दो। हमारी यह छोटी-सी टोली अच्छी ही रहेगी।”

देमास और चाँदी की कान

इब्नुल-वक़्त और उसके हमजमात आपस में गप-शप करते चलते गए। मोमिन और पुरउम्मीद अभी उनके नज़दीक ही थे कि चारों लड़के उनके पीछे दौड़कर आए और उनसे बेहूदा सवाल करने लगे। वह पूछने लगे कि क्या हमारे बहुत-से पसंदीदा काम ग़लत हैं? क्या वह बादशाह को नाराज़ करने का बाइस बन सकते हैं? वह यह समझते थे कि मोमिन इन सवालों का जवाब सच्चाई और दिलेरी से नहीं दे सकेगा। उन्हें उम्मीद थी कि वह उसे बुज़दिल ठहरा सकेंगे। गो मोमिन शरमीला और डरपोक-सा बच्चा था तो भी वह सच कहने से कभी ख़ौफ़ नहीं खाता था। उसने बादशाह से सच्चे दिल से मुहब्बत करने का सबक़ सीखा था। इसलिए जो भी इब्नुल-वक़्त और उसके बदतमीज़ दोस्त कहते उसका उस पर कोई असर नहीं हो सकता था और न ही वह उनकी मानिंद बन सकता था। उसने उनके तमाम सवालों का बड़ी जुर्रत और सच्चाई से जवाब दिया। इससे उन्हें अपने आप पर इतनी शर्म आई कि उन्होंने मज़ीद पूछना छोड़ दिया। मोमिन बड़ा ख़ुश हुआ कि उन्होंने उसका पीछा छोड़ दिया। वह और पुरउम्मीद एक साथ चलते रहे, और इब्नुल-वक़्त अपने तीनों सुस्त साथियों के साथ पीछे रह गया। मुसाफ़िर जल्द ही एक तंग मैदान में पहुँच

गए जहाँ का रास्ता हमवार और आसान था। एक तरफ़ एक पहाड़ी थी जिसके एक पहलू में ग़ार का मुँह दिखाई दिया। पहाड़ी पर एक लड़का खड़ा था। जब उसने मोमिन और पुरउम्मीद को वहाँ से गुज़रते देखा तो वह इशारा करके कहने लगा, "ऊपर आओ, मैं तुम्हें कुछ दिखाऊँ।"

मोमिन बोला, "क्या?"

लड़के ने कहा, "चाँदी की कान। इसमें इतना ख़ज़ाना है कि तुम जितना चाहो अपने सफ़र में ले जा सकते हो।"

पुरउम्मीद कहने लगा, "आओ चलकर देखें।"

लेकिन मोमिन उसे पीछे खींचकर कहने लगा, "नहीं, नहीं। यह जगह महफ़ूज़ नहीं।" फिर उसने उस लड़के को जिसका नाम देमास था बुलाकर पूछा कि क्या वह जगह ख़तरनाक तो नहीं?"

देमास को ख़ूब पता था कि जगह सचमुच ख़तरनाक है, लेकिन चूँकि वह शरीर सरदार का मुलाज़िम था और इस ग़रज़ से भेजा गया था कि मुसाफ़िरों को वरग़लाए इसलिए जवाब में बोला, "अगर एहतियात बरतो तो महफ़ूज़ है।"

लेकिन मोमिन पुरउम्मीद से कहने लगा, "हम नहीं जाएँगे। मुझे याद है मैंने इसके बारे में सुन रखा है, और तुम जानते हो कि शाही रास्ता छोड़े बग़ैर वहाँ नहीं जा सकते।"

इस पर देमास चिल्ला उठा, "अगर तुम यहाँ न आओ तो कम-से-कम मेरा इंतज़ार करो। मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा। मैं भी मुसाफ़िर हूँ।"

मोमिन ने जवाब दिया, “मैं तुम्हें बादशाह का मुसाफ़िर नहीं समझता। वरना तुम हमारे रास्ते में रुकावट न डालते। हम किसी का इंतज़ार नहीं कर सकते।”

देमास ने और कुछ न कहा बल्कि इब्नुल-वक़्त और उसके साथियों का इंतज़ार करने लगा। वह भी ज़्यादा फ़ासले पर नहीं थे। पुरउम्मीद मुड़ा कि देखे वह क्या करते हैं। उन्हें न तो बादशाह से मुहब्बत थी और न ही आसमानी शहर से कोई ताल्लुक़ था। महज़ दिखाने के लिए कहते थे कि वहाँ जा रहे हैं। इसलिए पहाड़ी में छिपे हुए ख़ज़ाने का ज़िक्र सुनकर वह सीधे ग़ार के मुँह पर पहुँच गए। देमास को मालूम था कि जो भी इसमें चाँदी खोदने के लिए दाख़िल होते वह या तो गुम हो जाते या फिर क़त्ल हो जाते हैं। लेकिन उसने इब्नुल-वक़्त और उसके साथियों को यह बताया कि जगह बिलकुल महफ़ूज़ है। वह लोग उसकी हर बात तसलीम करने पर तैयार थे।

मोमिन और पुरउम्मीद ने उन्हें ग़ार के अंदर तो जाते देखा लेकिन वह काफ़ी देर के बाद भी न निकले। लगता था कि वहाँ के अंधेरे और पेचदार रास्तों में फिरते फिरते वह गुम हो गए और वापस आने का कोई रास्ता न मिला।

जब मुसाफ़िर पहाड़ी से आगे कुछ फ़ासले पर निकल गए तो पुरउम्मीद रुककर कहने लगा, “अरे, यह क्या है?”

मोमिन ने उसके इशारे की तरफ़ देखा तो सड़क के किनारे खड़ी हुई एक अजीब सूरत दिखाई दी। जब वह नज़दीक पहुँचे तो देखा कि उसमें हरकत नहीं है। उसका चेहरा पीछे की तरफ़ यानी आसमानी शहर की मुख़ालिफ़ सिम्त में मुड़ा हुआ है।

पुरउम्मीद ने कहा, "क्या यह भी मुसाफ़िर थी?"

मोमिन ने कहा, "यह तो नहीं जानता अलबत्ता कोई बुत दिखाई देता है। पता नहीं इस सड़क के किनारे क्यों रखा गया है!"

उन्होंने उसके गिर्द चक्कर लगाकर उसे ग़ौर से देखा। आख़िरकार पुरउम्मीद ने उस औरत के माथे पर चंद अलफ़ाज़ खुदे हुए देखे। अलफ़ाज़ इतने पुराने और घिसे हुए थे कि वह उन्हें पढ़ न सका। लेकिन कुछ कोशिश के बाद मोमिन ने उन्हें पढ़ लिया।

"लूत की बीवी को याद करो।"

मोमिन बोला, "अब समझा, क्या बात है। मैंने उसके बारे में ख़ूबसूरत महल की लाइब्रेरी में पढ़ा है।"

फिर उसने पुरउम्मीद को क़िस्सा सुनाया : "बहुत दिन गए बादशाह ने एक आदमी बनाम लूत को उसकी बीवी और दो बेटियों समेत एक शहर से छुड़ाया जो अपनी बुराई के बाइस तबाह होनेवाला था। उसने एक फ़रिश्ता भेजा था कि उन्हें बाहर निकाल लाए। फ़रिश्ते ने उन्हें हिदायत की थी कि वह पीछे न देखें, लेकिन लूत की बीवी ने पीछे देखा। जब वह मुड़ी तो उसका जिस्म पत्थर हो गया और वह नमक का सतून बन गई।"

पुरउम्मीद ने कहा, “कितनी दहशतनाक बात है। तो क्या उसे हमें डराने के लिए यहाँ रखा गया है?”

“मेरे ख़याल में डराने के लिए नहीं बल्कि ख़बरदार करने के लिए। मैं ख़ुश हूँ कि देमास के बुलाने पर हम पहाड़ी के ऊपर नहीं गए।”

“मेरा भी यही ख़याल है। मैं यह कभी नहीं चाहता कि बादशाह मुझे सज़ा दे।”

अमन की वादी

उस दिन मोमिन की कमज़ोरी के बाइस दोनों लड़कों को मजबूरन आहिस्ता चलना पड़ा। पुरउम्मीद ने कहा, “कहाँ सोएँ? तुमसे तो रात-भर चला नहीं जाएगा और सड़क पर लेटना ख़तरे से ख़ाली नहीं।”

मोमिन ने जवाब दिया, “मुमकिन है यहाँ भी ख़ूबसूरत महल जैसा कोई मकान हो। मुझे वहाँ बड़ा मज़ा आया। तुम क्या जानो कि तमीज़ और उसकी बेटियाँ मेरे साथ कितनी मेहरबानी से पेश आईं।”

इस पर पुरउम्मीद ने उससे उनके बारे में सवाल करने शुरू कर दिए। मोमिन ने जो कुछ महल में देखा और सुना था उसे बताया। लेकिन दिन-भर के सफ़र के बाद मोमिन की ताक़त जवाब देने लगी। थोड़ी देर में वह

इतना थक गया कि उससे बोला तक नहीं जाता था और न पुरउम्मीद की मदद के बग़ैर चला जाता था। पुरउम्मीद बड़ा हलीम और हमदर्द था। जितना भी हो सके उसने अपने थके-माँदे साथी को ख़ुश करने की कोशिश की। लेकिन वह यह देखकर बड़ा फ़िकरमंद हुआ कि मोमिन का चेहरा क़दम बक़दम ज़रद होता जा रहा है। वह सोचने लगा, "काश आराम करने की कोई जगह मिल जाए!" जब रास्ते पर शाम के साय छाने लगे तो उसने बड़ा ढूँडा कि कहीं कोई रौशनी नज़र आए जिससे पता चल जाए कि वह किसी मकान के नज़दीक हैं और वहाँ सुबह तक ठहर सकें। लेकिन कोई रौशनी नज़र न आई। रात पड़ गई, लेकिन मुसाफ़िर आहिस्ता आहिस्ता बढ़ते गए। पुरउम्मीद ने मोमिन से कहा भी कि घास पर लेट जाओ तो मैं पहरा दूँगा, लेकिन मोमिन न माना।

वह कहने लगा, "हम चलते जाएँगे। बादशाह हमें कभी नहीं भूलेगा। वह जानता है कि हम कितने थके हुए हैं। वह यक़ीनन हमें आराम का मौक़ा देगा।"

तारीक आसमान पर सितारे चमकने लगे, और चाँद पहाड़ों में से निकलकर शाही रास्ते पर रौशनी बिखेरने लगा। तब पुरउम्मीद ने देखा कि रास्ता वसी होता जा रहा है, और दूर एक चौड़ा दरिया बह रहा है। वह चिल्ला उठा, "हम एक ख़ूबसूरत मुल्क में पहुँचनेवाले हैं। मोमिन, ज़रा उधर तो देखो! दरिया रास्ते के क़रीब है। रास्ता उस सब्ज़ाज़ार से निकलेगा जिसके चारों तरफ़ बाड़ है। यह जगह बिलकुल महफ़ूज़ है।"

आराम की उम्मीद से मोमिन की क़दरे हिम्मत बँधी। थोड़ी देर बाद जब वह दरिया पर पहुँचे तो मालूम हुआ कि पुरउम्मीद दुरुस्त कह रहा है। शाही रास्ता दरिया के क़रीब से गुज़रता था। उस दरिया का नाम ज़िंदगी का दरिया था, और आस-पास की ज़मीन के गिर्द मज़बूत बाड़ लगी हुई थी जिससे यह ख़ूबसूरत सब्ज़ाज़ार महफ़ूज़ थी। उसमें नरम घास और फूल उगे हुए थे। ऊँचे और फैले हुए पेड़ों के साय में मुसाफ़िर दुश्मनों से आराम पा सकते थे।

थके-माँदे मोमिन ने दरिया के किनारे लेटकर इतमीनान का साँस लिया। पुरउम्मीद भी उसके क़रीब बैठ गया और दरिया के बहते पानी में चाँदनी का नज़ारा करने लगा। यकायक वह मोमिन के हाथ पर हाथ मारकर कहने लगा, "यहाँ शरीर सरदार का गुज़र नहीं।"

मोमिन ने कहा, "नहीं, बिलकुल नहीं। मुझे यक़ीन है कि वह यहाँ नहीं आता। देखो कितनी ख़ामोश और पुरसुकून जगह है।"

मुसाफ़िर एक दूसरे के पहलू में लेट गए और सुबह तक आराम से सोए रहे। दिन चढ़ा तो बादशाह की तरफ़ से एक पैग़ाम पहुँचा, "यह अमन की वादी है। जब तक मोमिन में ताक़त नहीं कुछ दिन यहाँ ठहरो। यहाँ तुम्हें काफ़ी ग़िज़ा मिलेगी। पेड़ फल से लदे हैं, और दरिया का पानी पीकर तुमको क़ुव्वत हासिल होगी और तुम तरो-ताज़ा हो जाओगे।"

लड़कों ने हफ़ता-भर इस ख़ूबसूरत वादी में गुज़ारा। हर रोज़ उन्हें ज़िंदगी का भरपूर मज़ा आता रहा, यहाँ तक कि मोमिन ने बेधड़क होकर

तमाम हथियार उतार दिए और किसी ख़ुशनुमा दरख़्त के तने से टेक लगाकर आराम से लेटा रहा। पुरउम्मीद भी उसके पास लेटा रहता या फूल तोड़ता या फल इकट्ठा करता रहता, क्योंकि फल इतना पक चुका था कि ख़ुद बख़ुद बोझल शाख़ों से गिरता रहता था।

इतनी मुसीबतें उठाने के बाद मोमिन को अमन की वादी में चैन नसीब हुआ, और जल्द ही उसके गालों पर सुर्ख़ी खेलने लगी। उसके हाथ-पाँव मज़बूत हो गए, और उसे महसूस हुआ कि वह सफ़र करने के क़ाबिल हो गया है। तब वह कहने लगा, “लगता है कि हम आसमानी शहर से ज़्यादा दूर नहीं। वहाँ पहुँचकर बड़ी ख़ुशी होगी। इतना आराम करने के बाद अब हमारी रफ़्तार भी तेज़ हो जाएगी।”

मुतबादल रास्ता

मुसाफ़िर सुबह-सवेरे अमन की वादी छोड़कर पूरे दिन शाही रास्ते पर चलते रहे। पिछले पहर वह ऐसे मक़ाम पर पहुँचे जहाँ बाएँ हाथ एक सब्ज़ाज़ार मिला जिस की बाड़ को पार करने के लिए एक जगह की ऊँचाई कुछ कम थी। उसे मुतबादल रास्ता कहते थे, और उसका मालिक नाउम्मीद नामी एक ज़ालिम और ताक़तवर देव था। वह शरीर सरदार की फ़ौज का बड़ा बहादुर सिपाही था, और उसकी रिहाइश सब्ज़ाज़ार से आगे एक मज़बूत क़िले में था। यह क़िला शाही रास्ते से नज़र आता था। यह सब कुछ मोमिन की किताब में लिखा हुआ था, लेकिन उस वक़्त उसे ख़याल तक न आया कि उस पर नज़र डाले। दोनों लड़कों को थकावट महसूस हो रही थी। शाही रास्ते का यह हिस्सा खुरदरा और पथरीला था जिससे लड़कों के पाँव ज़ख़मी होकर दुखने लगे थे। दूसरा रास्ता देखकर मोमिन रुका और उस तरफ़ झाँकने लगा। बाड़ तो सब्ज़ाज़ार को बादशाह के रास्ते से जुदा करती थी, लेकिन दूसरा रास्ता हमवार और सरसब्ज़ था, और वह बाड़ के साथ साथ चलता था।

मोमिन पुरउम्मीद से मुख़ातिब होकर कहने लगा, "क्या थोड़ा-सा फ़ासला बाड़ के दूसरी तरफ़ के रास्ते पर न चलें? कंकर बड़े सख़्त हैं, और मेरे पाँव ज़ख़्मी हो चुके हैं। वह दुख रहे हैं।

पुरउम्मीद ने जवाब दिया, "यही हाल मेरा भी है। लेकिन कोई ख़तरा तो नहीं?" वह भी दूसरे रास्ते की तरफ़ देखने लगा।

मोमिन ने कहा, "लगता नहीं कि कोई ख़तरा है। देखो तो यह बिलकुल बाड़ के साथ साथ जाता है। अगर ज़रूरत हुई तो हम एक पल में ऊपर से छलाँग लगाकर वापस आ सकते हैं।"

पुरउम्मीद को पूरा यक़ीन नहीं आ रहा था कि यह दुरुस्त है, लेकिन यह सोचकर कि मोमिन बादशाह का क़ानून ज़्यादा बेहतर समझता है वह भी सब्ज़ाज़ार में अपने साथी के पीछे पीछे चलने लगा। घास बड़ी

मुलायम थी। वह उनके पाँवों को भली लग रही थी। क़रीब ही एक और लड़का बाड़ के साथ साथ चला जा रहा था।

मोमिन ने उसे आवाज़ देकर पूछा, “अरे मियाँ, यह रास्ता कहाँ जाता है?”

लड़के ने जिसका नाम ग़लत-एतक़ाद था मुड़कर जवाब दिया, “आसमानी शहर को।”

मोमिन बोला, “देखो तो मैं ठीक कहता हूँ, हम यहाँ बेख़तर रहेंगे। हम इस लड़के के पीछे पीछे चलेंगे, और अगर कोई ख़तरा हुआ तो हमें वक़्त पर पता चल जाएगा और बच निकलेंगे।”

लेकिन पुरउम्मीद को तसल्ली न हुई। जब रात होने लगी और ग़लत-एतक़ाद की शक्ल दिखाई नहीं दे रही थी तो उसे ख़ौफ़ आने लगा। अचानक एक चीख़ सुनाई दी, और किसी के गिरने की आवाज़ आई। पुरउम्मीद ने मोमिन का बाज़ू पकड़ लिया और मारे डर के लिपट गया। उधर मोमिन भी सर से लेकर पाँव तक काँपने लगा। उसने कहा, “क्या हुआ?” उसने ग़लत-एतक़ाद को फिर आवाज़ दी लेकिन जवाब न मिला। इस तारीकी में लड़कों को सिर्फ़ इतना सुनाई दिया कि कोई दर्द के मारे कराह रहा है।

पुरउम्मीद ने कहा, “मुझे यक़ीन है कि हम सही रास्ते पर नहीं हैं। इधर अंधेरा भी बहुत है।”

मोमिन ने जवाब ही न दिया। उसे भी साफ़ समझ आई थी कि इस रास्ते पर आकर उनसे बड़ी ग़लती हुई है। यह सोचना कैसी हमाक़त थी कि कोई भी रास्ता जो सीधी सड़क से निकलता है दुरुस्त होगा! लेकिन यकायक उसे सर पर बारिश के क़तरे गिरते महसूस हुए। बिजली चमकी और बादल गरजा। साथ ही इतनी मूसलाधार बारिश बरसी कि इस जैसी पहले कभी नहीं देखी थी। मोमिन चिल्ला उठा, "मैं कितना बड़ा बेवुक़ूफ़ हूँ! अगर मैं न कहता तो तुम यहाँ न आते।"

पुरउम्मीद से बेचारे मोमिन की सिसकियाँ नहीं सुनी जाती थीं। "मोमिन, न रोओ। मुझसे भी क़ुसूर हुआ, क्योंकि मैंने तुम्हें आने से मना नहीं किया।"

अचानक एक कड़कती आवाज़ सुनाई दी। क्या देखते हैं कि हम पर बड़ा डरावना देव झुका हुआ है। देव का नाम नाउम्मीद था। उसके बाल और डाढ़ी लंबी लंबी थी, और जंगली जानवरों की खाल का लिबास पहने हुए था। उसे देखते ही मोमिन ख़ौफ़ से चिल्ला उठा। पुरउम्मीद भी काँपने लगा।

देव गरज उठा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

मोमिन से दहशत के मारे बोला नहीं जाता था। फिर उसने बड़ी मुश्किल से जवाब दिया, "हम बादशाह के मुसाफ़िर हैं और रास्ता भूले हुए हैं।"

देव बोला, "मेरे सब्ज़ाज़ार में दाख़िल होने का तुम्हें कोई हक़ नहीं।" उसकी आवाज़ इतनी करख़्त और ऊँची थी कि तूफ़ान की निसबत लड़के ज़्यादा उससे डर गए। "मैं तुम्हें अपने क़िले में ले जाता हूँ।"

बेचारे मुसाफ़िरों को मजबूरन उसके साथ जाना पड़ा। अगर भागने की कोशिश करते तो ज़ोरावर देव एक आन में उन्हें पकड़ लेता। अब वह उन्हें हाँककर अपने घर ले गया जिसका नाम शक्की क़िला था। वहाँ उसने उन्हें अंधेरी कोठड़ी में बंद करके दरवाज़ों को ताला लगा दिया।

तमाम दिन वह फ़र्श पर पड़े रहे। खाने-पीने का कोई इंतज़ाम न था। अंधेरे के बाइस एक दूसरे को देखा भी नहीं जा सकता था। इस फ़िकर में कि देव आकर हमें मार डालेगा, पुरउम्मीद खिसककर मोमिन के क़रीब हो गया। वह एक दूसरे से चिमट गए। मोमिन शरमिंदा था कि यह तमाम मुसीबत मेरी ग़लती की वजह से हुई है, और उसका दिल अफ़सोस से भरा हुआ था। अब तो यह फ़िकर भी थी कि देव हम दोनों को मार डालेगा और हम आसमानी शहर में कभी नहीं पहुँच पाएँगे।

नाउम्मीद देव की बीवी का नाम बदगुमान बीबी था। देव ने उसे बताया, "मैं सब्ज़ाज़ार में छिपे दो मुसाफ़िरों को गिरिफ़्तार करके लाया हूँ। अब वह कोठड़ी में बंद पड़े हैं।"

बदगुमान बीबी बड़ी ख़ुश हुई। वह बड़ी ज़ालिम औरत थी। उसने अपने ख़ावंद से कहा, "इन क़ैदियों को मारो।"

तब देव सुबह-सवेरे डंडा लेकर काल-कोठड़ी में पहुँच गया। लड़कों को पीटकर उसने उन्हें अंधेरे में छोड़ दिया। इतने सख़्त ज़ख़म लग गए कि उनसे हिला तक नहीं जाता था। वह तमाम दिन ज़मीन पर पड़े कराहते रहे।

अगले दिन जब देव फिर देखने आया तो यह देखकर हैरान हुआ कि लड़के अभी तक नहीं मरे। उसने कहा, "मैं तुम्हें कभी भी क़िले से जाने नहीं दूँगा। अगर तुम्हें भूके मरना पसंद नहीं तो मैं तुम्हें पीने को ज़हर दे सकता हूँ।"

मोमिन ने इलतमास की, "हम पर रहम करके हमें आज़ाद कर दो!"

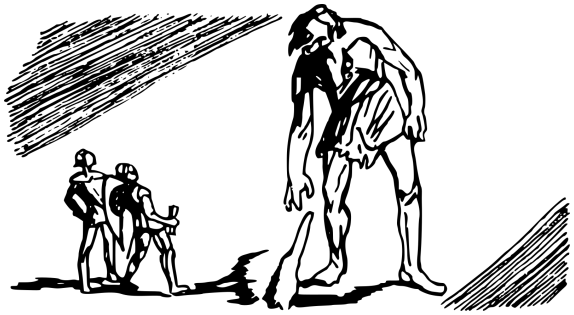

यह सुनकर देव इतना ग़ुस्से हुआ कि वह डंडा लेकर उन पर लपक पड़ा। ख़तरा था कि उन्हें मार ही देता, लेकिन देव की ताक़त अचानक जवाब दे गई, और उसे मजबूरन उन्हें छोड़ना पड़ा। मौसमे-बहार में आम

तौर पर उसे ग़श आया करता था। तब उसके हाथ बेकार हो जाते थे। इसलिए बाज़ औक़ात उसके गिरिफ़्तारशुदा मुसाफ़िर मौक़े से फ़ायदा उठाकर भागने में कामयाब हो जाते थे।

अफ़सोस, मोमिन को इस बात का इल्म नहीं था। बेचारा बचने की उम्मीद से हाथ धो चुका था। कहने लगा, "अब करें तो क्या करें? यहाँ पड़े पड़े मौत के इंतज़ार से तो यह अच्छा है कि ज़हर पिया जाए, बजाए इसके कि खाना न मिलने से आहिस्ता आहिस्ता जान दी जाए।"

पुरउम्मीद बोला, "हमें यह काम हरगिज़ नहीं करना चाहिए। मुझे यक़ीन है कि अगर हमने ख़ुदकुशी की तो फ़रिश्ते हमें कभी भी आसमानी शहर में नहीं ले जाएँगे। शायद देव फिर बीमार हो जाए, दरवाज़े को ताला लगाना भूल जाए और उसमें ताक़त दुबारा आने से पहले ही हम यहाँ से खिसक जाएँ।"

वादे की चाबी

शाम को इस ख़याल से कि क़ैदी मर चुके होंगे देव फिर काल-कोठड़ी में आया। उन्हें देखकर वह बहुत नाराज़ हुआ, क्योंकि वह अध-मुए तो थे लेकिन थे ज़िंदा। जो ज़हर उसने दिया था उन्होंने नहीं पिया था। देव की डरावनी नज़रों और सख़्तकलामी से लड़के इतने सहम गए कि बेचारा मोमिन होशो-हवास खो बैठा। जब उसे होश आया तो देव ग़ायब था और पुरउम्मीद उसके पास बैठा उसकी तलियाँ मलकर उसे होश में लाने की कोशिश कर रहा था।

मोमिन कहने लगा, “क्या अब हमें ज़हर नहीं पीना चाहिए? यह जगह कितनी हैबतनाक है। यह हमसे ज़्यादा अरसे तक बरदाश्त नहीं हो सकेगी। बचने की कोई भी सूरत नज़र नहीं आती।”

पुरउम्मीद ने एतराज़ किया, “इस क़िस्म की बातें मत करो। क्या तुम्हें याद नहीं कि इससे पहले तुम पर क्या गुज़री है? ख़याल करो कि तुम कितना लंबा सफ़र तय कर चुका है और कितनी मुसीबतें झेली हैं। तुमने हलाकू से बेधड़क जंग की और बादशाह की मदद से उस पर भी फ़तह पाई। तारीकतरीन वादी में से तुम अमनो-अमान से गुज़रे यहाँ तक कि

बुतलान मेला में भी बादशाह ने तुम्हें क़त्ल होने से बचाया। आओ उस पर तवक्कूल रखकर थोड़ा-सा और इंतज़ार करें।"

देव और उसकी बीवी को इल्म था कि ख़ुदकुशी करनेवाले मुसाफ़िर आसमानी शहर में नहीं पहुँचते। यह भी जानते थे कि अगर नाउम्मीद उन्हें मार डाले तो बादशाह अपने फ़रिश्ते भेजकर उन्हें उठा ले जाएगा। इसलिए जब बदगुमान बीबी को ख़बर हुई कि लड़के अभी तक ज़िंदा हैं तो उसे अपने ख़ावंद पर बड़ा ग़ुस्सा आया। कहने लगी, "कल उन्हें सहन में ले जाकर उन मुसाफ़िरों की हड्डियाँ दिखाओ जो यहाँ मरे हैं। मुमकिन है वह इतने डरें कि ज़हर पी लें।"

देव ने इस मशवरे को पसंद किया और सुबह मोमिन और पुरउम्मीद को काल-कोठड़ी से निकालकर सहन में ले गया जहाँ मर्द, औरतों, यहाँ तक कि बच्चों की हड्डियाँ भी बिखरी पड़ी थीं। यह नज़ारा बड़ा हौलनाक था। देव को यह देखकर ख़ुशी हुई कि उसके क़ैदी सख़्त घबरा गए। वह कहने लगा, "यह मुसाफ़िरों की हड्डियाँ हैं। यह भी तुम्हारी तरह मेरे सब्ज़ाज़ार में आ गए थे और मैंने उन्हें क़िले में लाकर मार डाला। चंद दिनों के बाद मैं तुम्हें भी उनकी तरह मार डालूँगा। तब तुम्हारी हड्डियाँ उनकी हड्डियों में शामिल हो जाएँगी।" तब उसने एक मरतबा फिर उन्हें पीटकर काल-कोठड़ी में कराहते हुए छोड़ दिया। लगता था कि उनकी मुसीबतें कभी भी ख़त्म नहीं होंगी।

उस रात जब नाउम्मीद की बीवी से बात हुई तो कहने लगा, “मैं नहीं समझता कि यह लड़के इतने दिलेर क्यों हैं।”

बदगुमान बीबी बोली, “शायद उनका यह ख़याल हो कि कोई आकर उन्हें बचाएगा या उनके कपड़ों में कोई चाबी हो जिससे वह उस वक़्त दरवाज़े को खोल लें जब हम बेख़बर हों। इस तरह पहले भी कई क़ैदी फ़रार हो चुके हैं।”

बात तो दुरुस्त थी, लेकिन देव समझा कि अगर मोमिन के पास बादशाह की कोई चाबी होती तो उसने उसे कब का इस्तेमाल कर लिया होता। “सुबह को दोनों की तलाशी लूँगा।” इतना कहकर देव सो गया।

हक़ीक़त में मोमिन की जेब में छोटी-सी चाबी थी ही। यह चाबी वादे की चाबी कहलाती थी और उसे ख़ूबसूरत महल में दी गई थी। लेकिन मुसीबत पड़ने पर वह सब कुछ भूल गया था। उस रात न तो उसे नींद आई और न ही पुरउम्मीद को। कुछ अरसे आपस में बातें करने के बाद वह बादशाह से सच्चे दिल से दुआ और इल्तिजा करने लगे कि वह उनकी मदद करे।

आख़िर मोमिन ने कहा, “वह हमारी ज़रूर सुनेगा। हम उसे देख तो नहीं सकते, लेकिन मुझे ऐसा महसूस होने लगा है कि जैसे बिल-आख़िर हम बच ही जाएँगे।”

बादशाह ने मुसाफ़िरों की दुआ सुन ली। उसने अपने नूरानी फ़रिश्ते के ज़रीए उन्हें कहला भेजा कि उन्हें क्या करना है। उन्हें फ़रिश्ता तो नज़र

नहीं आया, लेकिन मोमिन के दिल में एक ख़याल आया जो हक़ीक़त में बादशाह के नूरानी पैग़ंबर की तरफ़ से था।

मोमिन चिल्ला उठा, "देखो, मैं कितना बेवुक़ूफ़ हूँ। हम ख़ाहमख़ाह यहाँ इतने दिन पड़े रहे हालाँकि फ़ौरन निकल सकते थे। तमीज़ ने मुझे एक छोटी चाबी दी थी, और मुझे यक़ीन है कि इससे देव का हर एक दरवाज़ा खुल जाएगा।"

पुरउम्मीद उछल पड़ा, "आओ, आज़माएँ। अभी रात है। नाउम्मीद यक़ीनन सोया पड़ा होगा।"

अंधेरे में टटोलते टटोलते उन्हें काल-कोठड़ी का दरवाज़ा मिला, और मोमिन ने उसमें चाबी लगा दी। चाबी आसानी से लग गई। लड़कों ने जब दरवाज़े से बाहर क़दम रखा तो उनके दिल धड़क रहे और कान खड़े थे। बाहर बत्ती टिमटिमा रही थी, इसलिए उन्हें आसानी से बड़े दरवाज़े का रास्ता मिल गया जो सहन में खुलता था। मोमिन ने उसे भी खोला। चाँदनी छिटकी हुई थी। अब मुसाफ़िरों और सब्ज़ाज़ार के दरमियान सिर्फ़ एक ही दरवाज़ा रह गया था।

आख़िरी ताला बड़ा सख़्त था। मोमिन ने पूरा ज़ोर लगाया, लेकिन वह चाबी न फेर सका। इतने में क़िले की सीढ़ियों पर देव के क़दमों की आहट आई, जिसे किसी की हरकत सुनाई दी थी। मुसाफ़िर मारे ख़ौफ़ के ग़श खाने लगे। लेकिन ज्योंही नाउम्मीद दरवाज़े पर पहुँचा तो उसके हाथों से डंडा गिर पड़ा, और वह धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा।

पुरउम्मीद चिल्लाया, “ज़ोर लगाओ ताकि इससे पहले कि वह होश में आ जाए हम यहाँ से निकल जाएँ।”

मोमिन ने जवाब दिया, “कोशिश तो मैं कर रहा हूँ, लेकिन ताले को ज़ंग लगा हुआ है।”

पुरउम्मीद ने भी मदद की। कहने लगा, “देखो फिरने लगी।” तब ताला झटके से खुल गया।

देव ज़मीन पर ही पड़ा रहा जबकि लड़के भारी कुंडियाँ खोलकर बाहर निकल गए।

पुरउम्मीद ने मोमिन का हाथ पकड़ लिया, और दोनों पूरे ज़ोर से शाही रास्ते की तरफ़ भागने लगे।

ख़ुशनुमा पहाड़

जब दोनों दौड़ते दौड़ते शाही रास्ते पर पहुँचे तो मोमिन हाँपते हुए बोला, “शुक्र है कि तमीज़ ने मुझे चाबी दी थी।”

पुरउम्मीद ने कहा, “हाँ, अगर यह न होती तो हमारा क्या हाल होता?”

वह भागने से बेदम हो चुके थे, इसलिए सड़क पर बैठ गए। वहाँ आराम करने में कोई ख़तरा नहीं था, क्योंकि देव शाही रास्ते में उनका पीछा नहीं कर सकता था।

मोमिन ने कहा, “अफ़सोस कि मुसाफ़िरों को इस बात का इल्म नहीं कि वह रास्ता उन्हें कहाँ ले जाएगा। क्या हम पत्थर पर कुछ लिखकर उसे क़रीब न लगा दें?”

पुरउम्मीद ने जवाब दिया, “आओ, कोशिश करें। अगर पत्थर हो तो मैं उस पर कुछ खोदूँगा।”

उन्होंने इधर-उधर जो देखा तो घास में एक बड़ा-सा पत्थर पड़ा पाया। मोमिन ने कहा, “यह अच्छा रहेगा। पहले तो तुम उस पर कुछ खोदो, और फिर उसे किसी सही जगह पर रख देंगे।”

पुरउम्मीद ने चाक़ू निकाला, और दोनों ने मशवरा करने के बाद पत्थर पर यह अलफ़ाज़ लिखे, “यह रास्ता शक्की क़िले को जाता है जिसका

मालिक नाउम्मीद देव है। उसे बादशाह से दुश्मनी है, और उसकी कोशिश यह है कि मुसाफ़िरों को मार डाले।"

चाँद के छिपने से पहले ही उन्होंने घास में से पत्थर घसीटकर दरवाज़े के क़रीब ला खड़ा किया ताकि उसे देखे बग़ैर कोई वहाँ से गुज़र न सके।

पुरउम्मीद बोला, "मुमकिन है इससे किसी की जान बच जाए। तुम्हारी यह सलाह बड़ी अच्छी है।"

गरमियों की छोटी रात ख़त्म हुई और पहाड़ों के पीछे से सूरज निकल आया। काल-कोठड़ी में दहशतनाक दिन-रात गुज़ारने के बाद मुसाफ़िर इतमीनान से आगे बढ़ने लगे। वह रौशनी और ताज़ा हवा का मज़ा लेते रहे।

पुरउम्मीद बोला, "यह पहाड़ कितने ख़ूबसूरत हैं। इन्हीं के ऊपर से शाही रास्ता गुज़रता है।

मोमिन ने जवाब दिया, "मुझे लगता है कि वह ख़ुशनुमा पहाड़ होंगे। जब मैं ख़ूबसूरत महल में था तो उन्हें दूर से देखा था। सुना है कि वहाँ चंद-एक गडरिये हैं जो मुसाफ़िरों से बड़ी मेहरबानी से पेश आते हैं। शायद वहाँ से हमें कुछ खाने को भी मिल जाए और आराम भी कर लें।"

लड़के बड़ी जल्दी पहाड़ों के क़रीब पहुँचकर उस रास्ते पर चढ़ने लगे जो उनमें से जाता था। रास्ता कोहे-मुश्किल की तरह ज़्यादा ढलान और मुश्किल नहीं था बल्कि हमवार और आसान था। ढलान पर अंगूर थे। घास में शफ़्फ़ाफ़ पानी के छोटे छोटे नाले जगमगा रहे थे और जगह

जगह फलों से लदे पेड़ थे। उनकी फैली हुई शाख़ें शाही रास्ते पर झुकी हुई मुसाफ़िरों को सूरज की गरमी से बचाती थीं।

गडरिये रास्ते से ज़्यादा दूर न थे। जब उन्होंने अपनी तरफ़ लड़कों को आते देखा तो उनमें से चार गडरिये उनका इस्तिक़बाल करने सब्ज़ ढलान से नीचे उतरे।

मोमिन ने पूछा, "क्या यही ख़ुशनुमा पहाड़ हैं?"

एक गडरिये ने जवाब दिया, "हाँ, इसे इम्मानुएल का मुल्क कहते हैं। इसका मालिक शहज़ादा है, और यह शाही शहर के क़रीब ही है। इसमें चरनेवाली भेड़ें शहज़ादे की हैं। हम उनकी निगहबानी के लिए पहाड़ों पर रहते हैं।"

"क्या आसमानी शहर बहुत दूर है? और क्या रास्ता महफ़ूज़ है?"

"यह उनके लिए महफ़ूज़ है जिन्हें बादशाह से मुहब्बत है। लेकिन जो मुसाफ़िर दियानतदारी से उसकी ख़िदमत नहीं करते वह अकसर ख़तरे में पड़ जाते हैं।"

मोमिन ने पूछा, "तो यहाँ मुसाफ़िरों के आराम के लिए भी कोई जगह है? हम दोनों बड़े थके हुए हैं।"

गडरियों ने जवाब दिया, "जी ज़रूर। बादशाह ने हमें हुक्म दे रखा है कि उसके ख़ादिमों में से जो भी पहाड़ पर से गुज़रे उसकी जितनी ख़िदमत कर सकें करें। हमारे ख़ैमों में चलो, और हम तुम्हारी ख़िदमत करेंगे।"

तब गडरिये जिनके नाम इल्म, तजरिबा, होशियारी और ख़ुलूस थे, उन्हें अपने ख़ैमों में ले गए। उन्होंने उन्हें हाथ-पाँव धोने के लिए पानी दिया और अच्छा खाना खिलाया। यह देखकर कि वह थके-माँदे हैं होशियारी ने उनके लिए बिस्तर तैयार किए, और वह आराम से सो गए। सुबह-सवेरे जब उठे तो फिर ताज़ादम हो गए थे।

कोहे-ख़ता और कोहे-एहतियात

अगले दिन जब मुसाफ़िर सफ़र की तैयारी करने लगे तो गडरिये उनके पास आए और पूछने लगे, “क्या तुम जाने से पहले पहाड़ों की सैर करना चाहते हो?”

मोमिन और पुरउम्मीद ख़ुशी से मान गए। गडरिये उन्हें सैर कराने के लिए चौड़ी सरसब्ज़ ढलानों और उन रास्तों पर ले गए जो पहाड़ों के किनारे काटकर बनाए गए थे।

इल्म ने कहा, “मुसाफ़िरों के लिए इन पहाड़ों में से अकेले गुज़रना ख़तरे से ख़ाली नहीं। लेकिन बादशाह ने इजाज़त दे रखी है कि हम आसमानी शहर का नज़ारा करने के लिए मुसाफ़िरों को यहाँ तक लाएँ।”

वह ऐसे ऊँचे-नीचे रास्ते पर पहुँचे जिस पर आसानी से चढ़ा नहीं जा सकता था। यह रास्ता एक बड़ी चटान की चोटी पर जाता था। जब वह इंतहाई बुलंदी पर पहुँचे तो मोमिन और पुरउम्मीद ने डर के मारे अपने हाथ गडरियों के हाथों में देकर उन्हें मज़बूती से थाम लिया। जब मुसाफ़िरों ने नीचे देखा तो उन्हें एक वादी नज़र आई जिसकी तह में मुरदों की लाशें पड़ी थीं।

पुरउम्मीद ने पूछा, “क्या यह लोग इस चटान से गिरे थे?”

गडरियों ने जवाब दिया, "हाँ। यही है कोहे-ख़ता। जो मुसाफ़िर शाही रास्ते से भटककर पहाड़ों पर अकेले घूमते हैं उन्हें इस रास्ते पर चढ़ने का बड़ा शौक़ आता है। वह तो समझते हैं कि इस पहाड़ पर से अच्छी तरह नज़ारा कर सकते हैं। लेकिन जब वह नीचे देखते हैं तो गहरी वादी का मंज़र उनका सर चकरा देता है, और वह नीचे गिरकर मर जाते हैं।"

तब गडरिये लड़कों को दूसरी जगह ले गए जिसका नाम कोहे-एहतियात था। उस पर चढ़कर उन्हें वसी मैदान नज़र आया। उसमें बेशुमार मर्द, औरतें और बच्चे इधर-उधर फिर रहे थे। लेकिन उनके चलने का अंदाज़ अजीब था—वह हाथ पसारे हुए चल रहे थे ताकि टटोल टटोलकर मालूम करें कि आगे क्या कुछ है। मोमिन ने देखा कि वह चटानों पर ठोकरें खा रहे हैं। उसने पूछा, "क्या यह अंधे तो नहीं?" तजरिबे ने जवाब दिया, "हाँ, अंधे हैं।"

होशियारी ने लड़कों से पूछा, “क्या तुम्हें बाईं जानिब उन पहाड़ों से थोड़ी दूर शाही रास्ता नज़र आता है?”

मोमिन ने जवाब दिया, “हाँ।”

“शाही रास्ते से एक रास्ता निकलता है जो मुसाफ़िर को एक मज़बूत क़िले के पास पहुँचा देता है। उस क़िले में नाउम्मीद नामी देव रहता है। अकसर मुसाफ़िर भटककर उसके सब्ज़ाज़ार में चले जाते हैं, क्योंकि शाही रास्ते का वह हिस्सा मुश्किल और पथरीला है। इसके मुक़ाबले में देव का रास्ता सरसब्ज़ और हमवार है। जब मुसाफ़िर शाही रास्ता छोड़कर उस रास्ते पर चलने लगते हैं तो नाउम्मीद उन्हें गिरिफ़्तार करके अपने क़िले में ले जाता है। वह उन पर बड़ा ज़ुल्म करता है। अगर वह मर न जाएँ तो वह उनकी आँखें निकालकर खुले मैदान में छोड़ देता है। यह लोग यों ही मरते दम तक भटकते रहते हैं।”

मोमिन और पुरउम्मीद ने एक दूसरे की तरफ़ देखा लेकिन चुप रहे। अगर वह छोटी चाबी की मदद से शक्की क़िले से न बचते तो शायद वह भी उस मैदान में फिरनेवाले होते।

अब गडरिये पहाड़ों पर से उतरकर उस तरफ़ जा निकले जो शाही रास्ते से बहुत दूर थी। थोड़ी ही देर में वह ऐसे मक़ाम पर पहुँचे जहाँ मोमिन तारीकतरीन वादी में दाख़िल होना याद आ गया। रास्ते के ऊपर दहशतनाक काली चटानें झुकी हुई थीं। साथ साथ हर तरफ़ घनी धुंद छाई हुई थी।

इल्म बोला, "यह एक ख़तरनाक मक़ाम है। जो मुसाफ़िर पहाड़ों में तनहा सफ़र करते हैं अकसर यहाँ आकर भटक जाते हैं। यह तारीक रास्ता शरीर सरदार के मुल्क को जाता है, और जो मुसाफ़िर इस पर आ जाते हैं वह दुबारा अपना रास्ता नहीं पा सकते।"

मुसाफ़िर यह बातें सुनकर चौकन्ने हो गए। फिर मोमिन बोल उठा, "मैं ख़ुश हूँ कि हमने उन्हें देख लिया अगरचे मैं ख़ौफ़ज़दा था। लेकिन अब हम यक़ीनन शाही रास्ते पर क़ायम रहने में मुहतात रहेंगे।"

जहालत

आख़िर में तमाम गडरिये मुसाफ़िरों को एक ऊँचे पहाड़ पर ले गए। इस पहाड़ का नाम कोहे-शफ़्फ़ाफ़ था। इस पर से उन्हें वसी रास्ता नज़र आता था। एक ख़ूबसूरत रौशनी बहुत दूर चमक रही थी। उसे देखने की उन्होंने बहुत कोशिश की लेकिन आँखें चुँधिया गईं।

एक गडरिया बोला, "आसमानी शहर उस रौशनी के दरमियान है। अगर तुम्हारी नज़र तेज़ हो तो तुम्हें उसके फाटक नज़र आएँगे।"

लेकिन यह रौशनी दोपहर की धूप से ज़्यादा तेज़ थी, और इनसानी आँखें उसे बरदाश्त नहीं कर सकती थीं।

मोमिन बोला, "मुझे तो उसकी सिर्फ़ चमक दिखाई देती है।"

ख़ुलूस कहने लगा, "उसे अपनी नज़रों से देखना तुम्हारे बस की बात नहीं। लेकिन हमारे पास एक दूरबीन है जिसका नाम ईमान है। इससे यह क़दरे साफ़ दिखाई देने लगती है।"

मोमिन ने दूरबीन तो ली लेकिन बादशाह का जिसकी उसे आरज़ू थी तसव्वुर आते ही काँप उठा। उसका हाथ इतना थर्राया कि उससे मज़बूती से दूरबीन पकड़ी न गई। पुरउम्मीद ने भी कोशिश की लेकिन उसकी

आँखों में आँसू आ गए। कहने लगा, "उसने मुझे चुँधिया दिया। लेकिन फाटक की-सी कोई चीज़ दिखाई देती है।"

तमाम सुबह पहाड़ों की सैर करते हुए कट गई। फिर गडरिये लड़कों को वापस ख़ैमों में ले आए ताकि सफ़र पर जाने से पेशतर आराम कर सकें।

तजरिबे ने कहा, "जब तुम थोड़ा-सा सफ़र कर चुकोगे तो तुम्हारी एक आदमी से मुलाक़ात होगी जिसका नाम चापलूस है। वह तुम्हें शाही रास्ते से हटाने की कोशिश करेगा। तुम उसकी न सुनना।

होशियारी बोला, "तुम जल्द ही ऐसे मक़ाम पर पहुँचोगे जिसे जादू का मैदान कहा जाता है। वहाँ की हवा से मुसाफ़िरों को नींद आ जाती है। वह भी शरीर सरदार के मुल्क का ही हिस्सा है। और अगर उसके मुलाज़िमों ने तुम्हें सोता पा लिया तो वह तुम्हें उठाकर ले जाएँगे।"

मोमिन के हाथों में एक काग़ज़ देकर इल्म बोला, "हम तुम्हें एक छोटा-सा नक़्शा देते हैं। इसमें उन तमाम जगहों पर निशान लगाया गया है जहाँ से तुम्हें गुज़रना होगा। अगर तुमने एहतियात से इसे इस्तेमाल किया तो कभी रास्ता नहीं भूलोगे।"

पहाड़ी रास्ते से उतरते उतरते दोनों लड़के आपस में गुफ़्तगू करने लगे कि गडरियों ने उन्हें कौन कौन-सी चीज़ें दिखाई थीं।

मोमिन बोला, "काश हम आसमानी शहर देख लेते। कितनी ख़ुशी होती!"

पुरउम्मीद ने जवाब दिया, "ख़ैर हमने उसकी झलक तो देख ली। मालूम हो गया कि यह जगह ज़्यादा दूर नहीं।"

पहाड़ के दामन में एक टेढ़ी-सी गली शाही रास्ते से आ मिलती थी। यह गली ऐसे मुल्क से आती थी जिसका नाम ख़ुदपसंदी था। जब मोमिन और पुरउम्मीद वहाँ पहुँचे तो उस पर एक छोटा लड़का बादशाह की सड़क की तरफ़ दौड़ा आ रहा था। जब लड़का उनमें आ मिला तो मोमिन ने पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?"

उसने जवाब दिया, "पहाड़ों के आगे के मुल्क से। मैं आसमानी शहर को जा रहा हूँ।"

मोमिन ने पूछा, "लेकिन तुम्हारे ख़याल में तुम्हें अंदर जाने देंगे?"

"क्यों नहीं? वह हर एक को अंदर जाने देते हैं।"

"हर एक को कहाँ? हमारे पास तो परवाने हैं जिन्हें हम दिखाएँगे। क्या बादशाह ने तुम्हें भी कोई परवाना दिया है?"

"नहीं। और मेरे ख़याल में इसकी ज़रूरत भी नहीं। मैं उसका बंदा हूँ, क्योंकि मैं हमेशा उसके हुक्म की तामील करता हूँ। मैंने सुना है कि उसकी यह आरज़ू है कि लोग अपने वतन छोड़कर उसके शहर को चले जाएँ, इसलिए मैं भी तुम्हारी तरह जा रहा हूँ।"

मोमिन ने कहा, "लेकिन बादशाह के मुसाफ़िरों को तंग दरवाज़े से दाख़िल होना और सलीब से होकर गुज़रना पड़ता है। उस वक़्त सफ़ेद

पोशाक और परवाना दिया जाता है। लगता है कि तुम्हें इसका इल्म नहीं।"

लड़के का नाम जहालत था। उसने जवाब दिया, "बात बढ़ाने की ज़रूरत नहीं। मुझे क्या मालूम तुम कहाँ से आ रहे हो। लेकिन शक है कि तुम्हारी रिहाइश तंग दरवाज़े के क़रीब थी, इसलिए तुम्हारे लिए उसमें से दाख़िल होना आसान था। यह जगह मेरे घर से काफ़ी दूर है इसलिए हम लोग उसमें से दाख़िल होने की परवा नहीं करते। मेरा ख़याल नहीं कि हमारे मुल्क का कोई बंदा भी रास्ता जानता है! हमारी ख़ुशगवार सब्ज़ गली हमें इन तमाम मुसीबतों से महफ़ूज़ रखती है, और हमारा सफ़र भी घट जाता है।"

मोमिन को मालूम नहीं था कि उसे क्या जवाब दे। कुछ देर बाद जहालत कुछ फल तोड़ने को रुका तो वह उसे वहीं छोड़कर आगे निकल गए।

पुरउम्मीद ने कहा, "अगर कहो तो उसका इंतज़ार कर लें।"

मोमिन ने जवाब दिया, "इसकी ज़रूरत नहीं। शायद वह अभी आ मिले।"

कमईमान की दासतान

मोमिन और पुरउम्मीद थोड़ी ही दूर गए थे कि उन्हें दूर सिपाहियों का एक जत्था दिखाई दिया। वह काले हथियार से लैस थे जो मोमिन के हथियारों की तरह चमकदार नहीं थे। मुसाफ़िरों ने पहचान लिया कि वह लोग शरीर सरदार की फ़ौज से हैं।

पुरउम्मीद कहने लगा, “क्या ख़याल है, क्या वह हमें तकलीफ़ देंगे?”

मोमिन ने जवाब दिया, “क्या पता!” दोनों लड़के डर गए, तो भी रास्ते पर क़ायम रहे।

ज्योंही सिपाही लड़कों के नज़दीक हुए तो क्या देखते हैं कि साथ एक क़ैदी भी है जिसके लिबास से पता चलता था कि वह भी बादशाह का

मुसाफ़िर है। सिपाहियों ने मोमिन और पुरउम्मीद की तरफ़ तो ध्यान न दिया बल्कि उसे तेज़ भगाने में लगे रहे। मुसाफ़िर शर्म से अपना सर नीचा किए हुए था कि कहीं लड़के उसे पहचान न पाएँ।

कभी उसे भी बादशाह से मुहब्बत थी, और वह तक़रीबन आसमानी शहर के फाटक पर पहुँच गया था। लेकिन वह सीधे रास्ते से भटकने लगा और थोड़ी ही देर में शरीर सरदार के नौकरों से जा मिला। उन्होंने अपने आपको बड़ा मेहरबान जताया। यह लड़का उनके पास ठहर गया और बड़ी जल्दी मेहरबान बादशाह को भूलकर उसके हुक्मों का ना-फ़रमान हो गया। उसके चमकदार हथियार ज़ंगआलूद और उसके कपड़े मैले होकर फट गए। उसका परवाना भी गुम हो गया। उसे देखकर कोई नहीं कह सकता था कि यह भी कभी बादशाह का ख़ादिम रहा है।

लेकिन एक दिन उसे आसमानी शहर याद आया और वह अपने किए पर बहुत पछताया। उसे फ़िकर हुई कि क्या बादशाह मुझे माफ़ भी करेगा या नहीं? थोड़ी देर के बाद वह अपने दोस्तों को छोड़कर वापस सही रास्ते की तलाश में निकला। शरीर सरदार ने जब सुना कि वह चला गया है तो उसने उसकी तलाश में सिपाहियों का एक जत्था भेजा। बेचारे मुसाफ़िर ने अपने बचाव के लिए तलवार निकाली लेकिन वह ज़ंगआलूद हो चुकी थी और इस्तेमाल के क़ाबिल नहीं थी। अब सिपाही उसे ज़ंजीरों में बाँधकर शरीर सरदार के मुल्क वापस ले जा रहे थे।

मोमिन और पुरउम्मीद को इस बात की ख़ुशी हुई कि सिपाहियों ने उनसे बात नहीं की। तो भी मुसाफ़िर की मुसीबत देखकर उन्हें उस पर अफ़सोस हुआ। जाते जाते मोमिन ने कहा, "मुझे याद है जब मैं ख़ूबसूरत महल में था तो मैंने एक मुसाफ़िर का जिसका नाम कमईमान था, क़िस्सा पढ़ा। उसे यहाँ से थोड़ी दूर लूट लिया गया था। मेरे ख़याल में शरीर सरदार के नौकर यहाँ से गुज़रते रहते हैं। हमें एहतियात बरतनी चाहिए, नहीं तो वह हम पर भी कोई मुसीबत ढाएँगे।

पुरउम्मीद ने कहा, "कमईमान का माजरा बताओ। उसे कैसे लूटा गया?"

मोमिन ने जवाब दिया, "वह बहुत थका हुआ था और आराम करने के लिए घास पर सो गया। यह जगह इस गली के जहाँ से हम गुज़र रहे हैं कोने के पास ही है। यह सोने के लिए महफ़ूज़ जगह नहीं थी। गली में तीन बदमाश लड़के खेल रहे थे। मेरे ख़याल में उनके नाम बुज़दिल, बेभरोसा और जुर्म थे। लड़कों ने जब कमईमान को कोने में पड़े देखा तो सोचने लगे कि क्यों न इसकी चीज़ें चुरा लें। वह जागा ही था कि उन्होंने उसे पकड़ लिया। इससे पहले कि वह अपनी तलवार उठाता उन्होंने उसे ज़मीन पर पटक दिया और बड़ी बेदर्दी से पीटा। फिर उन्होंने उसकी जेब से तमाम रुपए निकाल लिए। वह उसे क़त्ल भी कर देते, लेकिन अचानक उन्हें ऐसा लगा जैसा कि पीछे से किसी के आने की आवाज़ सुनाई दी।"

"वह कौन थे?"

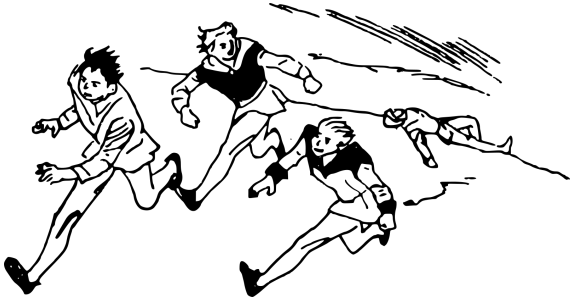

“दरअसल आदमी तो कोई नहीं था, लेकिन चूँकि वह जानते थे कि जुर्म कर रहे हैं इसलिए मोड़ गए। इन्हीं पहाड़ों में पुरभरोसा नामी एक गाँव है, और बादशाह का अफ़सर फ़ज़ले-आज़म वहाँ रहता है। लड़कों ने समझा होगा कि वह आनेवाला है, इसलिए भाग गए होंगे।”

“तो कमईमान का क्या हुआ? क्या उसे ज़्यादा चोट आई थी?”

“हाँ। लेकिन उन्हें उसका परवाना हाथ न आया। उसे रुपया ज़ाया होने का अफ़सोस तो था, लेकिन उसे तसल्ली थी। थोड़े ही अरसे के बाद वह इस लायक़ हो गया कि उठकर अपनी राह ले।”

चापलूस और उसका जाल

लड़के आपस में कमईमान और उसकी मुसीबतों का ज़िक्र कर ही रहे थे कि एक ऐसे मक़ाम पर पहुँचे जहाँ शाही रास्ते में से एक सड़क निकलती थी और यह जानना मुश्किल था कि दोनों में से कौन-सा रास्ता सही है। सड़क की एक तरफ़ खड़े हुए तो मालूम होता था कि दाएँ हाथ का रास्ता दुरुस्त है। लेकिन सड़क पार करने पर ऐसा लगता था कि बाएँ हाथवाला सीधा है।

मोमिन बोला, "क्या मालूम कौन-सा दुरुस्त हो?" दोनों रुक गए। लड़कों के पास वह छोटा-सा नक़्शा था जो गडरियों ने उन्हें दिया था। अगर वह उसे देखते तो सीधे मालूम हो जाता कि कौन-सा रास्ता इख़्तियार करना चाहिए। लेकिन बजाए इसके कि वह उसे देखते वह अपने आप सही रास्ता तलाश करने में इधर-उधर भटकने लगे।

उसी वक़्त उनके पीछे से एक आदमी आया। उसका चेहरा बदसूरत था, लेकिन उसकी पोशाक सफ़ेद थी। लड़कों को गुमान हुआ कि शायद वह भी मुसाफ़िर है। उसने पूछा, "क्या बात है? तुम बहुत परेशान दिखाई देते हो।"

मोमिन ने जवाब दिया, “हम आसमानी शहर को जा रहे हैं, और हमें पता नहीं चल रहा कि इन रास्तों में से कौन-सा दुरुस्त है।”

वह आदमी हँसकर कहने लगा, “सिर्फ़ इतनी बात है? इतना घबराने की ज़रूरत नहीं। मैं भी आसमानी शहर को जा रहा हूँ। मेरे पीछे चलो तो मैं तुम्हें रास्ता बता दूँगा।”

मोमिन और पुरउम्मीद उसके बारे में तसल्ली किए बग़ैर उसके पीछे चल दिए। लेकिन जल्द ही उन्हें अपनी ग़लती का एहसास हो गया, क्योंकि क्या देखते हैं कि बजाए आसमानी शहर को जाने के वह ख़ुशनुमा पहाड़ों को वापस जा रहे हैं।

मोमिन बोल उठा, “मुझे यक़ीन है कि रास्ता सही नहीं।”

पुरउम्मीद सीधे खड़ा हो गया और ख़ौफ़ज़दा आवाज़ में कहने लगा, “सच?”

“सच।” हमें दूसरा रास्ता इख़्तियार करना चाहिए। देखते नहीं वही पहाड़ हैं जहाँ से हम सुबह गुज़रे थे। यह रास्ता तो हमें वापस वहीं ले जा रहा है।”

पुरउम्मीद ने कहा, “तो उस आदमी ने हमें धोका दिया है।”

“आओ वापस चलें।”

“कहीं वह हमारा पीछा करके हमें मार न डाले। वह आसमानी शहर का हक़ीक़ी मुसाफ़िर मालूम नहीं होता।”

मोमिन ने कहा, “क्या मालूम? काश हम उसके पीछे न लगते! आओ, अब भाग चलें।”

लड़के एकदम मुड़े, लेकिन उसी वक़्त वह आदमी भी मुड़ा। इससे पहले कि वह शाही रास्ते की तरफ़ एक क़दम भी उठाते उसने एक बड़ा-सा जाल उनके ऊपर फेंककर उन्हें फँसा लिया। वह मदद के लिए पुकारते हुए ज़मीन पर गिर पड़े जबकि वह आदमी ठट्ठे उड़ाता हुआ वहाँ से खिसक गया। इतने में उसकी सफ़ेद पोशाक उसके कंधों पर से गिर पड़ी, और उन्होंने पहचाना कि वह शरीर सरदार का मुलाज़िम है। उन्हें धोका देने के लिए उसने मुसाफ़िरों का-सा लिबास रखा था।

मोमिन और पुरउम्मीद ने बड़ी कोशिश की कि अपने आपको उस ख़ौफ़नाक जाल से नजात दिलाएँ, लेकिन जितना वह उसे खींचते उतना ही वह सख़्त होता जाता था। आख़िरकार वह मजबूरन चुप होकर लेट गए। उन्हें अपनी हमाक़त पर अफ़सोस हुआ।

पुरउम्मीद बोला, “अफ़सोस, हमने वह नक़्शा भी नहीं देखा जो उन्होंने हमें दिया था।”

मोमिन सिसकियाँ भरते हुए कहने लगा, “हम बहुत ही बेपरवा मुसाफ़िर हैं। हमसे ग़लतियाँ होती रहती हैं। अगर बादशाह हमें इस बार बचाए तो फिर हमसे ऐसी हरकत नहीं होगी।”

ना-फ़रमानी की सज़ा

मुसाफ़िरों को यह फ़िकर हुई कि कहीं उन्हें सारी रात चापलूस के जाल के नीचे ही न काटनी पड़े। मोमिन कहने लगा, “मुमकिन है वह शरीर सरदार को इत्तला देने गया हो कि अपने सिपाहियों को भेजकर हमें उठवा ले।”

सूरज ग़ुरूब होने ही वाला था कि लड़कों को पाँवों की आहट क़रीब होती हुई सुनाई दी। वह इतने सहम गए कि पुरउम्मीद काँपने लगा। लेकिन जब देखा कि सिर्फ़ एक ही आदमी है तो उनका ख़ौफ़ क़दरे कम हो गया। आदमी की चमकदार पोशाक और हलीम चेहरे से अंदाज़ा हुआ कि वह नेक बादशाह का ख़ादिम है। वह मुसाफ़िरों को देखकर रुक गया और पूछने लगा, “तुम इस जाल में कैसे फँस गए?”

मोमिन ने कहा, “हम परेशान थे और सही रास्ते का अंदाज़ा न कर सके। इतने में एक आदमी सफ़ेद पोशाक पहने हमारे क़रीब आया और कहने लगा कि वह भी आसमानी शहर को जा रहा है। तब हम उसके पीछे हो लिए।”

बादशाह का ख़ादिम बोला, “वह तो चापलूस था।” नीचे झुककर उसने जाल के टुकड़े टुकड़े कर दिए। मोमिन और पुरउम्मीद रेंगते हुए बाहर निकल आए और खड़े हो गए। आदमी का चेहरा संजीदा था। मोमिन

को याद आया कि जब वह ख़तरनाक चटानों में भटका फिर रहा था तो मुबश्शिर ने भी इसी तरह उसे देखा था।

नूरी शाही रास्ते की तरफ़ मुड़ा और लड़कों को भी हिदायत की कि वह उसके पीछे हो लें। मोमिन ने अपना हाथ पुरउम्मीद के हाथ में दिया, और वह इकट्ठे चलने लगे। जब वह फिर शाही रास्ते पर हो गए तो नूरी रुक गया। पूछने लगा, "कल रात कहाँ सोए थे?"

"गडरियों के साथ पहाड़ों पर।"

"क्या उन्होंने रास्ते का छोटा-सा नक़्शा नहीं दिया?"

लड़कों ने शर्म के मारे सर झुकाकर कहा, "दिया तो था।"

"जब रास्ते के बारे में शक हुआ तो क्या तुमने नक़्शा देखा?"

पुरउम्मीद आहिस्ता से बोला, “नहीं,” और मोमिन ने कहा, “भूल गए थे।”

“इसके अलावा गडरियों ने तुमसे क्या कहा था? क्या उन्होंने चापलूस से ख़बरदार नहीं क्या था?”

“कहा तो था कि उसकी न सुनना।”

“लेकिन इसके बावुजूद तुमने उसकी सुनी। क्या वजह है?”

“हमें ख़याल ही नहीं था कि वह आदमी चापलूस हो सकता है, क्योंकि वह हमसे बड़ी हलीमी से मुख़ातिब हुआ।”

मुसाफ़िरों के गालों पर आँसू बहने लगे, और नूरी ने उनके कंधों पर हाथ रखकर बड़ी हलीमी से कहा, “तुमने बड़ी बेवुक़ूफी की। अच्छी बात है कि तुम्हें अपने किए पर अफ़सोस है।”

मोमिन ने बिसूरते हुए कहा, “हमें बहुत ही अफ़सोस है। और पुरउम्मीद की निसबत मैं ज़्यादा क़ुसूरवार हूँ।”

नूरी ने कहा, “नहीं। तुम दोनों से ग़लती हुई है। अगर बादशाह मुझे तुम्हारी तलाश में न भेजता तो मुमकिन है क़त्ल हो जाते या शरीर सरदार के सिपाही तुम्हें उठाकर ले जाते। तो भी बादशाह तुमसे ख़ुश नहीं है। बादशाह तुम्हें माफ़ तो कर देगा, लेकिन मुझे तुम्हें सज़ा देनी पड़ेगी। अगर तुमने गडरियों का कहा माना होता तो रास्ता कभी न भूलते।”

उसके हाथ में छोटी-सी चाबुक थी। इससे उसने दोनों को बहुत मारा। चाबुक की ज़रबों से उन्हें बहुत चोटें लगीं। लेकिन वह जानते थे कि हम

इसके हक़दार हैं। जब सज़ा हो चुकी तो नूरी ने उन्हें बताया कि बादशाह तुम्हारी शरारत को कभी याद नहीं करेगा।

वह कहने लगे, “हमारा अज़ीज़ शहज़ादा भी मुसाफ़िर था, और वह रास्ते के तमाम ख़तरों और मुसीबतों से वाक़िफ़ है। वह तुम्हारा हर वक़्त निगहबान है। और जब तुमसे किसी क़िस्म की बेपरवाई होती है तो वह अपने बाप से इलतमास करता है कि वह उसकी ख़ातिर तुम्हें माफ़ कर दे।”

काफ़िर

नूरी के चले जाने के बाद मुसाफ़िर अपने रास्ते पर बराबर चलते गए। अब न तो उनकी किसी दोस्त से मुलाक़ात हुई, न दुश्मन से। वह एक बड़े वसी मैदान में से गुज़रने लगे। नक़्शे के मुताबिक़ यह आनंददेश कहलाता था। इस मैदान के एक हिस्से को जादू का मैदान कहा जाता था। पुरउम्मीद ने मोमिन को याद दिलाया कि गडरियों ने उन्हें ख़बरदार किया था कि यहाँ न सोएँ।

मोमिन ने कहा, “मैं नहीं भूला, लेकिन मैं ख़ुश हूँ कि तुम्हें भी याद है। अब हमें ज़्यादा मुहतात होने की ज़रूरत है, क्योंकि इतने लंबे सफ़र के बाद कितनी ही अफ़सोसनाक बात होगी अगर हमें भी पिछले दिन के बेचारे मुसाफ़िर की तरह पकड़ा जाए।”

पुरउम्मीद ने कहा, “अब हम चापलूसों की बातों में नहीं आएँगे। अरे, क्या हमारे आगे कोई शख़्स सड़क पर तो नहीं चल रहा?”

मोमिन ने जवाब दिया, “तुम ठीक कहते हो। वह तो आसमानी शहर की तरफ़ से आ रहा है। हाँ, वह हमसे मिलने आ रहा होगा।”

ज्योंही वह आदमी नज़दीक हुआ तो पुरउम्मीद ने कहा, “लगता है कि वह नूरियों में से नहीं। अरे उसकी पोशाक तो बादशाह के मुसाफ़िरों की-सी है, लेकिन ग़लत जानिब को जा रहा है।”

आदमी का नाम काफ़िर था। जब उसकी मुलाक़ात लड़कों से हुई तो रुक गया। पूछने लगा कि तुम कहाँ जा रहे हो? वह बड़ा मेहरबान नज़र आ रहा था, और उसकी आवाज़ में बड़ी नरमी थी। लेकिन लड़कों को पता था कि उन्हें उसकी बात पर एतबार नहीं करना है। उसके सवाल के जवाब में मोमिन ने कहा, “हम शाही शहर यानी आसमानी शहर को जा रहे हैं।”

काफ़िर हँसकर कहने लगा, “बेचारे मासूम लड़को! क्या तुमने इतना लंबा सफ़र करने के बाद भी हक़ीक़त मालूम नहीं की?”

पुरउम्मीद ने पूछा, “क्या हक़ीक़त?”

काफ़िर बोला, “यह बड़ा थका देनेवाला सफ़र है, और अगर तुम इसकी मनज़िल पर पहुँच भी जाओ तो मायूसी ही होगी।”

“क्यों?”

काफ़िर ने उदास-सा चेहरा बनाकर कहा, “न कोई बादशाह है और न ही आसमानी शहर।”

मोमिन चिल्ला उठा, “क्यों नहीं? है। हमने उसके बारे में बादशाह के अपने ख़ादिमों से सुना है।”

काफ़िर ने लड़के के कंधों पर हाथ रखकर उसे दूसरी तरफ़ मोड़ने की कोशिश करते हुए कहा, “मेरे अज़ीज़, तुम बहुत ही छोटे हो, और मैं बूढ़ा हूँ। जो कुछ मैं कहूँ उसे ग़ौर से सनो। अरसा हुआ मैंने भी यही क़िस्सा सुना था जो तुम्हें सुनाया गया है। मैं अपना घरबार छोड़कर शाही शहर की तलाश में निकल पड़ा।”

मोमिन ने कहा, “अच्छा! तो तुम्हें जल्द ही मिल जाएगा। मिल जाएगा ना?”

काफ़िर ने जवाब दिया, “नहीं। मैं तुमसे आगे हो आया हूँ। मैं बीस साल तक मुसाफ़िर रहा हूँ और कोई शहर नहीं मिला।”

मोमिन ने अफ़सोस के साथ पुरउम्मीद की तरफ़ देखा और कहा, “क्या वह सच कह रहा है?”

पुरउम्मीद चिल्ला उठा, “नहीं। मुझे यक़ीन है कि यह झूठ बोल रहा है। तुम इसकी हरगिज़ न सुनो। तुम जानते हो कि हमने ख़ुशनुमा पहाड़ों से शहर देखा था। जल्दी चलो! नहीं तो नूरी हमें फिर सज़ा देगा।”

काफ़िर पास खड़ा दोनों लड़कों को देखता रहा। कहने लगा, “मेरे साथ वापस चलो! मैं तुम्हें वापस तुम्हारे घर ख़ैरियत से पहुँचा दूँगा।”

लेकिन मोमिन ने जुर्रत से जवाब दिया, “तुम हमें धोका देने की कोशिश कर रहे हो। लेकिन हमें तुम्हारी बातों का यक़ीन नहीं आता। हक़ीक़त यह है कि आसमानी शहर है। जब हम गडरियों के पास थे तो हमने उसके फाटक देखे।”

काफ़िर ने अपना सर हिलाया, “तुम्हें ग़लती लगी है। जाओ, जाकर देख लो। मैं तो अपने वतन वापस जाता हूँ।”

मोमिन ने जवाब दिया, “और हम बादशाह के पास जा रहे हैं।”

यह कहकर वह चल पड़े जबकि काफ़िर उन पर हँसता हुआ अपनी राह चलता बना।

जादू का मैदान

वह दिन के दोपहर मैदान के उस हिस्से में पहुँचे जिसे जादू का मैदान कहा जाता था। यह बहुत ही प्यारा मक़ाम था। पहाड़ों से घिरे होने के बाइस यहाँ की आबो-हवा भी अच्छी थी। नदियाँ-नाले ख़ामोशी से बह रहे थे, और हवा से पेड़ों के पत्ते सरसरा रहे थे। इर्दगिर्द का माहौल बड़ा ही ख़ामोश और मुसर्रतअंगेज़ था। लेकिन यहाँ के सब्ज़ाज़ार अमन की वादी की तरह बाड़ से घिरे हुए नहीं थे। यों मुसाफ़िरों के लिए यहाँ लेटना और आराम करना ख़तरे से ख़ाली नहीं था। शरीर सरदार के नौकर अकसर चटानों और झाड़ियों में छिपे रहते थे। जब भी मुसाफ़िरों से इतनी हमाक़त होती कि वहाँ सो जाते तो वह या तो उन्हें उठा लेते, नहीं तो उन्हें लूट ज़रूर लेते।

पुरउम्मीद जम्हाई लेने लगा, “हाय, मुझे नींद आ रही है। मेरी आँखें पल पल क़दम बक़दम बंद हो रही हैं। यहाँ बैठ जाओ और थोड़ा अरसा आराम कर लो।”

मोमिन ने पुरउम्मीद का हाथ पकड़कर उसे हिलाया और कहा, “यहाँ नहीं, पुरउम्मीद! अरे पुरउम्मीद! तुम भूल रहे हो कि यह जादू का मैदान है।”

पुरउम्मीद ने ग़ुनूदगी की हालत में जवाब दिया, “अच्छा। तो यहाँ कोई दुख देनेवाला तो नहीं। मैं सिर्फ़ चंद मिनट लेटूँगा। मेरा इंतज़ार न करो।”

वह नीचे घास पर गिर पड़ा। लेकिन मोमिन ने उसे झटके से हिलाया। कहने लगा, “किस ख़याल में हो? याद नहीं, गडरियों ने क्या कहा था?” उसने उसे उस वक़्त तक झँझोड़ना न छोड़ा जब तक कि वह पूरे तौर पर जाग नहीं उठा।

तब अपने ख़तरे की समझ आकर मुसाफ़िर भी काँप उठा। “अगर मैं अकेला होता तो क्या करता? मुझे यक़ीन है कि ज़रूर सो जाता। सारी उम्र मुझे इतनी थकावट कभी महसूस नहीं हुई।”

मोमिन ने जवाब दिया, “मैं भी नींद महसूस कर रहा था, लेकिन तुम्हें जगाते जगाते मैं ख़ुद भी बेदार हो गया। आओ कोई दिलचस्प बात करें। इस तरह जागते रहेंगे। तुमने यह नहीं बताया कि तुम मुसाफ़िर कैसे बने थे।”

पुरउम्मीद ने बयान शुरू किया, “मैंने तुमसे पहले सफ़र शुरू किया था। मैं वफ़ादार ख़ूब जानता हूँ। शुरू में मुबश्शिर उसके पास जाता, फिर वफ़ादार मेरे पास आकर बताता कि उसने बादशाह के बारे में क्या सुना है। उस वक़्त तो मैंने इतनी परवा न की, लेकिन कुछ अरसे बाद मैंने सोचा कि आसमानी शहर की रिहाइश अच्छी होगी। एक दिन मैं भागा भागा तंग दरवाज़े पर पहुँचा और सफ़र शुरू कर दिया। लेकिन जब बुतलान

मेला पर पहुँचा तो गलियों में लड़कों के साथ खेलने लगा। आख़िरकार उन्होंने मुझे आमादा किया कि आगे न जाऊँ। तब मैं वहीं रुक गया।”

“तो तुम्हें वह पसंद नहीं आया?”

“नहीं। बेशक बाज़ औक़ात पसंद भी करता था, लेकिन अकसर ख़ौफ़ आता था और नाख़ुश रहता था। मुसाफ़िरों को शहर में से गुज़रते देखकर शर्म आ जाती और डरता रहता कि कहीं वह मुझे देख न लें। इतने में तुम भी वफ़ादार के साथ आ निकले। उसे देखते ही मैंने उसे पहचान लिया।”

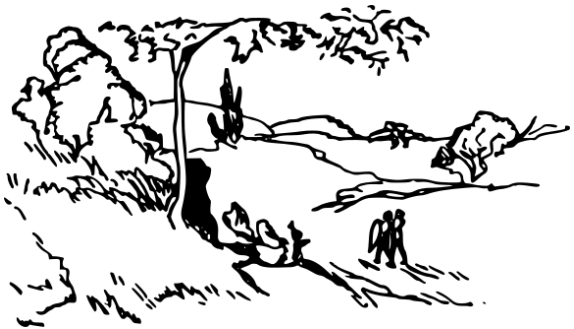

मोमिन ने पूछा, “तो क्या तुमने हमें मार खाते देखा?”

“जी। और जब तुम पिंजरे में थे तो मेरा पूरा ध्यान तुम पर था। एक बार तो मैं खिसककर सलाखों के क़रीब जा पहुँचा। उस वक़्त तुम शायद सोए पड़े थे। लेकिन वफ़ादार ने मुझे देखा और मुझसे बातें भी कीं।”

“उसने क्या कहा?”

“उसने मुझसे दरख़ास्त की कि सीधे शहर छोड़ दो। कहने लगा कि हमारे अज़ीज़ शहज़ादे की ख़ातिर बादशाह तुम्हें माफ़ कर देगा। फिर मैंने देखा कि वफ़ादार बड़े सब्र से सब कुछ बरदाश्त कर रहा है, इसलिए कि उसे बादशाह से मुहब्बत है। उस वक़्त मैंने इरादा किया कि जब भी तुम बरी होगे तो मैं कहूँगा कि मुझे भी साथ ले चलो।”

मोमिन ने कहा, “मुझे इस बात से बड़ी ख़ुशी है कि तुम मेरे साथ हो। इकट्ठे रहने से मुझे बड़ा सुकून हुआ है। तुम भी ख़ुश रहे हो, ना।”

पुरउम्मीद ने जवाब दिया, “सचमुच बड़ी ख़ुशी हुई है। अब मुझे इस बात का यक़ीन हो गया है कि बादशाह मुझसे मुहब्बत करता है और कि थोड़े ही अरसे में हम उसके ख़ूबसूरत शहर में महफ़ूज़ होंगे।”

जहालत का इंतज़ार

जहालत सारा वक़्त आहिस्ता आहिस्ता अकेला ही चलता रहा। चापलूस और काफ़िर ने उसकी तरफ़ ध्यान ही न दिया, क्योंकि वह जानते थे कि उसने सही तरीक़े से अपना सफ़र शुरू नहीं किया, कि आसमानी शहर पहुँचते वक़्त बादशाह के ख़ादिम उसे शहर के फाटक में दाख़िल होने नहीं देंगे बल्कि उसे उसके मालिक शरीर सरदार के पास वापस भेज देंगे। यों जहालत को कोई मुश्किल या मुसीबत पेश न आई, यहाँ तक कि जादू के मैदान से गुज़रते हुए उसे नींद तक महसूस न हुई।

ख़तरनाक मैदान से गुज़रते हुए पुरउम्मीद और मोमिन को जहालत याद आया। वह ख़याल करने लगे कि उसकी क्या हालत होगी। पुरउम्मीद ने उस वक़्त पीछे देखा। कहने लगा, “वह हमसे थोड़ा ही पीछे है। क्या हम उसका इंतज़ार करें?”

मोमिन ने जवाब दिया, “शायद यही अच्छा हो। फिर अगर उसे नींद आई तो हम उसे जगा रखेंगे।”

मुसाफ़िरों ने इंतज़ार किया लेकिन गो जहालत को मालूम था कि वह उसका इंतज़ार कर रहे हैं तो भी उसने उनसे मिलने की कोई परवा न

की। जब वह सुस्ती से चलता उनकी तरफ़ आया तो मोमिन कहने लगा, "अकेले चलने में क्या मज़ा है? हमारे साथ चलो!"

जहालत ने जवाब दिया, "मुझे इसकी परवा नहीं। मैं अकेला बख़ूबी सफ़र कर सकता हूँ। मुझे बहुत-सी बातों पर सोचना है।"

पुरउम्मीद ने पूछा, "तुम किस सोच में हो?"

"बादशाह और उसके आसमानी शहर की सोच में।"

मोमिन ने कहा, "लेकिन इन बातों पर सोचना ही काफ़ी नहीं। हमें बादशाह से मुलाक़ात करने की बड़ी फ़िकर होनी चाहिए।"

"यही हाल मेरा भी है।"

"फिर तुम तेज़ क्यों नहीं चलते?"

"काफ़ी तेज़ चल रहा हूँ। किसी न किसी दिन मैं ज़रूर ही शहर में पहुँच जाऊँगा। तो फिर क्यों न आराम से सफ़र करूँ?"

"लेकिन अगर तुमने ऐसी बेपरवाई की तो मुमकिन है किसी मुश्किल या मुसीबत में फँस जाओ।"

"अच्छा! अगर ऐसा हुआ तो बादशाह मेरी मदद करेगा।"

पुरउम्मीद ने कहा, "अगर तुमने उसकी फ़रमाँबरदारी की कोशिश न की तो बादशाह तुम्हारी मदद नहीं करेगा।" पुरउम्मीद को यक़ीन हुआ कि दर-हक़ीक़त जहालत को बादशाह और उसके क़ानून का कोई ख़ास इल्म नहीं है।

लड़के ने जवाब दिया, “मैं उसकी फ़रमाँबरदारी की कोशिश करता हूँ। इससे ज़्यादा और क्या कर सकता हूँ? घरबार छोड़कर मुसाफ़िर बन बैठा हूँ। इसके अलावा मैं और क्या कर सकता हूँ?”

मोमिन ने कहा, “तुम सलीब के पास से होकर नहीं गुज़रे। सच तो यह है कि अगर तुम्हारे पास परवाना और मुसाफ़िरों की पोशाक न हुई तो बादशाह के ख़ादिम शहर में तुम्हें दाख़िल होने नहीं देंगे।”

जहालत ने जवाब दिया, “तुम यक़ीनन ग़लत कहते हो। मैंने पढ़ा है कि बादशाह हर एक मुसाफ़िर को एक सफ़ेद पोशाक देगा। इसमें शक नहीं कि वह मुझे भी ऐसा लिबास भेज देगा। मैं तंग दरवाज़े और सलीब पर उसकी तलाश में क्यों जाऊँ? इसका यह मतलब होगा कि मुझे शहज़ादे के क़ौल का एतबार नहीं।”

उसी वक़्त मोमिन को वह रुक़्क़ा याद आया जो वतन छोड़ने से पहले मुबश्शिर ने उसे दिया था। मुमकिन है जहालत के पास भी इस क़िस्म की कोई तहरीर हो। पूछने लगा, “क्या बादशाह ने तुम्हें भी कोई पैग़ाम भेजा था?”

“पैग़ाम! नहीं तो। वह क्यों भेजता? क्या इतने बड़े बादशाह से यह तवक़्क़ो की जा सकती है कि वह मेरे जैसे लड़के को पैग़ाम भेजे?”

बेचारा मोमिन परेशान-सा हो गया। पुरउम्मीद कान में कहने लगा, “समझ में नहीं आता उससे क्या बात की जाए। वह यक़ीनन ग़लत है। लेकिन हमारी कहाँ सुनेगा।”

अब जहालत गुफ़्तगू से तंग आ चुका था। कहने लगा, “सच तो यह है कि मैं इतना तेज़ नहीं चल सकता जितना तुम चलते हो। तुम अपनी राह लो।”

वैसे भी मुसाफ़िरों को मालूम नहीं था कि उसे और क्या कहें, वह उसे छोड़कर चल दिए कि वह अपनी मरज़ी से आहिस्ता आहिस्ता चला आए।

आनंददेश

जादू के मैदान से गुज़रकर दोनों आनंददेश में जा पहुँचे। उन्होंने आज तक इस जैसा ख़ूबसूरत मुल्क नहीं देखा था। उसके पहाड़ों पर पेड़ थे। उसकी वादियाँ सरसब्ज़ थीं और उनमें ख़ुशरंग फूल खिले हुए थे। कुछ फ़ासले पर वह तेज़ रौशनी चमक रही थी जिसे गडरियों ने ख़ुशनुमा पहाड़ों पर से उन्हें दिखाया था। जब लड़कों की आँखें इस रौशनी की आदी हो गईं तो वह आसमानी शहर की दीवारें और फाटक पहचानने के क़ाबिल हो गए।

शरीर सरदार और उसके सिपाही आनंददेश में कभी दाख़िल नहीं हुए थे। वहाँ के रहनेवाले लोग बादशाह के हक़ीक़ी ख़ादिम थे और बड़े तपाक से मोमिन और पुरउम्मीद से मिले। कहने लगे, “अब तुम्हारी मुसीबतें ख़त्म हो गई हैं। अब तुम मज़े से जब तक बादशाह तुम्हें न बुलाए यहाँ ठहरो।”

मोमिन ने पूछा, “क्या वह जल्दी बुलाएगा?”

उन्होंने जवाब दिया, “यह तो हम नहीं कह सकते। बाज़ औक़ात तो मुसाफ़िर यहाँ बरसों ख़ामोशी से पड़े रहते हैं, और बाज़ औक़ात बादशाह शरीर सरदार के मुल्क में उनके ज़िम्मे कोई काम लगा देता है। लेकिन

आख़िरकार हमेशा के लिए आसमानी शहर में बादशाह के हुज़ूर रहने के लिए चले जाते हैं।”

मोमिन ने कहा, “मुझे याद है जब मदद ने दलदल से मुझे निकाला तो उसने बताया कि वह शहर के फाटकों तक गया तो था लेकिन बादशाह ने उसके ज़िम्मे कोई काम लगाया था जिसे उसे अंदर जाने से पहले करना था।”

मोमिन पुरउम्मीद के साथ उन पहाड़ों और ख़ूबसूरत वादियों में घूमने लगा। चलते चलते उसे यह ख़याल सताता रहा कि क्या मेरी वालिदा इस मुल्क में हैं या बादशाह के पास चली गई हैं? वह जिससे ही मिलता बड़े शौक़ से उसे देखता, लेकिन उसकी अम्मी कहीं नज़र न आईं। कहने लगा, “बादशाह ने उन्हें बुलाया होगा। उन्हें फिर मिलना कितना अच्छा होगा। शायद उन्हें पता चल गया हो कि हम यहाँ हैं, और वह इस वक़्त कहीं हमारा इंतज़ार कर रही हों।”

मुसाफ़िरों ने कई पुरलुत्फ़ दिन आनंददेश में गुज़ारे। एक दिन सुबह-सवेरे वह ऐसी वादी में पहुँचे जहाँ जगह जगह अंगूर और दीगर फलों के बड़े बड़े बाग़ थे। उसके फाटक चौपट खुले थे। ज्योंही वह क़रीब आए तो एक माली उनसे कहने लगा, “तुम्हें बाहर ठहरने की ज़रूरत नहीं। यह बादशाह के बाग़ हैं जो मुसाफ़िरों की सैरो-तफ़रीह के लिए हैं।”

फिर वह उनके हाथ पकड़कर उन्हें अंदर ले गया। जब शाम हुई तो उसने उन्हें छोटी-सी आरामगाह दिखाई जहाँ वह लेटकर आराम से सो

सकते थे। वह पहाड़ों के पीछे आहिस्ता आहिस्ता सूरज के डूबने का नज़ारा कर रहे थे कि मोमिन बोल उठा, "कितनी ख़ुशी की बात है कि हम यहाँ पहुँच गए हैं। मैं तो इतना ख़ुश हूँ कि अब तक जितनी मुसीबतें आईं सब भूल चुका हूँ।"

पुरउम्मीद ने कहा, "मैं भी शुक्रगुज़ार हूँ कि बुतलान मेला से भाग आया। यह कितनी अच्छी बात है कि परवाना वहाँ गुम नहीं हुआ। मालूम नहीं कि इसे मैंने कैसे महफ़ूज़ रखा।"

मोमिन बोला, "और अब तो हमें सिर्फ़ बादशाह के पैग़ाम का इंतज़ार है। अगर बादशाह की मरज़ी हुई तो मैं बाहर जाकर उसका काम भी करने को तैयार हूँ। लेकिन बेहतर यही होगा कि शहर में सीधा चला जाऊँ।"

फिर वह अमन की वादी की तरह एक दूसरे के पहलू में सो गए और सुबह तक आराम से सोए रहे।

काला दरिया

आनंददेश आसमानी शहर के इतना क़रीब था कि नूरी अकसर वहाँ के रहनेवालें से मिलने आते रहते थे। उनके चेहरे आसमानी नूर से इस तरह चमकते रहते थे जिस तरह मोमिन की माँ का चेहरा ख़ाब में चमकता था। उनके कपड़े साफ़ और शफ़्फ़ाफ़ थे। वह अकसर बादशाह के ख़ादिमों को उसका पैग़ाम पहुँचाते रहते थे। मुसाफ़िर जानते थे कि किसी न किसी दिन उन्हें भी कोई पैग़ाम आएगा।

एक दिन वह सुबह-सवेरे बादशाह के बाग़ में टहल रहे थे कि क्या देखते हैं, दो नूरी उनसे मिलने आ रहे हैं।

उन्होंने पूछा, “क्या तुम आसमानी शहर को जा रहे हो?”

लड़कों ने जवाब दिया, “हाँ।”

तब उन्होंने लड़कों से बहुत-से सवाल किए। उनको अपनी आपबीती सुनाने की दरख़ास्त की। मोमिन ने अपनी तमाम मुश्किलात और मुसीबतें सुनाईं, और पुरउम्मीद ने बताया कि उसने कैसे बुतलान मेला में वक़्त ज़ाया किया था।

वह कहने लगा, “हमारी चाल-चलन बहुत बार ठीक नहीं थी। हमें इसका बड़ा अफ़सोस है। लेकिन हम पूरे दिल से बादशाह से मुहब्बत करते हैं।”

नूरियों ने जवाब दिया, “उसे मालूम है कि तुम्हें उससे मुहब्बत है, और उसने अपने प्यारे बेटे की ख़ातिर तुम्हारी तमाम ग़लतियाँ और ना-फ़रमानियाँ माफ़ कर दी हैं। उसने हमें तुम्हारे पास इस ग़रज़ से भेजा है कि तुम्हें बताएँ कि उसके शहर के अंदर आ जाओ।”

यह सुनकर पुरउम्मीद का दिल बाग़ बाग़ हो गया। मोमिन भी बड़ा ख़ुश हुआ। लेकिन जब उसे यह ख़याल आया कि बादशाह के हुज़ूर जाना है तो डरने लगा और नूरियों से कहा, “क्या तुम भी हमारे साथ चलोगे?”

वह कहने लगे, “थोड़ी दूर तुम्हारे साथ चलेंगे। फिर हमारी तुम्हारी मुलाक़ात शहर के फाटकों पर होगी।”

फिर उन्होंने लड़कों के साथ बाग़ से निकलकर एक बड़े वसी दरिया के किनारे पर पहुँच गए। दरिया का पानी काला और तेज़धार था, लेकिन उसके आगे आसमानी शहर की रौशनी चमकते नज़र आती थी।

मोमिन चिल्ला उठा, “अब इसे पार कैसे किया जाए?”

नूरियों ने जवाब दिया, “तुम्हें पानी में से चलना पड़ेगा, लेकिन डरो मत। दूसरी तरफ़ शहर है। तुम हिफ़ाज़त से उसके फाटकों में पहुँच जाओगे।”

पुरउम्मीद ने सर उठाकर दरिया के पार झाँका तो सामने क्या देखता है, दरिया के दूसरी जानिब सीधा रास्ता ख़ूबसूरत सुनहरी फाटकों तक पहुँचता है। कहने लगा, “अरे मोमिन! हमें डरने की ज़रूरत नहीं। अब तो हम शहर के बिलकुल नज़दीक हैं।”

लेकिन ख़ौफ़ के मारे मोमिन की आँखों पर अंधेरा छा चुका था, और उसे दरिया के आगे रौशनी नज़र न आती थी। पानी देखकर वह काँप उठा और एक बार फिर नूरियों से मुख़ातिब हुआ, “यह तो बहुत गहरा है, और अगर हमने इसे पार करने की कोशिश की तो डूब जाएँगे।”

नूरियों ने जवाब दिया, “नहीं। इतना तो गहरा नहीं। पानी की तरफ़ मत देखो बल्कि रौशनी की तरफ़। बादशाह तो तुम्हारी मदद करेगा।”

मोमिन ने फिर पूछा, “क्या तुम भी हमारे साथ चलोगे?”

नूरियों ने जवाब दिया, “हम तुम्हारे साथ नहीं जा सकते बल्कि दूसरे किनारे पर तुमसे मुलाक़ात करेंगे और तुम्हें बादशाह की हुज़ूरी में ले चलेंगे।”

“क्या मेरी माँ यहाँ से ख़ैरियत से गुज़र गई हैं?”

“हाँ! और वह तुम्हारी मुंतज़िर हैं और तुमसे मिलने के लिए बेचैन हैं। डरो मत। बादशाह पर तवक्कुल करो और याद रखो कि उसने तुम्हारे लिए क्या कुछ किया है।”

तब नूरी मुड़े, और पुरउम्मीद अपने साथी की गरदन में बाँहें डालकर कहने लगा, “मोमिन आओ। यह आख़िरी मुसीबत है, यह जल्द ही ख़त्म हो जाएगी। आओ, मिलकर चलें। बादशाह हमारी हिफ़ाज़त करेगा।”

तब मुसाफ़िर आहिस्ता आहिस्ता किनारे से उतरकर पानी में चले गए।

जहालत का अंजाम

जब जहालत आनंददेश में दाख़िल हुआ तो वहाँ के लोगों ने उसकी मोमिन और पुरउम्मीद की तरह बड़ी ख़ातिर की। लेकिन उन्हें जल्दी पता चल गया कि वह हक़ीक़ी मुसाफ़िर नहीं। यह देखकर उन्होंने उसे उसके हाल पर छोड़ दिया और उससे बात तक न की। वह बादशाह के बाग़ के फाटकों के क़रीब से भी गुज़रा, लेकिन मालियों ने उसे अंदर आने को न कहा। नूरियों ने उसे उधर जाते तो देखा, लेकिन न तो उन्होंने उससे बात की और न ही बादशाह का कोई पैग़ाम दिया।

आख़िरकार वह सीधा दरिया के किनारे पर पहुँच गया। दूसरी तरफ़ उसे आसमानी शहर की दीवारें नज़र आ रही थीं। वह जानता था कि पानी से पार जाए बग़ैर सफ़र ख़त्म नहीं होगा। चंद मिनट खड़े होकर सोचने लगा कि क्या करे। फिर घास पर लेट गया। सोचने लगा कि थोड़ा-सा आराम कर लूँ। शायद कोई और भी पार जाने के लिए यहाँ आ पहुँचे। यहाँ कोई पुल दिखाई नहीं देता, इसलिए मुसाफ़िरों के लिए कोई न कोई कश्ती होगी।

वहाँ एक कश्ती तो थी, लेकिन वह शरीर सरदार की थी। बादशाह के मुसाफ़िर उसे कभी इस्तेमाल नहीं करते थे। जहालत को साहिल पर

लेटे देखकर झूठी-उम्मीद नामी एक मल्लाह कश्ती चलाता उसके पास आया। कहने लगा, "अभी वक़्त है कि दरिया के पार चले जाओ। मैं तुम्हारे लिए अपनी कश्ती लाया हूँ।"

जहालत ख़ुश हुआ। उठकर कहने लगा, "बादशाह ने तुम्हें भेजा होगा।"

आदमी ने जवाब दिया, "जी ज़रूर। बाज़ जगहों पर पानी इतना गहरा नहीं, और कुछ मुसाफ़िर पैदल चलकर पार जाने की कोशिश करते हैं। लेकिन इसकी ज़रूरत नहीं। मैं हर वक़्त पार ले जाने को तैयार हूँ।"

उसने अपना हाथ बढ़ाया जिसे पकड़कर जहालत कश्ती में बैठ गया। तब झूठी-उम्मीद चप्पू पकड़कर कश्ती चलाने लगा।

दूसरे किनारे पर पहुँचकर जहालत ने पूछा, "अब क्या करूँ?"

झूठी-उम्मीद ने एक रास्ते की तरफ़ इशारा करके कहा, "यह अच्छा रास्ता है। हमवार भी है और आसान भी। अगर तुमने नूरियों से मुलाक़ात की होती तो वह तुम्हें दूसरे रास्ते से ले जाते। उस रास्ते में चढ़ाई बहुत है, और उस पर मुश्किल से चला जाता है। सीधे फाटक तक चले जाओ, और वहाँ तुम्हें बादशाह के महल का रास्ता मिल जाएगा।"

उसने अपनी कश्ती किनारे से हटाई, और जहालत ने घूमकर शहर को जानेवाले पहाड़ी रास्ते पर चढ़ना शुरू कर दिया। रास्ते में उसकी किसी से मुलाक़ात न हुई। जब वह फाटकों पर पहुँचा तो उन्हें बंद पाया। उसने

ऊपर देखा तो दरवाज़े पर सुनहरी हरफ़ों में लिखे यह अलफ़ाज़ दिखाई दिए, "मुबारक हैं वह जो बादशाह के हुक्मों पर अमल करते हैं।"

जहालत ने ख़याल किया, "अच्छा। मैंने तो हमेशा बादशाह की फ़रमाँबरदारी की है।" वह दरवाज़े को खटखटाने लगा। वह बिलकुल भूल चुका था कि बादशाह अपने मुसाफ़िरों से यह तवक़्क़ो रखता है कि वह अपना सफ़र तंग दरवाज़े से शुरू करके सलीब के रास्ते से चलें। गो उसने इसके बारे में अकसर सुना तो था तो भी उसने कभी इस पर ध्यान नहीं दिया था। इसलिए वह बादशाह की बरकतों का मुस्तहिक़ नहीं था। उसने दो मरतबा खटखटाया, लेकिन किसी ने फाटक न खोले। आख़िर बादशाह का एक ख़ादिम खिड़की पर आया और जहालत को देखकर कहने लगा, "तुम कहाँ से आए हो और क्यों बादशाह का फाटक खटखटा रहे हो?"

लड़के ने जवाब दिया, "मैं मुसाफ़िर हूँ। अभी दरिया पार करके आया हूँ। आसमानी शहर में रिहाइश करना चाहता हूँ।"

बादशाह के ख़ादिम ने जवाब दिया, "अपना परवाना दिखाओ। मैं उसे अपने आक़ा के पास ले जाऊँ।"

जहालत जानता था कि उसके पास परवाना नहीं है, लेकिन कपड़ों में हाथ डालकर बज़ाहिर टटोलने लगा। बादशाह के नौकर ने कुछ इंतज़ार किया, लेकिन आख़िरकार बोल उठा, "लगता है कि तुम उसके बग़ैर आए हो।" फिर वह फाटक पर से बादशाह के पास गया ताकि पूछे कि क्या करना चाहिए।

बेचारा जहालत बाहर खड़ा अफ़सोस कर रहा था कि काश मैं अपने सफ़र के बारे में इतना बेपरवा न होता। सोचने लगा, "शहर कितना ख़ूबसूरत है। ख़ाहिश तो यही है कि हमेशा यहीं रहूँ। लेकिन लगता नहीं कि अंदर जाने देंगे।"

जब बादशाह ने सुना कि फाटक पर एक मुसाफ़िर आया हुआ है जिसके पास न तो सफ़ेद पोशाक है और न ही परवाना तो कहने लगा, "मैं तो उससे वाक़िफ़ नहीं। उसे वापस भेज दो।"

यह सुनते ही दो नूरी वहाँ पहुँचे। उन्होंने बेवुक़ूफ़ लड़के को बाँधा और आसमानी शहर से उठाकर शरीर सरदार के मुल्क में फेंक दिया। उसका ज़ालिम आक़ा उसे पाकर बहुत ख़ुश हुआ और ऐसा इंतज़ाम किया कि आइंदा वहाँ से खिसकने न पाए।

जहालत अपनी खोई हुई ख़ुशी पर ज़ार ज़ार रोता रहा। सरदार उसे रोते देखकर कहने लगा, "यह ग़लती तुम्हीं से हुई है। अगर तुम्हें सचमुच बादशाह के साथ रहने की ख़ाहिश होती तो उसके हुक्मों पर भी अमल करते।"

सफ़र का ख़ातमा

जब मोमिन के जिस्म पर काले दरिया का पानी लगा तो वह सहम गया। लेकिन पुरउम्मीद उसके साथ लगा रहा। उसने उसकी बड़ी मदद की। तो भी मोमिन के पाँव निकल गए, और वह चिल्ला उठा, “मैं डूब चला। मेरे सर से पानी गुज़र रहा है।”

पुरउम्मीद ने कहा, “नहीं, यह सिर्फ़ लहर है। इतना ख़ौफ़ न करो। दरिया इतना गहरा नहीं। मेरे पाँव नीचे लग रहे हैं। हम बेख़तर पार हो जाएँगे, और इसके बाद हमें कोई तकलीफ़ नहीं होगी।”

मोमिन बेबसी की हालत में आहिस्ता से बोला, “शायद तुम पार हो जाओ, लेकिन मैं तो यक़ीनन पार नहीं जा सकूँगा। मैं बादशाह को कभी नहीं देखूँगा। मेरी कितनी ख़ाहिश थी कि हमेशा उसके साथ रहूँ।”

“तुम उसके साथ रहोगे। ऊपर नज़र उठाओ और पानी का ख़याल मत करो। देखो हर एक चीज़ कितनी साफ़ नज़र आती है। शहर में जगमग हो रही है। और नूरी फाटकों पर हमारा इंतज़ार कर रहे हैं।”

मोमिन ने कहा, “वह तुम्हारा इंतज़ार कर रहे होंगे, मेरा नहीं। यह कहकर उसका सर पुरउम्मीद के कंधों पर आ लगा। थोड़ी देर के लिए उसे इतना भी होश न रहा कि यह सुन सकता कि उसका साथी क्या कह

रहा है। लेकिन पुरउम्मीद ने उसे ज़ोर से अपने बाज़ुओं में पकड़कर बड़े ख़ुलूस से बादशाह से दुआ की कि वह इस आख़िरी मुसीबत में उनकी मदद करे। उसी वक़्त मोमिन की आँखें खुल गईं और आसमानी शहर की रौशनी उसके चेहरे पर पड़ गई। वह चिल्ला उठा, "मुझे सब कुछ नज़र आता है। यह सूरज की तरह रौशन है। और मैंने शहज़ादे की आवाज़ सुनी। वह कह रहा था कि जब तू सैलाब में से गुज़रेगा तो मैं तेरे साथ हूँगा।"

पुरउम्मीद ने कहा, "देखा तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं। मेरा हाथ पकड़ लो। शहज़ादा वादाख़िलाफ़ी नहीं करता।"

यों मोमिन में जुर्रत आ गई, और उसका घबराना और काँपना जाता रहा। मुसाफ़िर हाथों में हाथ डाले काले दरिया से पार हुए। कुछ अरसे के बाद ज़मीन कुछ पक्की हो गई, और दरिया का ज़ोर भी कुछ कम हो गया। फिर क्या देखते हैं कि वही दोनों नूरी जो उन्हें दरिया के किनारे लाए थे उनके इस्तिक़बाल को खड़े हैं। चंद ही लमहों में वह ख़तरनाक रास्ता ख़त्म हो गया। मेहरबान हाथों ने उन्हें खींचकर बाहर निकाला, और वह ख़ैरियत से साहिल पर खड़े हो गए।

आसमानी शहर की तामीर एक पहाड़ पर हुआ था। दरिया से एक चौड़ी और सीधी सड़क उसके फाटकों को जाती थी। यह रास्ता ढलान था जैसा कि झूठी-उम्मीद ने जहालत को बताया था। लेकिन मोमिन और

पुरउम्मीद को इतना मुश्किल न लगा, क्योंकि नूरियों ने उनके हाथ पकड़े हुए थे कि वह कहीं गिर न पड़ें।

मोमिन तमाम दुख-दर्द भूल गया। अपने सामने ख़ूबसूरत दीवारों और फाटकों को देखकर कहने लगा, "अब हम जल्दी शहर में पहुँच जाएँगे।

जो नूरी उसके साथ जा रहा था वह जवाब में कहने लगा, "हाँ, तुम बादशाह को उसके जमाल में देखोगे, और वह तुम्हें अपना फ़रज़ंद समझकर तुम्हें क़बूल करेगा। इसके बाद तुम्हें कभी थकावट या उदासी नहीं होगी। तुम्हारे ज़िम्मे बादशाह का कोई काम होगा, लेकिन वह इतना आसान और ख़ुशगवार होगा कि तुम्हें उसके करने से ख़ुशी होगी।"

मोमिन ने कहा, "क्या मेरी अम्मी से भी मुलाक़ात होगी?" वह अपनी माँ से मिलने के लिए तड़प रहा था।

नूरी ने उसे यक़ीन दिलाया, "वह तुमसे मिलने आ रही हैं। उन्हें मालूम है कि तुम हमारे पास हो, और उन्हें यह सुनकर बड़ी ख़ुशी हुई है कि तुम्हारा सफ़र ख़त्म हो गया है और कि तुमने ख़ैरियत से दरिया पार कर लिया है।"

आसमानी शहर

मुसाफ़िर जब शहर के क़रीब हुए तो शाही ख़ादिमों का एक गुरोह जो अब तक फाटक पर पहरा दे रहा था ढलान से उनके इस्तिक़बाल को नीचे उतरा।

नूरियों ने लड़कों का तआरुफ़ कराया, “यह दोनों बादशाह के मुसाफ़िर हैं। हम इन्हें आसमानी शहर में पहुँचा रहे हैं।”

मोमिन ने जब नज़र उठाई तो उसे दूसरों की निसबत एक ज़्यादा चमकदार शक्ल नज़र आई। सामने उसकी माँ खड़ी थीं। उसे देखकर उनकी आँखें चमक उठीं। पूछने लगीं, “क्या यही मेरा मोमिन है?” नूरियों ने उनके लिए रास्ता बनाया।

मोमिन उन्हें फ़ौरन पहचान गया और यकलख़्त दौड़कर उनके बाज़ुओं में चला गया। वह चिल्ला उठा, “अम्मी जान! मैं आपके पास आ गया हूँ। बादशाह ने मेरी निगहबानी की, और किसी दिन वह अब्बू को भी यहाँ ले आएगा।”

माँ कहने लगीं, “अब तुम मुझसे जुदा नहीं होगे। बादशाह बड़ा मेहरबान है। आओ मेरे साथ। उसके शहर में चलो और वहाँ मिलकर उसका शुक्र बजा लाएँ।

मोमिन अपनी माँ के हाथ में हाथ डालकर और यह जानकर कि अब अम्मी मुझसे कभी जुदा नहीं होंगी कितना ख़ुश हुआ। अफ़सोस, पुरउम्मीद का इस्तिक़बाल करनेवाला कोई अज़ीज़ नहीं था, क्योंकि वह उन सबको पीछे बरबादनगर में छोड़ आया था। लेकिन नूरियों ने उसके गिर्द घेरा डालकर उससे ऐसी मेहरबानी से गुफ़्तगू की कि उसकी तसल्ली हो गई और वह अपनी तनहाई भूल गया।

मोमिन दरिया के दूसरे किनारे पर अपने हथियार छोड़ आया था, क्योंकि अब जंग लड़ने की ज़रूरत नहीं रही थी। अब वह बड़ी फ़िकर

से अपना लिबास देख रहा था। अगरचे उसने अपने लिबास का बड़ा ख़याल रखा था ताहम इतने लंबे सफ़र में वह कपड़े मैले और बोसीदा हो चुके थे। उसे डर था कि कहीं मेरी यह हालत देखकर बादशाह नाराज़ न हो जाए। लेकिन काले दरिया के पानी ने तमाम गर्दो-ग़ुबार और दाग़ साफ़ कर दिए थे। पुरउम्मीद के कपड़े भी जो बुतलान मेला में इतनी देर रहने से बेहद मैले हो चुके थे अब इतने ताज़ा और साफ़ थे कि जैसे अभी अभी मिले हों।

आसमानी शहर की दीवारों के पास चंद-एक लोग खड़े थे। उनके हाथों में चाँदी के नरसिंगे थे। मोमिन और पुरउम्मीद जब उनके पास पहुँचे तो उन्होंने अपने नरसिंगे ज़ोर से फूँके ताकि शहरियों को मालूम हो जाए कि चंद-एक मुसाफ़िर बादशाह के हुज़ूर हाज़िर होने के मुंतज़िर हैं। नूरियों ने लड़कों को बताया कि वह फाटक को खटखटाएँ। तब बादशाह के ख़ादिम खिड़की से झाँकने के बाद उनके हाथों से परवाना लेकर महल में चले गए।

चूँकि परवानों पर शहज़ादे की मोहर लगी हुई थी इसलिए बादशाह उन्हें देखकर बड़ा ख़ुश हुआ। उसने अपने ख़ादिमों को हुक्म दिया कि एकदम फाटक खोलकर मुसाफ़िरों को उसके हुज़ूर पेश करें।

शहर के लोग नरसिंगों की आवाज़ सुनकर समझ गए कि इसका क्या मतलब है। मोमिन और पुरउम्मीद जब फाटक में से गुज़रे तो क्या देखते हैं कि साज़ बजाती और ख़ुशी के गीत गाती एक बड़ी टोली

उन्हें ख़ुशआमदीद कहने को खड़ी है। हर एक ख़ुशो-ख़ुर्रम था, क्योंकि आसमानी शहर में न तो कोई उदासी थी, न थकावट और न ही दुख।

पहले तो लड़कों की आँखें इर्दगिर्द की चमक से चुँधिया गईं, लेकिन आहिस्ता आहिस्ता वह देखने के लायक़ हो गईं। शहर के दरमियान शाही महल था जो ख़ूबसूरत महल से कहीं ज़्यादा शानदार था।

मोमिन ने अपनी माँ से कानाफूसी की, "क्या बादशाह यहीं रहता है?"

उन्होंने जवाब दिया, "हाँ। और जब तुम उसके आगे घुटने टेककर उसका जलाल देखोगे तो तुम्हें हमेशा के लिए कामिल ख़ुशी हासिल होगी।"

मोमिन ने कहा, "चूँकि आप मुझे मिल गई हैं और मुझसे मुहब्बत करती हैं इसलिए मैं अब बहुत ख़ुश हूँ।"

माँ ने जवाब दिया, "बेशक। लेकिन बादशाह की मुहब्बत मुझसे कहीं ज़्यादा है।"

इतने में मुसाफ़िर महल के दरवाज़े पर पहुँच गए। ज्योंही दरवाज़ा खुला, उन्हें दिलकश मौसीक़ी सुनाई दी, और शहज़ादा ख़ुद उनके इंतज़ार में खड़ा था। वह उन्हें देखकर मुसकराया और उनके हाथ अपने हाथों में ले लिए। फिर वह उन्हें महल में ले गया। तमाम शहर ने ख़ुशी मनाई कि उनका सफ़र ख़त्म हो गया है और कि वह काले दरिया से ख़ैरियत से बादशाह के हुज़ूर पहुँच गए हैं।